सर्वसिद्ध प्रेम

(पवित्र जीवन का आधार)

लेखक

डॉ. विलियम् एम. ग्रेटहाउस

अनुवादक

प्रो. एल. एन. वाघ

दक्षिण एशिया नाज़ेरिन साहित्य समिति, पुणे

LOVE MADE PERFECT
(Translation in Hindi)

Copyright 2004
By World Mission Literature (Church of the Nazarene).
All rights reserved.

Originally published in English by Nazarene Publishing House, Kansas City, MO, USA, and the permission is granted to the World Mission Literature to translate and print in Hindi.

Printed and Published in India by South Asia Nazarene Literature, a Division of World Mission Literature (Church of the Nazarene), with the permission of Beacon Hill Press of Kansas City, Kansas City MO, USA.

Address in India :
Rev. Santosh Dongardive
P. B. No. 1503
Wanawadi, Pune - 411 040.
Ph. : (020) 26821288
E-mail : santoshdongardive@yahoo.co.in

Printed at : Shri Mudran Mandir
914 Sadashiv Peth,
Pune - 411 030.

प्रस्तावना

परमेश्वर प्रेम है । (१यूहन्ना ४ : १६) ईश्वरीय प्रेम अनेक रूपों में अभिव्यक्त होता है, विशेषत: परमेश्वर के एकमात्र पुत्र यीशु के इस संसार में अवतरित होने के रूप में ।

परमेश्वर प्रेम है, और उसका पवित्र नाम इस दिशा में सार्थक है। परमेश्वर का प्रेम और उसकी पवित्रता, हम से पवित्र रीति से, जीवन- यापन की अपेक्षा करते हैं । परमेश्वर कहते हैं, ''क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; इस कारण अपने को शुद्ध करने के पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ । (लैव्य व्यवस्था ११ : ४४)

डॉ. ग्रेटहाउस ने जो कि नाज़ेरिन कलीसिया के जनरल सुपरिनटेंडॅन्ट हैं (एमिराइटस) दैनिक मसीही जीवनचर्या के अन्तर्गत इस वास्तविकता को सरल एवं सुस्पष्ट रीति से समझाया है ।

सन्तोष डोंगरदिवे

चेअरमॅन

दक्षिण एशिया नाज़ेरिन साहित्य समिति, पुणे

अनुक्रमणिका

*	प्रेषित	1
*	आभारोक्ति	4
*	सिद्ध (पूर्ण) प्रेम की प्रतिज्ञा	5
*	पुराना नियम पवित्रता की शिक्षा का मूल	15
*	सिद्धता की ओर	25
*	प्रेम - आज्ञा	34
*	ख्रिस्त विजेता हमारा महान मुक्ति दाता	45
*	पवित्रता : ख्रिस्त की आन्तरिक प्रभुता	53
*	परिवर्तित रूप	66
*	सम्पूर्ण पवित्रीकरण के लिए एक प्रार्थना	75
*	प्रेम ने सिद्ध बनाया	89
*	सत्य पवित्रीकरण	100
*	पवित्र जीवन का रहस्य	113
*	प्रेम ने महिमा के पूर्वास्वाद को सिद्ध किया	122
*	टिप्पणियाँ (प्रेषित)	133

प्रेषित (Foreword)

"मैंने परमेश्वर के साथ एक विशेष सामिप्य का अनुभव किया है, जैसा कि मैंने लिखा हैं," विलियम ग्रेट हाऊस ने मुझे एक पत्र में अपनी भावना की अभिव्यक्ति की, जब उन्होंने इस पुस्तक के अन्तिम अध्यायों को पूर्ण करके मुझे इस पुस्तक को भेजा । उन्होंने आगे यह भी उल्लेख किया, "फिर भी ऐसा भासित होता है कि इतना पार्थिव, इतना मानवीय हैं ।"

मेरा विचार है कि यही इस पुस्तक की शक्ति है --- प्रकाण्ड विद्वत्ता भक्ति - भावना से अभिषिक्त, साथ ही मानवीय स्पर्श इस पुस्तक के अंतर्गत डॉ. ग्रेट हाऊस केवल पवित्रता के विषय में शिक्षा नहीं देते; वे वास्तव में पवित्रता का ज्ञान कराते हैं । अन्तर केवल यही है। दोनों दृष्टिकोणों के मध्य, एक बाह्य वैज्ञानिक केवल अवलोकन के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत करता है, और एक आंतरिक, एक भाग लेनेवाला, अपने प्राप्त ज्ञान, आन्तरिक अनुभवों, और इनसे उद्‌भुत् ज्ञान को दूसरों के साथ बाँटता है ।

अपने विदाई - भाषण "पवित्रता का सन्देश" में, जबकि वे नाज़रीन कलीसिया के जनरल सुपरिनटेंडॅन्ट पद से सेवा-मुक्त हुए, उन्होंने (डॉ. ग्रेटहाऊस महोदय) लिखा, "मेरे लिए पवित्रता का सन्देश सुसमाचार का सार-तत्त्व बना रहा - परमेश्वर का पवित्र प्रेम हृदय पर शासन करता है, जिस में पाप का समावेश नहीं होता । ऐसा अनुभव विधि का आदेश और सुसमाचार की प्रतिज्ञा दोनों ही है । इस सिद्धान्त के प्रतिपादन और प्रचारार्थ मैंने अपना जीवन अर्पित किया हैं ।"[1]

यह पुस्तक इस बात का प्रमाण है कि यद्यपि वे अपनी सेवा से 1989 में मुक्त हुए, परन्तु इस सिद्धान्त के प्रतिपादन और प्रचार-कार्य से वे आज भी सेवारत हैं, इस सन्देश को पहुँचाने के लिए इन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया है । मेरे जीवन - काल में किसी भी शिक्षक अथवा प्रचारक ने मेरे सम्प्रदाय में इस से पूर्व सम्पूर्ण पवित्रीकरण के सिद्धान्त को इतनी स्पष्टता से किसीने भी प्रस्तुत नहीं किया, जितनी कि रुचिपूर्ण रीति से विलियम ग्रेटहाऊस ने इस सिद्धान्त को सरल और समझने योग्य ढंग से प्रस्तुत किया है ।

मैं नाज़ेरिन थियोलॉजिकल सेमिनरी में जिसका नाम होमिलेटिकल स्टडी ऑव्ह होलिनॅस है, एक अध्ययन पाठ पढ़ाया करता था । प्रत्येक सत्र में मैं अपने छात्रों से कहा करता था कि तीन ऐसे महान प्रचारक मेरे जीवन में आए, जिन्होंने पवित्रता विषय पर सफलतापूर्वक प्रचार किया है, जिन्हें संप्रदाय के विश्व नागरिक कहा जा सकता है : डी. एलटन ट्रब्लड, ई. स्टेनली जोन्स, और पॉल एस. रीज़ । इन्होंने सभी सम्प्रदायों, चाहे वे उदारवादी रहे हो अथवा कट्टरपंथी, प्राटस्टंट अथवा कॅथलिक श्रोताओं को पवित्रता का प्रचार किया । वे ऐसा करने में योग्य हो सके, मैंने अपने छात्रों से इस बात का उल्लेख किया, क्योंकि उन्होंने गुटबन्दी की अवहेलना की, दूसरों को प्रभावित करने के लिए शब्दाडंबर भाषा का प्रयोग नहीं किया, अपनी भाषण-कला के स्थान पर बाइबल - सम्मत भाषा का ही प्रयोग किया, केवल बाइबल आधारित सन्दर्भों का प्रयोग किया, उन्होंने किसी सम्प्रदाय विशेष की स्थापना नहीं की ... परन्तु उन्होंने लोगों को अपने ह्रदयों को परमेश्वर के आत्मा के सम्मुख समर्पण करने में सफलता प्राप्त की । मैं अपने छात्रों से पूछता था कि वे पवित्रता के पदों के सम्बन्ध में प्रचारक बनने के लिए क्या प्राप्त करना चाहते हैं, क्या वे इस दिशा में बाल की खाल निकालनेवाले व्यर्थ का शास्त्रार्थ करना चाहेंगे, अथवा वे विश्वासियों को परमेश्वर के समक्ष अपने सम्पूर्ण मन से समर्पण करवाना चाहेंगे ताकि वे स्वयं को जैसा परमेश्वर चाहते हैं, ख्रिस्त के स्वरूप स्वयं को बनाना चाहेंगे और इस दिशा में कार्यशील रहेंगे ?

यदि मैं पुनः ऐसा कोई विषय पढ़ाऊँ, तो मैं बिल ग्रेट हाऊस जैसे विश्व-स्तर के पवित्रता के संदर्भ में पूर्वख्यात प्राप्त शिक्षकों, और प्रचारकों की सूची में इनका नाम भी सम्मिलित करूँगा । यथार्थ में बिल ग्रेट हाऊस नाजेरिन कलीसिया के शिशु हैं । उपर्युक्त ''पवित्रता का संदेश'' नामक लेख में आपने नाजेरिन कलीसिया के सदस्योंसे मसीही सिद्धता के विषय को पढ़ाने और उसका प्रचार करने का निवेदन किया है, जैसे (1) इस सिद्धान्त पर विश्वास, (2) एक अनुभव प्राप्त करना, (3) ऐसा जीवन व्यतीत करना, और (4) इस सन्दर्भ में अनुशासन का पालन करना ''[2] आप जैसा कि इस पुस्तक के अध्ययन के अन्तर्गत पारंगे, उनकी शिक्षा-पद्धति वेस्ली की ही अनुयायी हैं । परंतु इससे परे, और साम्प्रदायिक अथवा सैद्धान्तिक निष्ठा से अधिक महत्त्वपूर्ण, वास्तव मे डॉ. ग्रेट हाऊस का सन्देश जो कि इस पुस्तक में प्रेषित है पूर्ण रूप से और गंभीरता से बाइबल आधारित है । वे बाईबल को ही प्रामाणिक आधार मानते है ।

अतः प्रत्येक मसीही परंपरा जो बाइबल को विश्वास का आधार और अभ्यास मान कर श्रद्धा से देखती आई है, डॉ. बिल हमेशा इसी परंपरा के अंतर्गत आदरणीय अतिथि के सम्मान से अभिनन्दित माने जाते रहेंगे । मसीही पवित्रता का सन्देश वर्ग -

भेद की सीमाओं से विस्तृत - और गंभीर है, वैचारिक तर्कों से कहीं अधिक सार्थक और अर्थ - गांभीर्य है । अंतरंग, आपकी धार्मिक परम्परा की पृष्ठ - भूमि चाहे जो भी हो, यह पुस्तक आपके लिए है यदि आप परमेश्वर के विषय और अधिक ज्ञान - पिपासु हैं,

पवित्रीकरण अनुग्रह के प्रतीक्षित रहे हो,
पदात्मक पवित्रता को समझना चाहते हो ।
आश्चर्य करते हो मसीही पवित्रता बाइबल के दृष्टिकोण से
सत्य है अथवा नहीं,
आत्मा की परिपूर्णता के खोजी हों,
हमेशा यह सोचते रहे कि आप के मन में जो पाप
समाया हुआ है, क्या उस से कभी आपकी मुक्ति होगी,
शैतान आप को यीशु के शिष्य होने के प्रयास में हमेशा बाधाएँ खड़ा करता है,
जबकि आप अपने जीवन के उत्तम क्षणों में ख्रिस्त के अनुरूप बनना चाहते हैं ।

यदि ऊपर लिखी बातों की सूची में आप कहीं नहीं हैं, तब आप के लिए भला है आप परमेश्वर से अपना संपर्क बनाएँ रखें ।

मैंने डॉ. ग्रेट हाऊस के निवेदन से, प्रत्येक अध्याय के अन्त में आत्मिक अभ्यास के लिए कुछ कार्य-साधन सामग्रियाँ प्रस्तुत की हैं । ''पवित्र जीवन के आधार'' के विषय को ध्यान में रखकर, मैंने इस रूप-रेखा का प्रयोग किया हैं :

आधार स्तम्ब, आत्मिक सीढ़ियाँ और कार्य-साधन । बुनियादी रूप से, यद्यपि पूर्ण रीति से न सही, आधारस्तम्ब खण्ड पुनरावृत्ति, विश्लेषण और अध्ययन किए गए अध्याय के अन्तर्गत प्रयुक्त सामग्रियों का मूल्यांकन करने हेतु साधन प्रस्तुत किए गए हैं । (अनुभूति संवेदना) की दृष्टि से । आत्मिक सीढ़ियों की कार्यविधियाँ मुख्य रूप से स्वयं को जानने के उद्देश्य से दी गई है । ये छात्रों को अपने मनों को जांचने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं, जैसे मनोभावनाओं को, गुण-दोष-विवेचन और मूल्यांकनों को समझने के लिए । यद्यपि अनुभूति - संवेदना और प्रभावकारी गति-विधियाँ बहुधा व्यावहारिक रूप में अभिव्यक्त की गई हैं, कार्य-साधन खण्ड जो कि प्रत्येक अध्याय के अन्त में दिये गए हैं, वे वास्तव में गृहकार्य के उद्देश्य से प्रस्तुत किए हैं (मनोविश्लेषण - उद्देश्य) । दसवें अध्याय के अभ्यास अन्य अध्यायों से भिन्न हैं, ताकि शोधकर्ता के लिए पवित्रीकरण के अनुग्रह को ग्रहण करने में मार्गदर्शक का कार्य करें ।

- वेस्ली डी. ट्रेसी

सम्पादक,'' पावित्रता का सन्देश'

आभारोक्ति (Acknowledgements)

इस पुस्तक का अधिकांश श्रेय मेरे मित्र वेस्ली ट्रेसी को ही जाता हैं, बिना उनके सहयोग के यह पुस्तक कभी प्रकाश में नहीं आती । ''पवित्रता के सन्देश'' के सम्पादक होने के नाते डॉ. ट्रेसी ने मुझसे निवेदन किया कि मैं मसीही पवित्रता पर प्रकाशन की दृष्टि से शृंखला-बद्ध लेख लिखूं । ये ही लेख इस लघु पुस्तक के मुख्य अंश हैं। वेस्ली महोदय ने फिर प्रत्येक अध्याय के अन्त में बड़ी ही उदारतापूर्ण आत्मिक अभ्यास के अंश लिखकर इस क्षति की पूर्ति भी कर दी । ये आत्मिक - अभ्यास अंश न केवल प्रत्येक अध्याय के अर्थग्रहण को स्पष्ट करते हैं, परंतु इस में निहित आत्मिक सत्य को समझने में पाठक वृंद को उनके जीवन के सत्यानुभव की दिशा में भी मार्गदर्शन करते हैं ।

इस पुस्तक को अन्तिम रूप देने में मेरी पुत्र-बधु जेन ग्रेट हाऊस (अंग्रेजी लेखन शिक्षिका) ने प्रशंसनीय सहयोग प्रदान किया, मैं उनको हृदय से धन्यवाद देता हूँ । उनके संपादकीय कार्य के प्रति मैं उनका ऋणी हूँ । जेन ने न केवल मेरी लेखन शिल्प की कमियों को संवारा, परन्तु अपनी आत्मिक आन्तरिक प्रेरणा से, जो मेरा लिखने का अभिप्राय था उसे भी बड़ी योग्यतापूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर इसे सुगम्य बनाया है । मेरे अन्य संतानों की भाँति जेन, भी ''सच्चाई की राह पर चलनेवाली हैं ।

मैं शोना फ़िशर और बोनी पेरी को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्हों ने मेरी हस्तलिपि को सम्पादित किया, साथ ही केली गलाघर और पॉल मार्टिन को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन को पूर्ण रूप से, अन्त तक निरन्तर परिश्रम से सफल बनाया ।

अन्त में, मैं डेविड फ़ेल्टर निदेशक क्रिश्चियन ले ट्रेनिंग और उनकी समिति के प्रति भी ऋणी और आभारी हूँ जिन्होंने ''प्रेम ने सिद्ध बनाया'' नामक इस पुस्तक को नाज़ेरिन सम्प्रदाय के लिए 1998 वर्ष के लिए इसे चुना; इसके अध्ययन को श्रेयस्कर समझा ।

विलियम एम. ग्रेटहाउस

ट्रेव्हिका नाज़ेरिन विश्व विद्यालय

नॅर्शाव्हले, टेनेसी

कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिस से तू जीवित रहे ।

- व्यवस्था (विवरण 30 : 6.

1

सिद्ध (पूर्ण) प्रेम की प्रतिज्ञा

आज विश्व को जिसकी आवश्यकता है, वह प्रेम है, मधुर प्रेम की, एक लोक-प्रिय गीत के अनुसार उस समय की संस्कृति की सत्य प्रतिध्वनि । यह गीतएक निश्चित सीमा तक सार्थक है । हमें प्रेम की आवश्यकता है, परन्तु उस प्रेम की नहीं जिसे लोक-प्रिय गायक अपने गिटार पर वर्णित करते हैं । हमें उस प्रेम की आवश्यकता है, जिसके विषय में बाइबल वर्णन करती है सम्पूर्ण प्रेम । हम किस भांति अपने हृदयों को परमेश्वर के प्रेम के लिए ललायित रहते हैं, उस प्रेम से विपरीत समस्त कारणों का बहिष्कार, खिस्तके प्रेम को अपने मन में उत्पन्न करते हैं । (1 यूहन्ना 4:17) !

क्या हम वास्तव में ऐसे प्रेम की कल्पना कर सकते हैं ? यदि हम सुसमाचार पर विश्वास नहीं करते यह बात असंभव है । सुसमाचार की प्रतिज्ञा है हम ऐसे प्रेम को प्राप्त कर सकते हैं और सम्पूर्ण प्रेम की अभिव्यक्ति भी कर सकते हैं ।

अंग्रेजी सुधारक जॉन वेस्ली (1703-92) ने रुलीसिया के लिए यह खोज की, इस वचनात्मक सत्य का शोध किया और प्रॉटस्टन्ट मण्डली के पार्श्व में इस प्रेम को प्रश्रय प्रदान किया, उसके व्यवहार में इसे स्थान दिया ।

किसी एक अथवा अन्य दूसरे रूप में, मसीही सिद्धान्त की सम्पूर्णता - इस बात की मनः पवित्रता की अनुभूति है कि सत्य प्रेम खिस्त स्वरूप प्रेम की ओर अग्रसर करता है, ऐसा प्रेम-स्वरूप जीवन खिस्त के समय से मसीही परम्परा का स्वरूप रहा

है, जिसे हम यीशु के प्रचारकों के जीवनों से और पूर्वी शास्त्र सम्मत परम्परा और रोमन कॅथलिक जीवन पद्धति में भी अभिव्यक्त होते पाते हैं ।

इसके पश्चात् सुधार-युग का पदार्पण हुआ, जिसके अन्तर्गत इस सत्य का पुनः आविष्कार हुआ कि उध्दार विश्वास से प्राप्त होता है । मुख्य रूप से मार्टिन लूथर (1483-1546) के सन्दर्भ में इस पुनः खोज के सिद्धान्त - विश्वास के द्वारा उचित प्रमाण ने कलीसिया के विरुद्ध अर्थात् उसकी पवित्रता की शिक्षा के विरोध में तीव्र प्रतिक्रिया उत्पन्न की । मार्टीन लूथर ने ऐसी स्थिति को टालने के लिए जिससे कर्म के द्वारा उध्दार पर कोई आँच न आए (रोमन कॅथलिक कलीसिया का यह दृष्टिकोण अर्थात् पवित्रता का सिद्धान्त प्रमुख है, लूथर महोदय ने इसकी परीक्षा की और इस में अभाव पाया) (लूथर महोदय ने बाइबल के इस पद पवित्र बनो क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (1 पतरस 1: 16) के प्रति घोर उपेक्षा दिखलाई ।

''इस सन्दर्भ में वेस्ली पर्वत की ऊँचाई पर पहुँचा'', स्वर्गवासी जॉर्ज क्रॉफ्ट सैल जो बॉस्टन विश्वविद्यालय से थे, दावा किया । ''उसने पवित्रता के उपेक्षित सिद्धान्त का आश्रय लेकर इसकी श्रेष्ठता की स्थिति जो कि प्राटस्टंट मसीही कलीसिया का विश्वास आधार है, अपना पक्ष निर्धारित किया ।''[1]

उपेक्षित सिद्धान्त

यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम इस ''उपेक्षित सिद्धान्त जो कि पवित्रता'' पर आधारित है, स्पष्ट रूप से इसके तत्त्व पर विचार करें,'' यह सिद्धान्त जो मसीही सम्पूर्णता के सन्दर्भ में सम्पूर्ण प्रेम का प्रतीक है ।

बाइबल के अन्तर्गत अनुवादित ''सम्पूर्ण'' शब्द का अर्थ है -

''समाप्त'' अथवा ''इच्छित ध्येय'' ।

नये नियम के अन्तर्गत ''सम्पूर्ण'' शब्द स्थिर नहीं है परन्तु गतिशील अर्थ में प्रयुक्त किया गया है । अंग्रेजी भाषा में यह शब्द लैटिन भाषा से उद्धृत माना जाता है जो कि परफेक्टियो है, जिसका अर्थ है ''सम्पूर्ण रूप से पूर्ण'' अथवा निष्पाप ।'' नये नियम का शब्द, ग्रीक भाषा से उद्धृत टॅलियोस है जो कि टेलॉस क्रिया से आया है, जिसका आशय है - ''अन्त'' अथवा इच्छित उद्देश्य''। कोई भी बात उसी समय ''सम्पूर्ण'' मानी जाती है जो कि अन्त्यन्त सत्य हो । उदाहरणार्थ : मेरे हाथ में जो कलम है वह सम्पूर्ण है, इसलिए नहीं कि यह निर्दोष है, परन्तु इसलिए क्योंकि इस से लिखा जा सकता है । यह अपने प्रयोजन जिसके लिए इसे बनाया गया है, इसे पूर्ण करता है ।

वेसली महोदय ने इसे स्वीकार करने से मना कर दिया क्योंकि अंग्रेजी भाषा से ध्वनित "सम्पूर्ण - परफेक्ट शब्द से वे अपने सिद्धान्त को आधारित नहीं करने के पक्ष में थे, क्योंकि सम्पूर्णता शब्द भाषिक अर्थ में नहीं अपितु पवित्र वचन के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है ।

वेस्ली महोदय ने इस सम्पूर्ण को जो कि नये नियम के सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है, उसे पुनर्परिभाषित किया । रण्डम क्लार्क ने वेस्ली के नये नियम के अन्तर्गत सम्पूर्ण शब्द की व्याख्या की, उन्होंने तर्क प्रस्तुत किया: "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा है कि प्रत्येक मनुष्य उसे अपने पूरे मन, आत्मा, हृदय, और सामर्थ्य से प्रेम करे, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करे; तब वह स्वयं में एक सम्पूर्ण मनुष्य है क्योंकि वह ऐसा करता है; वह उस आशय को पूरा करता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसकी सृष्टि की ।"[2].

यदि आप इस वाक्य के अन्त पर विचार करे, तो आप पवित्रता के आशय को समझ सकते हैं । परमेश्वर की आज्ञानुसार, सम्पूर्ण प्रेम का तत्त्व उसके नियम में समाहित है, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार, यही सुसमाचार का सारतत्त्व, निष्कर्ष है ।

प्रतिज्ञा

जिस प्रकार नये नियम में व्यवस्था निर्दिष्ट है ("तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गिक पिता सिद्ध है" (मत्ती : 48) इसी प्रकार पुराने नियम में भी यही सन्देश है : "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिससे तू जीवित रहे" (व्यवस्थाविवरण 30:6) परमेश्वर जो आज्ञा व्यवस्था में देता है, वह उसे सुसमाचार में पूरी करने की प्रतिज्ञा करता है । पुराने नियम के समय, खतना एक बाह्य प्रमाण निर्धारित किया गया था व्यक्ति परमेश्वर के साथ है, यह एक चिन्ह स्वरूप मान्यता थी । परन्तु परमेश्वर एक आन्तरिक चिन्ह भी देना चाहता था, वह अपने लोगों में आन्तरिक परिवर्तन चाहता था, ताकि लोग उसके अपने कहलाएँ ।

यद्यपि यह रूपक "मन का खतना" अपने में गंभीर अर्थ का परिचायक है, इस से पैत्रिक वंश का बोध होता है, और यही से यह सन्देश प्राप्त होता है कि जो हृदय परमेश्वर के लिए प्रेम से परिपूर्ण होता है और साथ ही साथ अपने पड़ोसी के लिए भी ऐसा ही होता है, यही इच्छा आज परमेश्वर हम सभी से चाहते हैं । पुराने नियम का भविष्यवक्ता योएल यह घोषणा करता है", तुम्हारे "बेटे - बेटियाँ" आत्मा पुरित किए जायेंगे (योएल 2:28) ।

सुसमाचार के अन्तर्गत, परमेश्वर के अनुग्रह के गहनतर कार्य का वचन दिया गया है, यह वचन मसीही विश्वासियों के हृदयोंमे कार्यरत है, यह अनुग्रह विश्वास के द्वारा प्राप्य है, यह आज विश्वासियों को मिल सकता है । इसके द्वारा हम परमेश्वर की महान आज्ञा के अनुरूप कार्य करने में सक्षम हैं अर्थात् परमेश्वर के साथ हमारा अनन्य प्रेम और अन्य लागों के साथ अपनी ही तरह प्रेम - संबंध ।

जब जॉन वेस्लीने एडमण्ड गिब्सन को जो कि लन्दन के विशप थे, अपने सम्पूर्ण सिद्धान्त - सम्पूर्ण प्रेम के विषय में समझाया, "बिना किसी भेदभाव अथवा दुराव - छिपाव के" विशप महोदय का उत्तर था, "यदि वेस्ली महोदय यह आपका आशय है, इसे सम्पूर्ण विश्व में प्रकाशित कीजिए ।"[3]

यह वास्तव में एक शुभ समाचार है । परमेश्वर हमारे खतनारहित मनों को अलग कर सकता है - हठी हृदय, विद्रोही मन और हम सभी को एक कोमल, नम्र हृदय दे सकता हैं, जो यह कहे "हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ । (भजन संहिता 40:8)

सम्पूर्णतावाद नहीं

हमें मसीही सम्पूर्णता और "सम्पूर्णतावाद" के बीच अन्तर करने की आवश्यकता है । यह अन्तर हम बहुधा नहीं कर पाते ।

अनेक लोगों के मन में इसके प्रति भ्रामकता पाई जाती है, जो कि स्वर्गीय एडवर्ड लॉलोर के शब्दों में, "वेदना लेकर प्रत्येक को दे दीजिए" "सम्पूर्ण" बनने के प्रयास में ।" आश्चर्य नहीं अनेक लोग कहते हैं, "जब मैंने प्रयास नहीं किया, मैं बेहतर था !"

ऐसी परिस्थितियों में, परास्त हो जाना सरल है, इसे बॉन होफ़र ने संबोधित करते हुए कहा है, "सस्ता अनुग्रह" और "शिशु को नहाने के टब के पानी के साथ बाहर फैंक देना !"

पवित्रता कोई "दूसरा प्रयास" नहीं; यह दूसरा विश्राम है । एक विश्वासी जो कि परमेश्वर को समर्पित हो चुका है और परमेश्वर के पवित्र आत्मा से पूरित हो चुका है, वह कभी तनाव पूर्ण नहीं होता, वह परमेश्वर को प्रसन्न रखने का प्रयास नहीं करता । ऐसे व्यक्ति का जीवन तो परमेश्वर की सतत् प्रार्थना में व्यस्त रहता है, वह परमेश्वर की स्तुति और सेवा यीशु की आत्मा में करता रहता है । जैसे इब्रानियों का लेखक लिखता है "सो जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है । क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों को पूरा करके, विश्राम किया है (4 : 9 - 20) ।

धन्य शान्ति । पवित्र शान्ति ।
मेरी आत्मा में कितनी निश्चितता है ।
तूफानी समुद्र में यीशु मुझसे कहता है,
और समुद्री लहरें शान्त हो जाती हैं ।

- मेनी पेन फर्ग्युसन

प्रेम का ''अभ्यस्त स्वभाव''

थॉमस अँक्विनस का अनुसरण करते हुए, वेस्ली ने घोषणा की कि सम्पूर्णता ''आत्मा का अभ्यस्त स्वभाव है, जो कि पवित्र रचना में पवित्रता के नाम से विदित शब्दावलि है ।''[4] यह एक ''अभ्यस्त स्वभाव'' है, न कि अभ्यस्त सम्पूर्ण कार्य - सम्पादन । इसीलिए प्रभु की प्रार्थना में क्षमादान के सन्दर्भ में यह लिखा है'' (देखिए मत्ती 6 : 1) यह सम्पूर्णता से अलग नहीं है, परन्तु वास्तव यह तो उसका परिचायक है ।

आदम के पतित वंश के होने के कारण, हमारा अभ्यस्त स्वभाव, आज्ञा - उल्लंघन, स्वयं से प्रेम करना ही है । जैसा कि लूथर महोदय ने कहा है, हम स्वभाव से स्वार्थ से घिरे हुए उत्पन्न हुए हैं ।'' हम सभी स्वकेन्द्रित स्वार्थ मनोदशा में ही उत्पन्न हुए हैं । हम में से प्रत्येक अपने स्वभावानुकूल गुण के कारण इस संसार के केन्द्र बनना चाहता है अर्थात् परमेश्वर ।

मूर्तिपूजक ''कठोर ह्रदय'' हमारा मौलिक पाप का तत्व है । परन्तु परमेश्वर ने हमें यह वचन दिया है : ''मैं तुमको नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा; और तुम्हारी देह में से पत्थर का ह्रदय निकालकर तुम को मांस का ह्रदय दूंगा । और में अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे ।'' यहे जकेल 3 : 2 - 27। फिर हम आनन्दमग्न होकर गाते हैं,

हाँ प्रभु मैं कहूँगा, हाँ प्रभु
तेरी इच्छा और मार्ग के अनुकूल ।
मैं कहूँगा हाँ, प्रभु, हाँ,
मैं तुझ पर विश्वास करूँगा और आज्ञा - पालन करूँगा ।
जब तेरा आत्मा मुझ से बात करता है,
मैं अपने पूरे मन से तुझ से सहमत होंगा,
और मेरा उत्तर होगा

हाँ, प्रभु, हाँ।

सम्पूर्ण प्रेम, न कि निष्पापता

वेस्ली की शिक्षा का मूल तत्व प्रेम की "सम्पूर्ण व्यवस्था" (जैसा कि 1 कुरिन्थियों 13 और पर्वतीय उपदेश मे वर्णित है) और "सम्पूर्ण प्रेम" (जैसा कि मान्य है परमेश्वर और मानव के प्रति पवित्र प्रेम", अथवा निष्पापता का उद्देश्य। यहाँ तक कि जो प्रेम में सिद्ध' है, "परमेश्वर की महिमा में कम पार जाते हैं" और, इसलिए, 'प्रत्येक मसीही के समान, "परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है सेंत भेंत धर्मी ठहराए जाते हैं ... मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।" (रोमियों 3 : 23, 24, 28)।

यह अन्तर वेस्ली के सिद्धान्त के वास्तविक पाप के संबंध में दोहरे स्वभाव को स्पष्ट करता है। उसकी पाप के सन्दर्भ में प्राथमिक परिभाषा यह है, "प्रेम - विधि को जानबूझ कर उसके प्रत्येक नियम का भंग करना, और कुछ नहीं।"[5]. परन्तु 1 कुरिन्थियों 13 में वर्णित प्रेम के सम्पूर्ण नियम को स्पष्ट करने के बाद, वेस्ली महोदय लिखते हैं," आप जो सब प्रेम के विषय में अनुभव करते हैं, आप अगले वर्णन से स्वयं की तुलना करें। स्वयं को तौलकर देखें, और निश्चय कर लें कि आप इन में से किसी में भी कम न हों।"[6]

वेस्ली ने विश्वास किया कि पाप वास्तव में प्रेम के नियम के प्रत्येक अंश की जानबूझकर अवहेलना करना है ... और इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

क्योंकि वे लोग जो सम्पूर्ण प्रेम का आनन्द लेते हैं वे भी प्रेम की "सम्पूर्ण विधि" में खरे नहीं उतरते कम ही पाए जातें हैं।

"निष्पाप सम्पूर्णता", वेस्ली कहते हैं, एक उपवाक्य है जिसे मैं कभी प्रयोग नहीं करता, क्योंकि मैं स्वयं को इसके विपरीत पाता हूँ।"[7] मसीही सम्पूर्णता पाप से मुक्ति है - इसके सामर्थ्य से अथवा इसके शासन से, एक नये जीवन में प्रवेश और इसका मूल (मिथ्या स्वार्थ) सम्पूर्ण उद्धार में है - परन्तु यह निष्पाप नहीं क्योंकि एक उत्तम व्यक्ति भी प्रेम की सच्ची कसौटी पर कभी सच्चा नहीं उतरता, इसलिए उसे सर्वदा "बलि की आवश्यकता" होती है।"[8] अतः यह आवश्यक है कि, जब तक हम जीवित हैं, चार्ल्स वेस्ली की भांति कहें,

हे प्रभु मुझे प्रतिक्षण मुझे तेरी आवश्यकता होती है
तेरी मृत्यु की महानता की।[9]

एक शब्द में, मसीही सम्पूर्णता अथवा सिद्धता, ख्रिस्त केन्द्रित अस्तित्व है।

वेस्ली महोदय ने अपने लेख - "मसीही सिद्धता का एक सरल अध्ययन" में इस बात पर बल दिया है,

पवित्रतम् मनुष्यों को भी ख्रिस्त की आवश्यकता होती है, उनके भविष्यवक्ता के रूप में, एक "संसार की ज्योति" के रूप में । क्योंकि वह उन्हें ज्योति नहीं देता, परन्तु क्षण - प्रति क्षण यदि वह ज्योति न दे, सब कुछ तत्क्षण अंधकारमय हो जाता है । उन्हें फिर भी ख्रिस्त की उनके राजा के रूप में आवश्यकता होती हैं, क्योंकि परमेश्वर उन्हें पवित्रता का दान नहीं देता । परन्तु जब तक उन्हें प्रति क्षण इसकी आपूर्ति नहीं होती, तो फिर अपवित्रता के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं रहता । उन्हें ख्रिस्त की उनके पुरोहित के रूप में फिर भी आवश्यकता बनी रहती है, ताकि उनकी पवित्र बातों के लिए बलि चढ़ाए । यहाँ तक कि सिद्ध पवित्रता भी परमेश्वर के द्वारा केवल ख्रिस्त के माध्यम से ही स्वीकृत होती है ।"[10]

इस प्रकार का मसीही स्वीकार इसलिए, "तू मेरी ज्योति है, मेरी पवित्रता है, मेरा स्वर्ग है । मेरी तेरे साथ सहभागिता से, मैं पूर्ण ज्योर्तिर्मय हूँ, पवित्र हूँ और आनन्दमग्न हूँ । परन्तु यदि मैं अकेला छोड़ दिया जाऊँ, मैं पाप के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, अन्धकारमय और नर्क मात्र रह जाऊँगा ।"

लेलिया एन. मॉरिस ने इस सत्य को इस प्रकार चित्रित किया हैं, वे लिखती हैं :

"पवित्रता के नाम में आहवान्" उसके प्रिय नाम की स्तुति । यह धन्य रहस्य विश्वास के लिए, अब मुझे स्पष्ट ज्ञात हो गया है :

हमारी अपनी धार्मिकता नहीं, परन्तु ख्रिस्त की जो हमारे अन्दर है ।

वह जीवित और राज्य करती है, और हमें पाप से बचाती है ।

जो अध्याय अब आनेवाले हैं हम उनका अध्ययन करके देखेंगे कि ये बातें कहाँ तक सत्य हैं (देखिए प्रेरितों के काम 17 : 11) और यदि यह सत्य है, तो हम देखेंगे कि उन बातों का आज मसीही जीवन में व्यावहारिक दृष्टि से क्या महत्त्व है ।

ओ प्रेम की ज्वाला
ओ प्रेम और पवित्रता की ज्वाला
तू मेरे हृदय में निवास करती हैं;
परन्तु मुझे नम्रता प्रदान कर
वह जो मेरे स्वामी का अंश थी ।
ओ पिन्तेकुस्त के जीवन का आनन्द,
ओ मेरे दिन की उज्ज्वल ज्योति,

तू मुझे शुद्ध शान्ति प्रदान करता है,
और मेरे जीवन-पथ को ज्योतिर्मय बनाता है ।

मैं आजीवन तेरी स्तुति करूँगा;
मैं तेरा बना रहूँगा और तेरी सेवा करूँगा,
दिन - प्रति दिन मैं तेरे चरणों में समर्पित होगा
इसके लिए मैं कोई समझौता नहीं करूँगा ।

- जे. कॅनॅथ ग्रिडर

आपकी आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति आधार शिलाएँ

यह अध्याय चार आधारस्तंबों पर आधारित है :

1. व्यवस्थाविवरण 30 : 6 की प्रतिज्ञा और मत्ती 5 : 48 की आज्ञा ।
2. परफॅक्टियो (लेटिन) और टेलेओस (ग्रीक) के बीच अन्तर ।
3. मूर्तिपूजक स्व-प्रेम की भावना हमारा रोग है, परन्तु इस रोग से परमेश्वर चंगाई देना चाहता है ।
4. यहाँ तक कि उत्तम पवित्र मसीही विश्वासियों को यीशु के बलिदान की प्रतिक्षण आवश्यकता होती है ।

अध्याय की पुनरावृत्ति कीजिए और उपर्युक्त आधारशिलाओं के विषय में सोचिए । प्रत्येक के विषय में अपने शब्दों में उनके अर्थ को एक अथवा दो वाक्यों में अभिव्यक्त करें । कल्पना करें कि आप को एक 12 वर्षीय बालक / बालिका को इन्हें समझाना है । यदि आप समय निकालकर इन में से किसी एक आधारशिला को बच्चों की भाषा-स्तर पर समझाना हो, तो दूसरे क्रमांक को चुनिए । यदि आप वास्तव में इसे एक बालक को समझाते हैं और जानना चाहते हैं कि आप अपने प्रयास में कहाँ तक सफल हुए, आप उस बालक से पूछें कि वह इसे कहाँ तक समझपाया ।

आत्मिक सीढ़ियाँ

1. यह अध्याय आप को कैसा लगा ?

अ) आश्चर्यजनक

ब) विश्राम दायक

क) क्या आपने छल - कपट किया ?

ड) आत्मग्लानि - अनुभव

ई) उत्साह वर्धक

फ) अन्य

2. यदि इस अध्याय में कोई एक जीवन - परिवर्तन का विचार वह यह है

3. पवित्रता का सार-तत्त्व ग्रेट हाऊस और एडम क्लार्क के मतानुसार यह है, ''परमेश्वर ने हमारी सृष्टि की उस अन्त का हमारा उत्तर ।' क्या आप परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार अपना ज़ीवन व्यतीत कर रहे हैं ? क्या यह प्रश्न आपको परमेश्वर की स्तुति अथवा उसकी प्रार्थना के लिए प्रेरित करता है ?'

4. लेखक ग्रेटहा उस ने एक कलम का उदाहरण सम्पूर्णता अथवा सिद्धता को स्पष्ट करने के लिए दिया अर्थात् बाइबल की दृष्टि में इसका क्या अर्थ है ? एक कलम सिद्ध है, इसलिए नहीं कि इसमें कोई दोष नहीं, परन्तु इसलिए कि यह लिखती है - यह वही करती है जिसके लिए इसका निर्माण किया गया था । क्या आप और ऐसे उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं ?

5. यदि आप इस कलम से कोई कहानी लिख रहे हों, यह कहानी आपकी आत्मकथा है, क्या यही कहानी परमेश्वर के मन में आपके लिए थी ?

इस वर्ष आपने कौन सा अध्याय अभीतक लिखा है ? दूसरा अध्याय किस के विषय में होगा ?

जो आत्मकथा आप वर्तमान में लिख रहे हैं, उसमें आप किस अंश को अलग करना चाहते हैं, इसमें क्या परिवर्तन करना चाहते हैं ?

क्या आप चाहते हैं कि आप परिवर्तन करें अथवा आप परमेश्वर को ऐसा करने देना चाहते हैं ?

कार्यसाधन

1. इस अध्याय में पांच भजनों अथवा गीतों के अंश उद्घृत किए गए हैं ? इन में से इस सप्ताह के प्रत्येक दिन के लिए अपनी दैनिक प्रार्थना, भक्ति अथवा अन्य आत्मिक विषय के लिए एक अथवा दो अंशों को चुनिए ।

2. क्या इस अध्याय में कुछ ऐसी बात है जिसे आप अपने परिवार अथवा मित्र के साथ बाँटना चाहते हैं ?

3. स्व प्रेम मौलिक पाप का एक पाप है । परमेश्वर के समक्ष अपने हृदय को जांचें, और प्रार्थना करें कि परमेश्वर का प्रेम और पड़ोसी के प्रति प्रेम - भावना आपके जीवन को चरितार्थ करें ।

निम्नलिखित शास्त्रीय प्रार्थना को सिद्ध प्रेम के लिए प्रयुक्त करें । प्रत्येक सुबह - शाम इसे प्रार्थना के रूप में प्रयोग कीजिए । इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय के अध्ययन के आरंभ और अन्त में इस प्रार्थना का प्रयोग कीजिए ।

सिद्ध प्रेम के लिए प्रार्थना

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जिसके समक्ष सभी हृदय
खोले जाएं, सभी इच्छाएं प्रकट हों,
और जिससे कुछ भी छिपाया न जाए
हमारे मनों के विचार शुद्ध किए जाएं
तेरे पवित्र आत्मा की प्रेरणा से
हम सम्पूर्ण रूप से तुझे प्रेम करें
और पूरी योग्यता से तेरे पवित्र नाम को महानता दें,
यीशु ख्रिस्त हमारे प्रभु के द्वारा, आमीन ।[22]

सेनाओं का याहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है;
सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है ।
- यशायाह 6 : 3.

2

पुराना नियम पवित्रता की शिक्षा का मूल

पुराना नियम पवित्रता की शिक्षा का मूल.

अनेक समकालीन मसीही विश्वासियों के लिए पुराना नियम प्राचीन और अतीत की घटना स्वरूप लगता है । इसलिए, हम उसके विषय में अधिक ज्ञान न रखने के लिए अधिक ध्यान नहीं देते । यदि हम वास्तव में मसीही विश्वासी बनना चाहते हैं, तो पुराना नियम नये नियम से असन्दर्भित सा लगता है ।

परन्तु वास्तविकता तो यह है कि हम नये नियम को वास्तव में पुराने नियम के ज्ञान के अभाव में समझ नहीं सकते । हमारे मसीही विश्वास की जड़ें पुराने नियम की भूमि के अन्दर बहुत गहरी समाई हुई हैं । ऑगस्टीन महोदय ने अवलोकन किया, "नया पुराने में समाहित हैं, पुराना नये में प्रकाशित हुआ है ।" जहाँ तक मसीही पवित्रता के सिद्धान्त का प्रश्न है यह अवलोकन अक्षरसः सत्य है ।

नये नियम के पवित्रीकरण (शुद्धिकरण) का सिद्धान्त पुराने नियम की शिक्षा का पुष्प है ।

वचन में क्या है ?

पवित्रता शब्द से आरंभ करते हैं, परन्तु इस शब्दावलि को समझने के लिए, हम अंग्रेजी - भाषा के शब्दकोष की ओर नहीं जाते । परन्तु विद्वान व्यक्तियों की सहायता

से हमें हीब्रू - भाषा के शब्द गॉडेश की ओर ध्यान देना है ।'' यह सर्वाधिक ईश्वरीय शब्द है ।'' नॉरमन एच. स्नायथ की ऐसी मान्यता है । ''इसका संबंध परमेश्वर के स्वभाव से संबंधित है; कोई अन्य शब्द इतना उपयुक्त नहीं और न ही कोई इतना अधिक ।''[1]

इस शब्द की गहन परीक्षा करने पर यह प्रकट होता है कि इसके तीन संबंधित अर्थ हैं । यह अपने आप में विच्छेद (अथवा ''पृथकता)'' महिमा, और पवित्रता के विचार रखता है । जबकि गॉडेश एक प्राचीन शब्द है । हमारे लिए जो परमेश्वर की आज्ञा को मानने के लिए उत्कंठित रहते हैं, इसमें अर्थ समाहित है ।'' पवित्र बनो क्यों कि मैं पवित्र हूँ । (1 पतरस 1 : 16) ।

अलग किया हुआ

830 उदाहरण जिनमें गॉडेश अथवा इसके सजातीय शब्द इस बात को प्रगट करते हैं कि इसका प्राथमिक अर्थ हैं ''पृथक-करण,'' अलग होना । यह धारणा प्रत्येक उदाहरण में जब इसका प्रयोग पुराने नियम के वचनों में किया गया, सभी स्थलों में विचार साम्यता है । परमेश्वर ही केवल अथवा वे बातें जो परमेश्वर से संबंधित हैं वे सर्वथा अन्य लोगों या बातों से अलग हैं ।

पवित्रता न केवल परमेश्वर का गुण है, अथवा उसका प्रमुख गुण है, यह तो परमेश्वर का अपना स्वाभाविक चरित्र है । जब भविष्यवक्ता आमोस कहता है कि, ''परमेश्वर अपनी पवित्रता की शपथ खाकर कहता है ।'' (आमोस 4 : 2). वह वही बात कह रहा है जिसकी वह आगे घोषणा करता है : 'सेनाओं के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, (परमेश्वर यहोवा ने अपनी ही शपथ खाकर कहा है) (आमोस 6 : 8).[2]

परमेश्वर अपने में स्वयं है । जो कुछ सर्वशक्तिमान है, प्रभु परमेश्वर इसी नाम से जाना जाता है, वह इसी बात का प्रमाण है कि वही पवित्र परमेश्वर याहोवा है, '6पूर्ण रूप से पवित्रतम्''[3]

प्रथम सत्य, इसलिए, हमारे चिन्तन में स्थिर करने के लिए यह कि सम्पूर्ण और अन्तिम अन्तर परमेश्वर और हम प्राणियों के बीच यही है । ''मैं परमेश्वर हूँ और अमर - शाश्वत हूँ'', सर्वशक्तिमान परमेश्वर घोषित करता है, ''मैं मनुष्य नहीं परमेश्वर हूँ, मैं तेरे बीच में रहनेवाला पवित्र हूँ'' (होशे 11 : 9).

परमेश्वर और हमारे बीच के अन्तर को घूमिल करना सभी पापों की जड़ है । ऐसा समय सृष्टि के प्रारंभिक इतिहास में हुआ जबकि शैतान ने आदम - हव्वा को वचन दिया कि यदि वे अपना अधिकार का दावा करें, अपनी स्वतंत्रता की मांग करें, वे स्वयं ''परमेश्वर के तुल्य हो जायेंगे'' यह निर्णय करने कि अच्छा क्या है और बुरा

क्या (उत्पत्ति 3 : 5). स्वशासनात्मकता आज भी मानवजाति का पाप है । यह एक स्पष्ट पाप है और आधुनिक युग का भ्रष्ट विचार है ।

परन्तु यदि परमेश्वर और हम में, अन्तर को स्पष्टं रूप से नहीं देखा जाए, तो वह भी सभी पापों का मूल है, "परमेश्वर को परमेश्वर ही रहने दो यह सभी पवित्रत का मूल हैं ।

पवित्रता का प्रथम शब्द है, "मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ कोई उद्धार कर्ता नहीं" (यशायाह 43 : 11) . परमेश्वर अकेला ही परमेश्वर है; - प्राणी - मात्र - प्राणी है । परमेश्वर और प्राणी के बीच यह गुणात्मक अन्तर ही केवल स्वयंसिद्ध पवित्रता का प्रमाण है । जैसा कि स्नेत आग्रहपूर्वक कहते हैं, "परमेश्वर पृथक और स्पष्ट है क्योंकि वह परमेश्वर है । एक व्यक्ति अथवा कोई वस्तु हो सकता है अलग हो अथवा अलग किए जा सकते हैं, क्यों कि ये तो परमेश्वर के साथ हैं ।"[4] जबकि पवित्रता तो सभी पापों से पृथक है, और इससेभी अधिक स्पष्ट रूप से कहा जाए तो पाप का परमेश्वर से कोई संबंध नहीं, परमेश्वर का पाप से स्पष्ट पार्थक्य है [5]

क्या मैं परमेश्वर के समान पवित्र होने की इच्छा करता हूँ ? तो फिर मुझे यह कदापि नहीं भूलना चाहिए, कि परमेश्वर ही मेरा उद्धारकर्ता है, केवल उसी की ओर मेरी समस्त स्वामी - भक्ति है, और मेरी आराधना अविभक्त है, केवल उसी के लिए है, कोई अन्य दावेदार नहीं ।

ओ मेरी आत्मा में यह दान दे कि
उस में केवल तेरा ही प्रेम निवास करे,
ओ तेरा ही प्रेम मुझ पर अधिकार करे,
मेरा आनन्द, मेरा धन, और मेरा अस्तित्व ।
मेरे हृदय से सभी लालसाओं की अग्नि तिरोहित हो;
मेरा प्रत्येक कार्य, शब्द, विचार प्रेममय हो ।[6]
जा सबसे पृथ्क है वह, "पवित्रता में महिमामेय" है ।

जबकि पार्थ्क्य गाडेश (परमेश्वर) के प्राथमिक अर्थ है, अनेक पर्यायवाची अर्थों में यह कबोड, अथवा महिमा का सार्थक शब्द है, वह प्रभु के देदिप्यमान् उपस्थिति का आभास है ।[7] वह "सभी में पवित्र है" जिसकी आभा अद्‌भुत है, उसका सौन्दर्य अद्वितीय है, अथवा उसकी महिमा केवल उसी की है ।" हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है ... ? तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी, और अपनी स्तुति करनेवालों के भय के योग्य है (निर्गमन 15 : 11), हम ऐसा गुणानुवाद मूसा और इस्राएल की सन्तान के साथ मिलकर करते हैं ।

अनेक उदाहरण परमेश्वर की पवित्रता के संबंध में उसकी महिमा से जुड़े हुए हैं ।[8] प्रज्ज्वलित झाड़ी में, मूसा से कहा गया कि वह ''पवित्र भूमि'' पर खड़ा है (निर्गमन 3 : 5)

एक ज्वाला परमेश्वर की उपस्थिति के साथ और प्रज्ज्वलित पवित्रता, सीने पर्वत का वर्णन पवित्र और अगम्य रूप में किया गया है । (देखिए निर्गमन 19 : 23 - 24). अपने लोगों के साथ तंबू में मिलने का वचन, परमेश्वर ने कहा, ''मैं इस्राएलियों से वहीं मिला करूँगा, और वह तंबू मेरे तेज से पवित्र किया जाएगा'' (29 : 43) और जब मूसा इसका निर्माण पूरा कर चुका, ''तब बादल मिलापवाले तंबू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवासस्थान में भर गया'' (40 : 34) । उसी प्रकार जब मिलापवाले तंबू के स्थान पर मन्दिर को यरुशलेम में समर्पित किया गया, ''यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया'' (1 राजा 8 : 11) । पवित्र महिमामय सौन्दर्य ने पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति का उसके लोगों के मध्य अपना स्थान बनाया । यह आज भी विद्यमान है । इस दिव्य महिमा के विषय में फिनियस एफ. ब्रीस ने एक बाल समुदाय से निवेदन पूर्वक अनुरोध किया, ''महिमा को बनाए रखो ।''

''उज्ज्वल उपस्थिति अथवा पवित्र परमेश्वर की महिमा, ''जॉर्ज एलन टर्नर लिखते हैं,'' ''परमेश्वर के अन्तरतम स्वभाव की प्रगट करो''[9] जब ''वह सिद्ध,'' पूर्ण रूप से मुझ में परिपूर्ण समा जाता है, ''मेरी आत्मा महिमामय हो जाती है ।'' (जे. एम. हॅरिस). प्रभु की जाज्वल्यमान, उत्कृष्ट प्रकाशवान उपस्थिति, ''जिस प्रकार स्नेथ के द्वारा अभिव्यक्त की गई है, मेरे हृदय और जीवन पूरी रीति से फैल जाती है । और फिर मैं ''परमेश्वर का मन्दिर'' बन जाता हूँ,'' मेरा दीन हृदय पवित्रों का पवित्र बन जाता है,'' जहाँ परमेश्वर की महिमा नम्रता पूर्वक मेरे मन में निवास करने लगती है ।

अलग किया हुआ, पवित्रता से उज्ज्वल.

''गॉडेश'' के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है वह परमेश्वर की उज्ज्वल ज्योति है । परमेश्वर के पवित्र स्वभाव को तीन आयामें में समझा जा सकता है - पार्थक्य (सबसे अलग), महिमा और पवित्रता । यह बात तम भविष्यवक्ता यशायाह ने अपने दिए गए दर्शन में अपनी पुस्तक के छठें अध्याय में परमेश्वर की पवित्रता को स्पष्ट रूप से इस सत्य की पुष्टी की है ।

भविष्यवक्ता कहना आरंभ करता है, ''जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा, मैंने प्रभु को बहुत ही ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा; और उसके वस्त्र के घेरे से मन्दिर भर गया (यशायाह 6 : 1) । यहाँ, वह उत्कृष्ट, अद्वितीय परमेश्वर,'' वह सब से

सिद्ध,'' वह जो केवल ''उच्च और महान'' है, समस्त सृष्टि में और समस्त प्राणियों में, दृष्टिगत होता है, (देखिए 40 : 9-31) । ''उसके ऊपर सारा दिखाई दिए,'' यशायाह आगे कहता है, ''उनके छः छः पंख थे'' (यशायाह 6 : 2) । जब साराप गाते है'' पवित्र, पवित्र, पवित्र, ''वे अपने मुंह को ढाँप लेते हैं, ताकि वे परमेश्वर को न देख सकें और अपने पाँवों को भी ढांपे हुए थे ताकि वह उनके पांवों को न देख सके । इस तरह वे परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर घूम रहे थे, एक दूसरे से परमेश्वर की पवित्रता की घोषणा कर रहे थे ।[10] - ''सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है ।'' (पद 3).

भविष्यवक्ता यह दर्शन पाकर आश्चर्यचकित और अवाक् रह गया, अपने प्राणी होने और पापमय होने के कारण । और इसी भांति हम भी होंगे ।

जबकि परमेश्वर ही एकमात्र ''परिपूर्ण सिद्ध'' है, वह हम से दूर नहीं है''[11] वह महान परमेश्वर अपनी सृष्टि को अपनी महिमा में अवगाहन करता है । वह तो सर्वव्यापी और अद्वितीय है । और जब हमें उसकी महानता, और उत्कृष्टता से परिचय कराया जाता है, हम उसे, जैसा कि विलियम ब्लेंक ने वर्णन किया है, देखते हैं, ''स्वर्ग पुष्पों से सुसज्जित ।'' प्रत्येक प्राणी चाहे वह छोटा या बड़ा हो, प्रत्येक घाटी, और प्रत्येक पर्वत, प्रत्येक मानव, चाहे वह किसी भी वंश का हो, किसी भी वर्ण का, अथवा संस्कृति का, अपनी विचित्र - विधिसे परमेश्वर की महिमा का गान करते हैं । परन्तु इन सब से ऊपर, प्रत्येक हृदय उसके आत्मा से भर गया, और परमेश्वर पित की स्तुति और धन्यवाद करने लगा, उसकी महिमा से परिपूर्ण हो गया ।

यशायाह हमें ''उनके स्वरों के विषय'' बताना चाहता है, ''और पुकारनेवालों के शब्द से डेवढ़ियों की नींवें डोल उठीं, और भवन धूएं से भर गया । तब मैंने कहा, हाय ! हाय ! मैं नाश हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ; क्योंकि मैंने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है (6 : 45) । भविष्यवक्ता आश्चर्यचकित होकर अवाक् रह गया - अपने प्राणी होने और पापी होने के परिणाम स्वरूप । और हम भी ऐसे ही होंगे ।

हम आज अपने समय में ऐसे पवित्र परमेश्वर के ऐसे दर्शन पाने के लिए कितने उत्कण्ठित हैं ! हमारी संस्कृति में, अपनी भाषण-कला में अपनी ''बौद्धिक कुशलता'' में हमारी सारी विशेषताएँ उस महान परमेश्वर की अद्वितीय छवि को निहारकर उस सर्वशक्तिमान की उपस्थिति के सम्मुख हम अवाक्, हतबुद्ध से खड़े रह जाते हैं । यीशु ख्रिस्त की कलीसिया में एक सर्वत्रव्याप्त आनन्द ''परमेश्वर के परिवार के अंग''

हैं (इतने मूल्यवान परिवार के सदस्य हैं) उस महान, उच्च आत्मा - पूरित (आत्मा अभिषिक्त) प्रार्थना में, "पवित्र, पवित्र, पवित्र ! सर्वशक्तिमान परमेश्वर !" की स्तुति में अपने स्वरों को ऊपर उठाते हैं." (रेजिनॅल्ड हीबर).

यशायाह अपना दर्शन आगे बताते हुए कहता है, "तब एक साराप हाथ में अंगारा लिए हुए, जिसे उसने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था, मेरे पास उड़कर आया । और उसने उससे मेरे मुँह को छूकर कहा, देख, इसने तेरे होठों को छू लिया है, इसलिए तेरा अधर्म दूर हो गया और तेरे पाप क्षमा हो गए ।" (6 : 6-7) ।

परमेश्वर की पवित्रता कोई अचल वस्तु नहीं । पवित्र परमेश्वर जीवित, कार्यशील, प्रभुत्व सम्पन्न प्रभु है, वह हमारे साथ सदा क्रियाशील - रूप में उपस्थित रहता है, यदि हम वास्तविक रूप से उसकी आराधना करें उसका शुद्ध करनेवाला आत्मा हमें सदा थामे रहता है, जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, आत्मसमर्पण करते हैं और उस पर अपनी सम्पूर्ण श्रद्धाभक्ति और विश्वास स्थित करते हैं, वह हमें कभी नहीं छोड़ता । "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है ।" (1 यूहन्ना 1 : 9) ।

हमारी संस्कृति में एक दिखावे की वकृत्वशीलता है, अर्थात हम "बहुत ज्ञानी - बुद्धिमान" हैं परन्तु सर्वशक्तिमान की उपस्थिति ने इसे दूर कर हमें अवाक् कर दिया है, हम उसके सामने दुस्साहस नहीं कर सकते ।

"तब" भविष्यवक्ता अपना दर्शन - विवरण समाप्त करता है, "मैंने प्रभु का यह वचन सुना, मैं किसको भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा ? तब मैंने कहा, मैं यहाँ हूँ । मुझे भेज । (6 : 8) ।

यशायाह के मन्दिर - अनुभव में हमारे पास पिन्तेकुस्त के आगामी पवित्र आत्मा के उँडेले जाने का पूर्वानुमान है । जो मूसा और यशायाह और पुराने नियम के अन्य चुने संतों के समूहने परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में पाया, हम सबके लिए नई प्रतिज्ञा के रूप में वही वचन आज उपलब्ध है ।" परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इसप्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश - अंश करके बदलते ।

c. वह अपने लोगों के पाप के कारण प्रताड़ित हुआ साथ ही साथ अपने आन्तरिक पापमय भावना के कारण भी ।

d. उसे यह भय व्याप्त था कि परमेश्वर उसे जो कार्य करके के लिए देगा, वह उसे पसन्द न करे ।

3. लेखक ग्रेट हाऊस के अनुसार, परमेश्वर अपनी महिमा उन लोगों पर उंडेलता है -

a. समस्त सृष्टि पर ।

b. विश्वासियों पर ।

c. जो लोग आत्मा-पूरित हैं ।

d. उपरोक्त समस्त ।

e. उपरोक्त कोई भी नहीं ।

4. यशायाह 6 अध्याय के अनुसार हमारी पापमयता

a. अन्तिम सीमा पर है और घोर निराशाजनक है ।

b. यह दिव्य शुद्धिकरण पर आधारित है ।

c. यह कुछ ऐसी है जो हमें परमेश्वर के समीप रखती है ।

d. इससे पूर्व कि हम ईश्वर - सेवा करें, हमें शुद्ध होने की आवश्यकता है ।

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर दे चुकने के उपरान्त, आप इस अध्याय के चार आधार-स्तंब अपने शब्दों में देने के लिए तैयार हैं । वे हैं -

1.

2.

3.

4.

आत्मिक सीढ़िया

1. यह अध्याय मूसा के उस अनुभव से संबंधित है, जब उसका सामना परमेश्वर से जलती हुई झाड़ी में हुआ । मूसा तो पवित्र भूमि पर खड़ा हुआ था । अब आप स्वयं की "पवित्र भूमि "के अनुभव के विषय में विचार करें । आप उसका वर्णन किसप्रकार करेंगे ? क्या आपका अनुभव जो यशायाह 6 अध्याय में जाते हैं (2 कुरिन्थियों 3 : 18) । यह आज हम सबके लिए हैं ।

ओह, वह पवित्र अग्नि मुझ में
आज प्रज्ज्वलित होना आरंभ करे,
मेरी सारी निम्न इच्छाएँ भस्म हो जाएं,
और पर्वत मेरे सामने से उड़ा दिए जाएं !

ओह, आज आकाश मुझ पर गिर पड़े,
और मेरे सारे पाप भस्म हो जाएं !
पवित्र आत्मा मैं तुझे पुकारता हूँ, आ;
भस्म करनेवाला आत्मा, आ !
शुद्ध करनेवाली अग्नि, मेरे ह्रदय से होकर जा;
मेरी आत्मा को ज्योतिर्मय बना दे;
अपना जीवन मेरे समस्त अंग में विस्तीर्ण कर.
और सम्पूर्ण रूप से शुद्ध कर दे ।

- चार्ल्स वेस्ली

आप की आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति

आधारस्तंब -

इस अध्याय के लिए आधार स्तंब स्थापित करें जब आप निम्नलखित प्रश्नों के उत्तर खोजते हैं :

1. (सभी निर्देशों का प्रयोग करें) इस अध्याय के अनुसार परमेश्वर

a. महिमामय ईश्वर है ।

b. अनन्य और नाशवान मनुष्यों से ऊपर है ।

c. निश्चल दूर करनेवाला है ।

d. तेजस्वी और महिमामय परमेश्वर है ।

e. हम में, और हम परमेश्वर तुल्य हो रहे हैं ।

f. स्वयं को बुद्धिमान समझना ।

g. प्रज्ज्वलित पवित्रतावाला ।

2. (सभी निर्देशों का पालन करें) यशायाह आश्चर्यचकित और अवाक् रह गया जब उसका सामना परमेश्वर यहोवा से हुआ, क्योंकि -

a. उसे जो परमेश्वर के विषय ज्ञान दिया गया था, उसने जो देखा वह बिल्कुल भिन्न था ।

b. उसे अपने मात्र प्राणी होने का आभास हुआ ।

दिए गए महिमा, ज्योति, ज्योतिर्मय पवित्रता, उच्च और उत्कृष्ट, धूएँ के समान होगा ?

2. यशायाह का परमेश्वर प्रदत्त दर्शन इन सन्दर्भों में वर्णित किया जा सकता है - नम्रता, स्वीकारोस्ति, पाश्चाताप, अभिषेक, समर्पण, पवित्रता की उत्कण्ठा, और सेवा - उत्सुकता । स्वयं के "पवित्र स्थल" अनुभवों के अन्तर्गत इन में से कौन सी शब्दावलि आपके उत्तर में अधिक उपयुक्त ठहरती है ?

3. हम ब्रह्माण्ड के परमेश्वर को उपस्थित होने का आदेश तो नहीं दे सकते, परन्तु हम उसकी महिमा को देख सकते हैं । वह ढूंढ़नेवाला परमेश्वर, हमारे सामने उपस्थित होता है, जब उसकी इच्छा होती है । परन्तु यदि हम अपने हृदय को स्वर्गकी ओर उन्मुख करने के लिए कभी तैयार नहीं हों, तो संभव है हम कई स्वर्गिक अनुभवों से वंचित रह सकते हैं । आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि आपका "पवित्र स्थल" अनुभव बहुत कम है ? कई प्रकार के मनोरंजन कार्यक्रम, टी. वी. पर खेल - कूद के अनेक कार्यक्रम, आत्म - ग्लानि, तीन काम ? आप इस सप्ताह ऐसा क्या कर सकते हैं कि आप परमेश्वर के आतमा के लिए उपलब्ध हो सकते हैं ?

4. प्राचीनकाल में परमेश्वर की पवित्र महिमा मुख्य रूप से परम पवित्र स्थान अथवा मिलापवाले तंबू के पार्श्व में परदे के पीछे स्थित रहती थी, ऐसा मान्य विश्वास है । बली के दिन जब महायाजक - और केवल वही बली चढ़ाने के लिए पवित्र प्रांगण में लोगों के पापों के बलिदान के लिए प्रवेश करता था, एक रस्सी उसके पैरों में बाँधी जाती थी । यदि परमेश्वर की पवित्रता की ज्योति उसे मार देती तो, लोग उस रस्सी को खींचकर बाहर निकाल लेते थे, बिना भीतर प्रवेश किए और बिना अपने प्राण गवाँए ।

   अब हम ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं रही । कारण जानने के लिए इस अध्याय का पुनरावलोकन कीजिए ।

कार्य साधन

1. यह मिथ्या अनुमान या त्रुटि मत कीजिए कि परमेश्वर अपनी महिमा केवल व्यक्तिगत भेंट में ही उंडेलता है, जैसे कि यशायाह 6 अध्याय के सन्दर्भ में, और मूसा के सन्दर्भ में । इस अध्याय में ऐसे दो अन्य उदाहरणों का उल्लेख मिलता है, जब परमेश्वर ने ऐसे अवसरों पर अपनी महिमा समस्त मण्डली पर उंडेली ।

   निर्गमन 40 : 34 और 1 राजा 8 : 11 का भी अपनी भक्ति - आराधना के अवसर पर पढ़ें । इसके पश्चात् प्रेरितों 2 को भी पढ़ें ।

2. आप स्वयं परमेश्वर की महिमा को किस प्रकार प्रतिबिंबित करते हैं ? कृपया इस विषय में निष्ठापूर्वक उत्तर दें । यह अध्याय निश्चयपूर्वक इस बात की पुष्टि करता है कि हम सभी ने परमेश्वर की महिमा को प्राप्त किया है । वह आप में किस प्रकार महिमावान् ठहरता है ? आप किसप्रकार परमेश्वर की महिमा को अपने जीवन से प्रकट कर सकते हैं ?

लोग आपको निर्बल कहें, अनिष्ठावान् कहें, चोर, पापी, असफल, अपने वचन - विश्वास से पीछे मुड़नेवाला कहें । परन्तु आप इससे भी कहीं अधिक हैं - आप परमेंश्वर की महिमा की छवि को धारण करते हैं । जॉन वेस्ली की यह धारणा है कि दुष्ट - नीचतम् मनुष्य में भी परमेश्वर की महिमा की छवि के कुछ न कुछ अंश पाए जाते हैं ।

स्वयं को हमेशा भला-बुरा, दोषी आदि कहने के बजाय क्यों न प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर को इस बात का धन्यवाद दें कि आप के जीवन में कुछ अंशतक ही सही, परमेश्वर की महिमा के आप भी भागीदार हैं ।

3. इस सप्ताह की प्रार्थना - भक्ति के अवसर पर ''सिद्ध प्रेम की प्रार्थना'' विषय को चुनिए । पहले अध्याय के अन्त से उद्धरण प्रस्तुत करें, और चार्ल्स वेस्ली के गीत को भी जो इस अध्याय के अन्त में प्रस्तुत किया है, उसका भी सन्दर्भ दें ।

"सदा मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।"
- उत्पत्ति 17 : 1.

3

सिद्धता की ओर

मसीही सिद्धता के सिद्धान्त की जड़े पुराने नियम में कोई भी सिद्ध नहीं है।

इसे ज़ोर से पुकार कहें, और किसी भी श्रोता - मण्डली में उपस्थित सभी उपस्थित श्रोता इस स्वीकार करेंगे। आजीवन वे अपनी नैतिक असफलताओं को मानने से अस्वीकार करते आ रहे हैं - इस सांसारिक उक्ति को, "कोई भी सिद्ध नहीं है।"

पर यह धारणा बाइबल से नहीं आती। पवित्र वचन परमेश्वर के लोगों की सिद्धता को घोषित करने में लज्जित नहीं होते। परन्तु उत्पत्ति, मत्ती, और इफिसियों इत्यादि के लेखकों का क्या आशय है जब वे सिद्धता को एक स्तर मान कर चलते हैं ?

जहांतक पवित्रता की शिक्षा का सन्दर्भ है, मसीही पवित्रता का सिद्धान्त उत्तम रीति से पुराने नियम के मूल से समझा जा सकता है।

कुछ समय पूर्व कलीसिया की एक सभा ने इस प्रकार विचार व्यक्त किया है, "मसीही सिद्धान्त के अति आवश्यक तत्त्व सर्वप्रथम यहूदियों की भूमि पर विकसित हुए। यदि इन्हें उसकी भूमि से निर्मूल कर दिया जाए तो, आधारभूत विचारपूर्ण नहीं समझे जा सकते।" यह बात सिद्धता के सन्दर्भ में पूर्ण रूपसे सत्य है। किंग जेम्स संस्करण पुराने नियम के में एक दर्ज़न से अधिक सिद्धता के लिए अनुवाद किए गए हैं। उनके विभित्र अर्थों का सन्दर्भ तत्कालीन समय के अन्तर्गत उन व्यक्तियों के जो अपने समय की नीति - संहिता के अनुसार सोचा करते थे, उन्होंने जो आदेश परमेश्वर ने अब्राहम को दिया, उसका आज्ञापालन किया : "सदा मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा" (उत्पत्ति 17 : 1)।

पुराने नियम का अध्ययन बिना पूर्वाग्रह के इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि आत्मिक सिद्धता - परमेश्वर की दृष्टि में दोषरहित और हृदय की सच्चाई, जीवन में नैतिकता का समावेश - जैसा कि हीब्रू - धर्मपरायणता में निहित है, ऐसा उपेक्षित है । यह धारणा सिद्धता के सन्दर्भ में नये नियम की शिक्षा का मूल है । और सिद्धता की यही धारणा जो कि पूर्वी धर्मनिष्ठा के महान संतों और गुरुओं ने अपनी रचना में अभिव्यक्त की है, यही धारणा रोमन कॅथलिक सम्प्रदाय में भी पाई जाती है, वहीं से प्राटस्टंट समुदाय में निरुपित हुई, जिसे हम जॉन वेस्ली की शिक्षा विचार में भी पाते हैं -

आइए पुराने नियम में उपलब्ध इस विशेष मत की व्याख्या करें जो कि हमारा वेस्ली - विश्वास है ।

पवित्रता और सिद्धता

जब पवित्रता और सिद्धता शब्दावलियों का प्रयोग महिमा के अनुभव को समझाने के लिए किया जाता है, पुराने नियम में प्रयुक्त ये दोनों शब्दावलियाँ वास्तव में महिमा के प्रसंग में दो भिन्न दृष्टिकोणों को अभिव्यक्त करती हैं । जॉर्ज एलन ठरनर ने इस प्रकार समझाया है, "चूँकी ये शब्दावलियाँ "पवित्रता" से संबंधित हैं, फिर भी यहोवा और मानव के बीच के अन्तर पर ज़ोर देती हैं, जो कि शुद्धता के माध्यम से पूरी की जा सकती हैं, जो 'सिद्धता' से संबंधित हैं, वे मानव के परमेश्वर के साथ के संबंध हैं और परमेश्वर के साथ सहभागिता की संभावना भी है"[1].

आधुनिक संस्करण अनेक हीब्रू शब्दों का अनुवाद जो कि किंग जेम्स संस्करण में "सिद्ध" शब्द के लिए किया गया है यथा, दोषरहितता, सम्पूर्ण, निष्कपट, (सच्चा) खरा, अंग्रेजी शब्द "परफॅक्ट" के अर्थ को भ्रमित न करने के विचार से जो यह बताता है कि हम महिमा की स्थिति को उस समय तक समझ नहीं पाएंगे जब तक कि हम स्वर्ग में प्रवेश नहीं करते । ये सजातीय शब्दावलियाँ जिन्हें जॉन वेस्ली ने "सिद्धता" के विषय में वचन के आधार पर विश्वास किया, हमें समझने में हमारी सहायता करती हैं ।

प्रासंगिक सिद्धता

केवल पाँच अवसरों पर सिद्ध शब्द, परमेश्वर के प्रसंग में मुख्य रूप से प्रयुक्त किया गया है (व्यवस्थाविवरण 32 : 4; 2, शमूएल 22 : 31; अय्यूब 37 : 16; भजन संहिता 18 : 30; 19 : 7) । केवल परमेश्वर ही पूर्णरूप से सिद्ध है; हम तो प्रासंगिक रूप में "सिद्ध" कहे जा सकतें हैं, जब हम उसके साथ चलते हैं - "परमेश्वर की उपस्थिति" में चलते हैं, पूरी निष्ठा और निष्कपटता के साथ "हनोक परमेश्वर के साथ - साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे

उठा लिया'' (उत्पत्ति 5 : 24) । और ''विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और उसके उठाए जानेसे पहले उसकी यह गवाई दी गई थी, कि उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया है'' (इब्रानियों ।। : 5) । नूह के विषय में हम पढ़ते हैं ''यहोवा की अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही ... नूह धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था, और नूह परमेश्वर ही के साथ - साथ चलता रहा'' (उत्पत्ति 6 : 8-9) ।

यहाँ दो बातों पर अवश्य ध्यान दिया जाये । पहली बात, केवल ''परमेश्वर के साथ-साथ'' नूह और अन्य हीब्रू ''सिद्ध'' थे । दूसरी बात, यह सिद्धता तुलनात्मक रूप में नैतिक स्तर पर उनकी पीढ़ी - परम्परा के प्रसंग में थी । उसके पड़ोसियों की तुलना में, नूह एक ''धर्मी'' पुरुष था । परन्तु परमेश्वर के द्वारा जांचा जाने के बाद, अर्थात् परमेश्वर के सिद्धता के स्तर - नियम के आधार पर. उसमें अनेक त्रुटियाँ पाई गई (जिस प्रकार हम में पाई जाती हैं) । हम नाशवान प्राणियों की दृष्टि में सिद्धता हमेशा हमारी सीमित समझ के अनुसार होती है, क्योंकि हमारी परमेश्वर के नियम के विषय में समझ प्रासंगिक, आनुपातिक होती है ।

जॉन वेस्ली के सिद्धान्त को स्पष्ट करते हुए कॉलिन विलियम्स ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं : ''जहाँ तक पाप का सन्दर्भ है, जबकि उसे सिद्ध - नियम'' की कसौटी पर कसा जाता है, ऐसी कोई बात नहीं है - विश्वासियों में सिद्धता । पाप के संबंध में यह - ख्रिस्त से पृथकता है, चेतन - अलगाव, और सिद्धता प्राप्त हो सकती है - ऐसी सिद्धता जो चेतन रूप से पृथक न हो, वह ख्रिस्त पर अवलंबित है''[3]

''ईश्वरीय निष्ठा''

''ईश्वरीय निष्ठा,'' इसलिए बिल्कुल उपयुक्त पर्यायवाची शब्द, ''सिद्धता'' के लिए कहा जा सकता है (देखिए य होशू 24 : 14; 2 इतिहास 1 : 12) । अवश्य एक व्यक्ति अपनी दृष्टि में निष्ठापूर्वक गलत हो सकता है और नर्क में जा सकता है ! परन्तु आप अनिष्ठावान् होकर पवित्र परमेश्वर की संगति का आनन्द नहीं ले सकते और यीशु के लोहू से शुद्ध नहीं हो सकते । यह प्रतिज्ञित वरदान अपेक्षा करता है कि हम, ''जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योतिमें चलें ।'' (1 यूहन्ना 1 : 7; देखिए यूहन्ना 1 : 5 - 9)।

वेस्ली के लिए यह निष्ठा एक उपहार स्वरूप थी । 1746 में हुई मॅथडिस्ट अधिवेशन की विज्ञातियाँ स्पष्ट हैं :

प्रश्न : आप निष्ठावान किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो ज्योति में चलता है जैसे परमेश्वर ज्योति है ...

प्रश्न : क्या निष्ठा सर्वेसर्वा नहीं ?

उत्तर : परमेश्वर निष्ठा से सब कुछ देता है, इसके बिना कुछ नहीं

प्रश्न : तब क्या हम निष्ठा को विश्वास का स्तर नहीं देते ? ...

उत्तर : नहीं, ... हम इसे विश्वास के स्थान पर नहीं रख सकते । विश्वास के द्वारा ही ख्रिस्त के गुण आत्मा को प्रदान किए जाते हैं, परन्तु यदि मैं निष्ठावान् नहीं हूँ ये गुण नहीं दिए जाते ।[4]

"ईश्वरीय निष्ठा सिद्धता" के लिए उपयुक्त पर्याय है ।

पौलुस की कुरिन्थियों को दी गई साक्षी पर विचार कीजिए :

"क्योंकि हम अपने विवेक की इस गवाही पर घमण्ड करते हैं, कि जगत में और विशेष करके तुम्हारे बीच हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो शारीरिक ज्ञान से नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था" (2 कुरिन्थियों 1 : 12)

एकमात्र ध्येय

यीशु ने अपने पर्वतीय उपदेश में यह चेतावनी दी थी कि हमें अपनी धार्मिकता दूसरों के सम्मुख व्यवहार में लाते समय सतर्क रहना चाहिए, "मनुष्यों को दिखाने के लिए" (मती 6 : 1) परन्तु हमें उपवास, प्रार्थना केवल परमेश्वर की दृष्टि में ही करें (देखिए 1 : 18 ।" यदि तेरी आँख निर्मल हो तो, तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा । परन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अंधियारा होगा" (मत्ती 6 : 22- 23) ।

"एक आँख" शब्दावलि के विषय रिचर्ड फ़ॉस्टर के पास इसके लिए गहरा ध्वनित अर्थ है : "यह जीवन में एकमात्र ध्येय के संबंध मे तथा उदार निस्वार्थ आत्मा के पक्ष में है । ये दोनों पक्ष इब्रानियों के मन में इतनी घनिष्ठता से संबंधित थीं कि इसे एक उपवाक्य के द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता हैं ।"[5]

जॉन वेस्ली व्याख्या करते हैं, "आंख जो शरीर के लिए है, वही बात ध्येय की आत्मा के लिए है ..., 'यदि आपका एक ही उद्देश्य हो', केवल ईश्वर - केन्द्रित "तेरा सम्पूर्ण शरीर' ... पवित्रता और प्रसन्नता से भरपूर होगा ।"[6] "सिद्ध" मसीही वह है जो, "परमेश्वर की महिमा के लिए सब कुछ करता है ।" (1 कुरिन्थियों 10 : 31)। ध्येय का केन्द्रिकरण सिद्धता की शास्त्रीय परिभाषा है । सोरेन किरकेगार्ड ने इस प्रकार व्यक्त किया है, "ह्रदय की पवित्रता हमेशा शुभ करने की कामना है ।"[7]

आरोपहीनता और सम्पूर्णता

प्रभु यहोवा अब्राहम के सम्मुख प्रगट हुआ और उससे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ, मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा" (उत्पत्ति 17 : 1) ।

मेरे पुराने नियम के प्राध्यापक जे. फिलिप ह्वाट जोर देकर कहते, परमेश्वर इस पद में कह रहे थे, "मेरे समक्ष सत्यनिष्ठा में होकर चल ।" हीब्रू शब्द "तमीम" इस विचारधारा को व्यक्त करता है - "निर्दोष हीनता" साथ ही साथ - सम्पूर्ण, पूरा, जिस में समग्रता का भाव हो ।"[8] दो आधुनिक संस्करणों में "सिद्ध" का अर्थ यही है, जिस के अन्तर्गत यही अर्थ समाहित है । नई अंग्रेजी बाइबल बताती है, "सदा मेरे समक्ष रह और सिद्ध बना रह ।" उसी प्रकार नई यरुशलेम बाइबल में लिखा है, "मेरे समक्ष बना रह, और सिद्ध रह ।" अल शद्दाईकी उपस्थिति में जो कि महिमामय और सामर्थ्यवान है, अब्राहम "सिद्ध" हो सका । सिद्धता परमेश्वर के समक्ष पूर्ण प्रगटीकरण है, कुछ भी दुराव - छिपाव नहीं ।

नये नियम के अन्तर्गत दोष मुक्तता का उल्लेख बहुधा मिलता है ।[9] दूसरों के समक्ष दोषहीनता सिद्धता नहीं है, यह तो परमेश्वर की दृष्टि में आरोपमुक्तता है । परमेश्वर ने हमें ख्रिस्त में होने के कारण चुना है "हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हैं ।" (इफिसियों 1 : 4) । ग्रीक भाषा का शब्द (अमोमॉस) बलिदान से संबंधित शब्द है । एक पशु जिसकी बलि दी जाती थी उसे "पूर्ण" होना अनिवार्य था, बिना किसी "दोष, खोट के" जिसका सम्पूर्ण शरीर हो कुछ भी कमी न हो ।"[10] अमोमॉस मसीही विश्वासियों के लिए होना अर्थात् हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व परमेश्वर को अवश्य बलि चढ़ाया जाये । जैसा कि बार्कले महोदय कहते हैं, "यह (अमोमॉस) हमारे सम्पूर्ण जीवन के अंश के विषय में सोचता है, आनन्द, मनोरंजन, खेल-कूद, पारिवारिक जीवन, व्यक्तिगत संबंध, और इन सभी को इसप्रकार बनाना ताकि ये सभी क्रिया-कलाप परमेश्वर को अर्पित की जा सकें । इस शब्द का यह कदापि अर्थ नहीं कि मसीही अवश्य आदरणीय हो; इसका यह अर्थ है कि वे अवश्य सिद्ध हों ... इसका आशय यह है कि मसीही स्तर सिद्धता के अतिरिक्त कुछ और नहीं ।"[11] और पौलुस हमें इस बात का विश्वास दिलाना चाहता है कि ख्रिस्त ने स्वयं को कलीसिया के लिए दे दिया ताकि उस में न कलंक न कोई दोष हो" (इफिसियां 5 : 27) ।

अन्य महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्द सिद्धता के लिए जो पाया जाता है जो कि 160 बार प्रयुक्त हुआ है, वह है "निष्कपटता"[12]. यह शब्द परमेश्वर और मनुष्यों दोनों ही के सन्दर्भ में जो अपने "मन में निष्कपट हैं" के लिए प्रयुक्त हुआ है (6 बार : भजन संहिता में - 7:10; 11:2; 32:11; 36:10; 64:10; 94:15) । क्रियापद का अर्थ है" प्रसन्न करना, परमेश्वर की दृष्टि में "सीधा और खरा होना ।"[13]

सिद्धता का विरोधाभास

जबकि अय्यूब की पुस्तक अन्यायपूर्ण पीड़ा की समस्या को संबोधित करती है, वहीं यह सिद्धता पर एक निबंध है । इसका आरंभ इस दावे से होता है कि अय्यूब एक खरा और सीधा पुरुष था (सिद्ध) और उस में कोई बुराई नहीं थी, और वह परमेश्वर का भय मानता था'' (अय्यूब 1 : 1)।

यद्यपि शैतान, अय्यूब के खरेपन, निष्कपटता को स्वीकार करता है, वह अय्यूब के उद्देश्य के प्रति अविश्वास प्रकट करता है : क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है ? क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बाँधा ? तू ने तो उसके काम पर आशीष दी है, और उसकी सम्पत्ति देश भर में फैल गई है । परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा'' (अय्यूब 1 : 9 - 11) । तब शैतान की अप्रतिबंधित शक्तियाँ अय्यूब पर बरस पड़ीं । जबकि उसके ''मित्र'' उसके कुकर्मों पर आक्षेप करने लगे (अन्यथा, परमेश्वर उसे दण्ड क्यों देता ? यह उसके मित्रों का तर्क था) अय्यूब ने परमेश्वर में अपनी अखण्डता और निष्ठा बनाई रखी । यद्यपि उसने ऐसा अनुभव किया कि परमेश्वर की उपस्थिति से जब कि वह शैतान की परीक्षा और कष्टों से गुज़र रहा था वंचित कर दिया गया है, वह उपेक्षित कर दिया गया है । (23 : 1 - 10) । तथापि वह कह सकता था. ''उसकी आज्ञा का पालन करने से मैं नहीं हटा, और मैंने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे'' (अय्यूब 23 : 12) । शैतान गलत था; अय्यूब का प्रेम यह कह सकता था, ''वह मुझे घात करेगा, फिर भी मैं अपनी चाल - चलन का पक्ष लूँगा'' (13 : 15) । वह निस्सन्देह सिद्ध मनुष्य था ।

फिर भी, जब उसने परमेश्वर को अपनी उत्कृष्ट पवित्रता में देखा, अय्यूब अवाक् रह गया, वह निःशब्द सा रह गया । तब वह केवल यह कह सका : ''मैंने कानों से तेरा समाचार सुना था, पर अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं; इसलिए मुझे अपने ऊपर घृणा आती है, और मैं धूलि और राख में पश्चाताप करता हूँ'' (42 : 5 - 6) । अय्यूब की सिद्धता का यह अन्तिम प्रमाण उसकी मूर्खता और त्रुटियों की स्वीकृति है । इस विरोधाभास का सम्पूर्ण अनुभव चार्ल्स वेस्ली की भावनाओं के अन्तर्गत निहित है,

प्रत्येक क्षण, हे प्रभु, मुझे तेरी
मृत्यू की उत्कृष्टता की आवश्यकता है ।
आपकी आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति

आधारस्तंब

1. **ईश्वरीय निष्ठा**

एरमा बॉमबॅक ने मेरिडिथ कॉलेज जो कि रेले में उत्तरी कॅरोलाइना में स्थित है, अपने दीक्षान्त भाषण में कहा, ''कभी भी प्रतिष्ठा और सफलता के विषय में मतिभ्रम न हों । मॅडोना एक है; मदर टॅरिसा दूसरी है ।''

पौलुस ने लिखा, ''हम अपने विवेक की इस गवाही पर घमण्ड करते है ... हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो शारीरिक ज्ञान से नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था'' (2 कुरिन्थियों 1 : 12) । सेमुयेल गोल्डविन ने कहा, ''सफलता का रहस्य ईमानदारी है । एक बार जब आप इससे कपट करते हैं, आपको इसका परिणाम भुगतना पड़ता है ।''[14].

मसीही सिद्धता का एक आधारस्तंब ईश्वरीय निष्ठा है । बीच का अन्तर

मॅडोना और मदर टॅरेसा

पौलुस और सेमुएल गोल्डविन

इसे व्यक्त करता है कि ईश्वरीय निष्ठा और उसका विपक्ष जो कि वास्तविक जीवन में होता है; यही सबसे मुख्य अन्तर है ।

2. **समग्रता, आरोप हीनता, और सम्पूर्णता** - बाइबल के आधार पर दूसरा आधारस्तंब है ।

जीन - जॅक्स रूसो, जो एक स्विस - फ्रांस का नैतिकवादी था, उसने अपनी प्रसिद्ध रचना, ''एमिल'' में बाल-शिक्षण के विषय में लिखा है । इस दिशा में उसका माता-पिता का दर्शन यह था कि शिशु को अच्छे वातावरण में विकास करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी जानी चाहिए तथा उसे भ्रष्ट प्रभाव से सुरक्षित रखा जाना चाहिए ।

जबकि रूसो महोदय की उनकी प्रसिद्ध रचना के कारण बहुत प्रशंसा की गई, शायद ही कोई यह जानता हो कि जिस बात का उसने प्रचार किया वह उस से भिन्न प्रकार का जीवन व्यतीत करता था, उसकी कथनी और करनी में आकाश -पाताल का अन्तर था । सत्रह वर्ष पूर्ण उसकी पुस्तक एमिल के प्रकाशन जो कि 1762 में प्रकाशित हुई । रूसो ने एक हॉटेल में काम करनेवाली सेविका को रखा, जिसका नाम थेरेसा ले वॅसेट था जो कि आजीवन उसके साथ रही, और उसके पाँच बच्चों को जन्म दिया और उनके जन्म के

तुरन्त बाद उन्हें दूर एक मातृ-सेवा -सदन में रख दिया करता था। 1768 में निदान उसने थेरेसा से विवाह कर लिया, परन्तु इस से पूर्व उसने अपने पाँचों बच्चों को अपने से और उनकी माँ से अलग कर चुका था । निष्ठा, ईमानदारी मसीही सिद्धता का एक वांछनीय आधार है । रूसो ने इसे सर्वथा विरोधी आवरण दिया । ऐसे किसी मसीही के विषय में सोचिए जिसने मसीही सिद्धता को अपने जीवन का आधार बनाया अथवा आज भी मसीही सिद्धता को जीवन का आधार मानकर जीवन यापनकर रहा है ।

3. **हृदय का एकमात्र ध्येय -** किसी एक वस्तु की इच्छा करना - और ध्येय की पवित्रता को बाइबल की सिद्धता का आधार बनाना । इस अध्याय का पुनः अध्ययन करके देखिए कि यह अध्याय वास्तव में क्या बताना चाहता है, इस विषय के संबंध में उसकी क्या भावना है । आपके अवलोकन, पठन, और स्मरण में जीवन की वास्तविक परिस्थितियाँ सकारात्मक एवं नकारात्मक उदाहरणों के विषय में विचार कीजिए, जो हृदय की एक ध्येयता और इसके प्रतिकूल भेद को स्पष्ट करते हैं ।

आत्मिक सीढ़ियाँ

केलिफोर्निया राज्य ने 200 हिंसक अपराधियों के अपराधों का अध्ययन किया । बिना किसी अपवाद के, सभी अपराधियों ने यह स्वीकार किया कि वे सच्चे भले लोग थे । किसीने भी अपने ऊपर अपराधी होने की बात स्वीकार की ।

हो सकता है कि हम किसी मनोवैज्ञानिक को जो हमारी परिस्थिति का अध्ययन कर रहो, उसे मूर्ख बनाएँ, परन्तु हम स्वयं को शायद ही ऐसा कर सकें, और स्मरण रहे हम परमेश्वर को कभी मूर्ख नहीं बना सकते ।

भजन संहिता 139 : 23-24 को पढ़िए और परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि वह आपको ईश्वरीय - निष्ठा, समग्रता, और ध्येय की पवित्रता के गंभीर अनुभवों की ओर आप का मार्गदर्शन करें ।

कार्य-विधि के साधन

1. "सिद्ध प्रेम की प्रार्थना" का निरन्तर प्रयोग करते रहें, जिसका उल्लेख प्रथम अध्याय के अन्तर्गत किया गया है । अगले सप्ताह में इसका संकलन करें : अपने भोजन की मेज़ पर प्रत्येक भोजन पर इसे आशीष प्रार्थना के रूप में कहें, चाहे आप अकेले भोजन कर रहे हों अथवा किसी अन्य व्यक्ति के साथ इसे अवश्य दोहराइए ।

2. चार्ल्स वेस्ली द्वारा लिखित इस गीत के शब्दों को अपना दिन आरंभ करने और समाप्त करने पर गा कर अथवा पढ़कार करें ।

हमारी धन्य आशा का आहवान क्या है
परन्तु आन्तरिक पवित्रता ?
मैं इसके लिए यीशु की ओर निहारता हूँ,
मैं शान्त मन से इसके लिए राह देखता हूँ ।
मैं उस समय तक प्रतीक्षा करता हूँ जब तक वह मुझे छूकर
शुद्ध नहीं करता,
जीवन और सामर्थ्य मुझे क्या दें,
मुझे वह विश्वास दो जो मुझ में से पाप को निकाल दे
और हृदय को शुद्ध करे ।

यह उद्धार का प्रिय अनुग्रह है,
यह सभी पापियों को निःशुल्क प्राप्य है;
अवश्य यह मेरे भीतर स्थान पायेगा,
मैं तो सभी पापियों में प्रमुख हूँ ।

अपने वचन के अनुसार इसे होने दे !
मुझे समस्त पापों से मुक्त कर,
मेरा हृदय अब तुझे प्राप्त करेगा प्रभु,
आ प्रभु, मेरे प्रभु, मेरे मन में आ !

"तू परमेश्वर अपने प्रभुसे अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख ।"
बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है ।

- मत्ती 22 : 37-38

4

प्रेम - आज्ञा

यदी आप वास्तव में मसीही होना चाहते हैं - न केवल नाम मात्र के परन्तु सच्चाई में - आप को अवश्य इस सत्य को समझना है और वचन के प्रेमादेश को जानना है :

"तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख ।" बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है । और उसी के समान यह दूसरी भी है :" तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख ।" ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार है ।" (मत्ती 22 : 37 - 40) ।

यह आज्ञा न केवल बाइबल का मुख्य धर्म है परन्तु यहूदी - मसीही नैतिकता का सार तत्त्व भी है । और तो और, एक "वचनबद्ध - प्रतिज्ञा" के रूप में जॉन वेस्ली की मसीही सिद्धता से आशय है ।

मूसा : प्रेम आज्ञा, प्रथम भाग

"हे इस्राएल, सुन यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना ।"

(व्यवस्थाविवरण 6 : 4 - 5) ।

"हे इस्राएल सुन ।" यह प्रेमाज्ञा सामान्य अर्थ में मानवता को नहीं, परन्तु परमेश्वर के बचाए हुए लोगों को संबोधित की गई है, जैसे कि दस आज्ञाओं की

प्रस्तावना यह स्पष्ट करती है : "मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जिसने तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है । तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना ।" (निर्गमन 20 : 2 - 3) ।

इस्राएल को अनुग्रह से मुक्त करने के बाद परमेश्वर उन पर आराधना का सारभौम अधिकार स्थापित करता है ।

अतः मूसा को दिया हुआ वचन अवश्य अनुग्रह के वचन के रूप में देखा जाना चाहिए और दस आज्ञाएँ उसी अनुग्रह के प्रति इस्राएल का उपयुक्त आज्ञा-पालन है।

यह सच्चाई मूसा के नियम के पालन का प्रमुख अंश है : "इसका यही कारण है कि यहोवा तुम से प्रेम रखता है ... दासत्व के घर से छुड़ाकर निकाल लाया" (व्यवस्था विवरण 7 : 8) । इसलिए, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और सारे प्राण से प्रेम रख" (मत्ती 22 : 37) ।

प्रारंभ ही से प्रेम की प्रतिज्ञा पवित्रता का सार-तत्त्व रहा है : मानवीय प्रेम, परमेश्वर के उद्धारक प्रेम के प्रति आज्ञा-पालन का मूल आधार का कारण है । इस सच्चाई को न स्वीकार करना (सच्चाई से वंचित रहना निश्चय ही प्रेम हीनता का प्रतीक है ।

अपवित्र हृदय की स्वमूर्तिपूजा अनेक देवी-देवताओं को उत्पन्न करती है, जिनके सम्मुख हम मूर्खतापूर्ण नतमस्तक होकर स्वयं का सर्वनाश कर डालते हैं ।

परमेश्वर के द्वारा आधारभूत आज्ञापालन का आदेश, इस बात की मान्यता का हमारे हृदयों और जीवनों पर सम्पूर्ण दावा है "तू अपने लिए कोई मूर्ति न बनाना ... तू उनको दण्डवत् न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर जलन रखनेवाला ईश्वर हूँ" (निर्गमन 20 : 4-5) । क्योंकि परमेश्वर ही एकमात्र प्रभु है, हमे अनिवार्य रूप से केवल उसी की उपासना करनी है ।

यद्यपि, वॉलेस हेमिलटन अनेक मसीहीजनों के लिए कहते हैं, "हम अभीतक एकेश्वरवादी नहीं हैं, केवल सिद्धान्त के रूप में कहे जा सकते हैं ... । हम एक ईश्वर में विश्वास तो करते हैं, परन्तु अनेक देवताओं के प्रति अपनी स्वामि - भक्ति दर्शाते हैं ... । सब से महान प्रश्न तो प्रभुता का है ... । हमारी सर्वप्रथम, निष्ठा किसके प्रति है ? हम व्यर्थ का आडम्बर दिखाते हुए - "एक परमेश्वर के प्रति" । परन्तु व्यावहारिक रूप में हम, "अनेक देवताओं के प्रति" अपनी स्वामि-भक्ति रखते हैं ।

लूथर, मूर्तिपूजा के विषय विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि मूर्तिपूजा एक ऐसा पाप है जो किसी भी हृदय का हो सकता है, जिस पर परमेश्वर का एक मात्र नियंत्रण नहीं होता, अर्थात् अन्य देवताओं का भी नियंत्रण होता है । जिस हृदय में गुप्तरीति से छिपी हुई मूर्ति पूजा की भावना होती है, ऐसा मन अशुद्ध होता है जिस में अनेक

मूर्तियाँ विद्यमान होती हैं - अपवित्र अभिलाषाँ, लालच, सांसारिक कामनाएँ इत्यादि, जिनके सम्मुख हम मूर्खतापूर्ण होकर नत-मस्तक होते हैं और अपना सर्वनाश करते हैं । प्रभु, क्या ऐसा तो नहीं ? "हे परमेश्वर, मुझे जांचकर जान ले ! मुझे परखकर मेरे विचारों का जान ले" (भजन संहिता 139: 23) ।

जो अतिप्रिय मूर्ति जिसे मैं कभी जाना है,
वह मूर्ति चाहे जो हो,
मेरी सहायता कर कि मैं उसे तेरा सिंहासन से उखाड़ फैकूँ
और मात्र तेरी ही आराधना करूँ ।
- विलियम कॉडपर

प्रेम - आज्ञा, दूसरा भाग

यीशु ने अपनी आज्ञा के संकलन में एक महान आज्ञा को भी संकलित किया - इसके अन्तर्गत उसने लैव्य - व्यवस्था में उद्धृत पवित्रता - संहिता - संबंधित एक पद का संकलन किया, "एक - इसरे से अपने ही समान प्रेम रखना" 'लैव्यव्यवस्था 19 : 18)

यह प्रेम आज्ञा का दूसरा भाग वही पहले भाग की तरह अपना महत्त्व रखता है। सत्य बात तो यह है कि यदि आप अपने पड़ोसी से प्रेम नहीं करते, तो आप अपने परमेश्वर से प्रेम कर ही नहीं सकते । "और उसमें से हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे" (1यूहन्ना 4 : 21)। प्रेम - आज्ञा एक ही आज्ञा है, परन्तु दो आयामों में ।

अमर्यादित स्व-प्रेम हमें अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम करने के प्रति बाधित करता है, जिस से परमेश्वर ने अनिवार्य ठहराया है । मेरे प्रथम कालेज के प्रिंसपल महोदय ने जिसका नाम ए. के. ब्रेकेन था, चॅपॅल में एक दिन कहा, "कई लोक ऐसा प्रतीत होता है कि वे यह कभी नहीं जान पाते कि यह संसार मुख्य रूप से दूसरे लागों से भरा पड़ा हैं ।"

जब तक परमेश्वर मेरे स्वार्थमय कठोर आवरण को चूर-चूर नहीं करते और मुझे दूसरों से मेरी ही तरह प्यार करने के लिए स्वतंत्र नहीं करते, मैं कदापि नये नियम के धर्म के स्तर के अनुरूप जी नहीं सकता । वे "अन्य" लोगों में उनका भी समावेश होना अनिवार्य है जो मेरे शत्रु भी है ।

पर्वतीय उपदेश का मुख्य तत्त्व इन शब्दों में निहित है "अपने बैरियों प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो । जिस से तुम अपने स्वर्गिक पिता की सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और

धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है ।

इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गिक पिता सिद्ध है'' (मत्ती 5 : 44 - 45, 48) ।

जिस सिद्ध प्रेम का आदेश यीशु देता है वह संवेदना नहीं है, जिसे हम आदेश नहीं दे सकते । यह तो क्षमा करनेवाली आत्मा है, दूसरों के लिए शुभ आकांक्षा है जो किसी आघात् और शिकायत किसी भी प्रकार के रोष-क्रोध को बढ़ावा या प्रश्रय नहीं देती । यह तो यीशु की आत्मा है, जिसने उन लोगों के लिए प्रार्थना की जो उसे सलीब पर चढ़ा रहे थे, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं ।'' (लूका 23 : 34) ।

इसी प्रकार के प्रेम का आशय जॉन वेस्ली का हृदय की पवित्रता के सन्दर्भ में है । उन्होंने अपने प्रवचन में, ''उद्धार का वचन-मार्ग'' में सम्पूर्ण पवित्रीकरण की परिभाषा इसप्रकार व्यक्त की है, ''पापरहित प्रेम (निष्पाप प्रेम) ऐसा हृदय जिसमें प्रेम छलछला रहा है, जो पूर्ण रूप से आत्मा - पूरित है ... । ऐसा प्रेम कितनी स्पष्टता से स्वयं को अभिव्यक्त करता है ! कितनी दृढ़ता से यह स्थिर करता है कि वह समस्त पापों से बचाया गया है !'' वेस्ली स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं, ''जबतक प्रेम सम्पूर्ण मन पर अधिकार करता है, उस समय तक क्या पाप के लिए उस में कोई स्थान है ?''[2]

ऐसी अवस्था में तब प्रेम आदेश देता है : कि हम परमेश्वर को हृदय से अखण्ड भक्ति दें ताकि हम अपने समस्त मानवीय संबंधों में दूसरों के प्रति कल्याण, क्षमा, और हमारे स्वर्गिक पिता का दयामय प्रेम बाँट सकें ।

यीशु : प्रेम आज्ञा की पूर्णता

यीशु ही एक ऐसे सम्पूर्ण उदाहरण हैं जिन्होंने परमेश्वर की विधि के आधार पर प्रेम-आज्ञा का पूर्ण रूप से आज्ञा-पालन किया । वह विधि के साकार - साक्षात् परिचायक थे, न केवल पाप की शून्यता परन्तु सकारात्मक रूप से यह दर्शन कराना कि परमेश्वर से तथा अपने पड़ोसी से स्पष्ट रूप से - व्यावहारिक रूप से प्रेम का क्या अर्थ होता है । यीशु परमेश्वर की विधि - रूप थे - प्रेम का नियम - अवतार - साकार - साक्षात् रूप । धर्मशास्त्री इसे यीशु धार्मिकता का सक्रिय रूप कहते हैं ।

परन्तु परमेश्वर के पवित्र मेमने होने के फलस्वरूप उसने विधि का सम्पादन दूसरे रूप में किया, संसार के समस्त पापों के लिए स्वयं का बलिदान दे दिया । इब्रानियों के नाम पत्र में हमें पढ़ने को मिलता है, ''उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध कर दिया है'' (इब्रानियों 10 : 14) । धर्मशास्त्री उसकी बलिदान की मृत्यू को यीशु की ''सहिष्णु धार्मिकता'' का नाम दिया है ।

उसके निष्पाप जीवन और दूसरों के पापों के लिए स्वयं को बलिदान कर देने के कारण, यीशु ने नयी प्रतिज्ञा का प्रतिपादन किया, जिस के आधार पर हमें पवित्र आत्मा का दान प्राप्त होता है, ''इसलिए कि व्यवस्था की विधि हमे में जो शरीर के अनुसार नहीं, परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए'' (रोमियों 8 : 4)।

प्रेम - आज्ञा को समझने के लिए, हमारे लिए यह अत्यावश्यक है कि हम व्यवस्था और सुसमाचार के मध्य के अन्तर को अपने विचारों में स्पष्ट कर लें। मार्टिन लूथर ने आग्रहपूर्वक कहा कि जो कोई इन दोनों के मध्य के अन्तर को समझने की योग्यता रखता है, वह धर्मशास्त्री है।

अन्तर क्या है ? क्या यह अन्तर पुराने और नये नियम के बीच है ? नहीं, क्योंकि नये नियम में व्यवस्था विद्यमान है। यीशु ने कहा, ''यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ; लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ'' (मती 5 : 17 - 18)। और जैसा कि हम देखते हैं, सुसमाचार पुराने नियम में है।

व्यवस्था वह है जिसे परमेश्वर चाहता है;

सुसमाचार वह है जो वह देता है।

तो फिर, व्यवस्था और सुसमाचार में अन्तर क्या है ? लूथर का मत है, व्यवस्था वह है जो परमेश्वर चाहता है; सुसमाचार वह है, जिसकी वह प्रतिज्ञा करता है और उसे देता है।[3]

इस परिभाषा के अनुसार, सुसमाचार की मुख्य बात यिर्मयाह 31 : 31 - 34 में परिलक्षित है (जिसे इब्रानियों के लेखक ने 10 : 14 के तुरन्त अपने कथन के बाद कही है)। यह महत्त्वपूर्ण अंश निम्नलिखित है :

''परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बांधूँगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है, कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा'' (यिर्मयाह 31 : 33-34)।

उस रात, अर्थात् अपने पकड़वाए जाने से पूर्व यीशु ने प्याला अपने हाथ में लेकर कहा, ''यह वाचा का मेरा वह लाहू है,

जिसे बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमत्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26 : 28)

नई वाचा की तीन गुणात्मक प्रतिज्ञाएँ :

1. सर्वाधिक मूल्यवान प्रावधान इस नई वाचा का जो है वह हमारे पापों की क्षमा यीशु के लोहू के द्वारा है, "तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो'' (इब्रानियों 9 : 14) ।
2. जैसे ही हम अपने पापों से क्षमा किए जाते हैं, "हे पिता कह कर पुकारता है'' हमारे हृदय में भेजा है, (गलतियों 4 : 6; रोमियों 8 : 15 - 16) ।
3. और तो और, तत्क्षण परमेश्वर अपनी व्यवस्था हमारे मनों और हृदयों पर लिखना आरंभ करता है, लूथर महोदय कहते हैं, "विश्वास ही केवल हमें धर्मी बनाता है,'' और व्यवस्था को पूरी करता है, क्यों कि ख्रिस्त की अच्छाई के कारण वह आत्मा आती है, जिस से मन आनन्दित होता है और व्यवस्था को स्वतंत्र करता है जैसा उसे होना चाहिए ।''[4] यह शुद्धिकरण का आरंभ है (1 कुरिन्थियों 6 : 11) ।

परन्तु जब यिर्मयाह यरुशलेम में नई वाचा को घोषित कर रहा था, यहेजकेल इसे और अधिक आधारभूत रूप से घोषित कर रहा था: "मैं तुम पर शुद्धजल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे; ओर मैं तुमको तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा । मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा; तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को माँस का हृदय दूँगा । और मै अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे ।'' (यहेजकेल 36 : 25 - 27)

यहाँ वास्तव में दिव्य हृदय - रोपण की प्रतिज्ञा की गई है ! महान वैद्य हमारे "पत्थर हृदय'' को निकालकर - जिस में स्वप्रेम की उपासना है उसे निकालकर हमें कोमल आज्ञाकारी हृदय - "माँस का हृदय'' देगा जो कि शुद्ध करनेवाली आत्मा के द्वारा हमारे शरीर में निवास करेगा !

यहाँ वास्तव में दिव्य हृदय - रोपण का वचन दिया गया है !

यहाँ यहेजकेल के वचन का अर्थ उस अनुभव को बताना व्यक्त करना है जिसके अनुसार स्वप्रेम का विधान हमें अपनी विरासत में आदम के पतित वंश के अंश होने के क्रम से मिला है - "वह स्वाभाविक आज्ञा -

"उल्लंघन का स्वभाव ।'' ऐसा स्वभाव "स्वाभाविक आज्ञा-पालन'' में परिवर्तित हो जाएगा, जिसे पवित्र लेख की भाषा में पवित्रता कहा जा सकता है''[5]

ऐसा स्वभाव ख्रिस्त के मन का है जिसे रोमियों 811-11 में व्यक्त किया गया है, जिसके आधार पर हम यह गुणानुवाद कर सकते हैं,

मैं हे प्रभु हाँ कहूँगा

तेरी इच्छा और तेरे मार्ग को स्वीकार करूँगा ।

ऐसी सिद्धता कोई सम्पूर्णतावाद नहीं है, जिस में अहम् व्याप्त हो । यह हृदय की प्रवृत्ति जो घोषित करती है,

"हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ" (भजनसंहिता 40 :8) । यह हमें प्रार्थना करने से बाधित नहीं करती, "जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर" (मत्ती 6 : 12, 14-15 को भी देखिए) । क्योंकि जब तक हम जीवित रहते हैं हम हमेशा सिद्ध प्रेम के अभाव में जीवन व्यतीत करते हैं, और इस दिशा में चार्ल्स वेस्ली के साथ यह प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए, "हे प्रभु मुझे प्रत्येक क्षण, तेरी आवश्यकता है / तेरी मृत्यू के वरदान की आवश्यकता है ।" यह कोई स्वर्गदूत तुल्य सिद्धता अथवा सम्पूर्ण सिद्धता है; यह सिद्धता तो सुसमाचार की है जो हमें "व्यवस्था की सिद्ध आवश्यकता" को पूर्ण रूप से प्राप्त करने में सहायता करती है - अथवा प्रेम की सिद्धता को पने में (रोमियों 8 : 4; 13 : 8-10; गलातियों 5 : 14) ।

तो आइए प्रार्थना में सम्मिलित हों : "सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जिसके सम्मुख सभी हृदय प्रकट हैं, सभी इच्छाएँ प्रतीत हैं, और जिससे कुछ भी रहस्य गुप्त नहीं : अपने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से हमारे हृदयों के विचारों को शुद्ध कीजिए, ताकि हम तुझे पूर्णरूप से प्रेम करें और तेरे पवित्र नाम को यथायोग्य महिमा प्रदान करें, हमारे ‍भु ख्रिस्त के नाम में, आमीन ।[6]

आपकी आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति

आधारस्तंब

1 स्वपूजा - केलिफोर्निया के लार्कस्पर में तीन चोरों ने एक कार चुराने का प्रयत्न किया । कार - स्वामी ने उन्हें रंगे हाथ पकड़ लिया । वह चिल्लाया चोर-चोर । वे भाग गए । कार के मालिक ने उनका पीछा किया, उसकी आवाज़ को सुनकर, पुलिस भी चोरों का पीछा करने लगी । ये तीन कार - चोर बचने का भरसक प्रयास करते हुए भागने लगे ताकि बच निकलें । एक दूसरे की सहायता करते हुए वे एक ऊँचाई वाले स्थान पर पहुँचे जो कांटेंदार तारों से घिरी हुई थी । किसी तरह कांटेदार तारों से उलझते, तारां से खरोचें आने के कारण लहूलहान होते दूसरी ओर सुरक्षित कूद गए, पुलिस उनसे कुछ ही मीटर

की दूरी पर थी । पुलिस उन बेतहाशा चोरों को काटेदार बाढ़ से देखकर मुस्कराने लगी । एक पुलिस कर्मी ने कहा, "बधाई हो ।" एक दूसरे पुलिसवाले ने कहा, "तुम लोग सॅन क्विनहिन क्षेत्र में प्रवेश कर गए हो।"

यह कहानी एक दृष्टान्त स्वरूप जीवन की है उनके लिए जो स्वपूजा में अन्धे हो गए हैं । अनुग्रह को तिरस्कार करते हैं, वे धन - ऐश्वर्य और सत्ता के पीछे भाग रहे हैं । वे उस स्थान में जहाँ वे रहना नहीं चाहते, खून - खरोंचे से लहू लहान हैं । वे अपनी ही कुवासनाओं, पापमय इच्छाओं के शिकार बन जाते हैं । क्या कभी आप अथवा कुछ समय पूर्व किसी कारावास में गए हैं ? यह अध्याय स्वपूजा के कारावास से मुक्त होने के विषय में क्या कहता है ?

2. **प्रेम - आज्ञा, प्रथम भाग**

परमेश्वर से सभी वस्तुओं ओर व्यक्तियों से अधिक प्रेम करना बाइबल का स्पष्ट सन्देश है ।

इस सप्ताह के बाइबल अध्ययन हेतु इस अध्याय में संकलित वचनों को इस अध्ययन के सन्दर्भ में पढ़िएः

मत्ती 22 : 37 - 40.

व्यवस्थाविवरण 6 : 4-5; 7 : 8

निर्गमन 20 : 1-5

यिर्मयाह 31 : 33-34

3. **प्रेम - आज्ञा, भाग दो**

हमें अपने पड़ोसी के साथ अपने समान अवश्य प्रेम करना चाहिए । इस अध्याय में लेखक के विचारों को दूसरों से प्रेम करने के सन्दर्भ में पढ़िए ।

इन पर पुनर्विचार कीजिए :

मत्ती 5 : 44 - 48.

मत्ती 22 : 39 - 40.

लैव्यव्यवस्था 19 : 18.

1 यूहन्ना 4 : 21.

4. **यीशु, आदर्श और मुक्तिदाता**

इस आधारस्तंब को इस अध्याय के निम्नलिखित वाक्यांशों को प्रकाशित करने के लिए स्थापित कीजिए :

"यीशु ही एकमात्र ऐसे हैं जिन्होंने प्रेम आदेश (आज्ञा) का पूर्ण रूप से पालन किया है ।"

"संसार मुख्य रूप से दूसरों से भरा पड़ा है !"

"अपने शत्रुओं से प्रेम करो, और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो" ।

"सिद्ध प्रेम ... कोई अनुभूति नहीं ... यह क्षमा करने की आत्मा है ... जो हमारी चोटों को विस्मृत करती है ... अथवा हमारे क्रोध को शान्त करती है।'[1]

यह स्वप्रेम का स्वभाव ... आत्मा की स्वभावानुकूल प्रवृत्ति के द्वारा पदच्युत कर दिया जाएगा ... जिसे पवित्रता का नाम दिया जाता है ।"

"सुसमाचार की सिद्धता"

आत्मिक सीढ़ियाँ

1. जब एक व्यक्ति का मन - परिवर्तित हो जाता है, पवित्र आत्मा अपना कार्य व्यक्ति के मन में करना आरंभ करता है, इस उद्देश्य के लिए ताकि पाप को मन से हटा दे अथवा पाप के शेष अंगों को हटाकर शुद्ध करें और मन में दिव्य प्रेम को जागृत करें । परमेश्वर इस कार्य में निष्ठावान् है, लोगों के हृदयों को वह पढ़कर अनुग्रह से पवित्र करता है । कुछ विषयों में, पवित्रीकरण का अनुग्रह कई वर्षोंतक कार्य करता है, अन्य विषयों में यह समय कुछ सप्ताहों अथवा कुछ दिनों में भी हो सकता है । यह कितनी शीघ्रता से सम्पन्न होता है, यह महत्त्वपूर्ण बात नहीं । सिद्धता निरन्तर कार्यशील रहे, यही मुख्य बात है । परमेश्वर यह जानता है कि आप कब तैयार हैं । जब उसका कार्य आपके मन में उस स्थिति में पहुँचा दे जहाँ आप परमेश्वर से अपने पूरे मन, आत्मा, हृदय, और सामर्थ्य से प्रेम करने योग्य हो जाते हैं, जॉन वेस्ली के अनुसार परमेश्वर फिर दूसरी बार कहेगा, "तू शुद्ध हो ।" (इन उपदेशोंपर दृष्टि डालें "विश्वासियों का पश्चाताप और "आत्मा के प्रथम फल)"

2. अपने समान दूसरों से प्रेम करना एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आत्मिक सीढ़ी है । इस विषय पर जॉन वेस्ली के विचारों पर ध्यान केन्द्रित करें :

   "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर ।" तू प्रेम कर; -

   तू उसे उत्तम भलाई की इच्छा से गले लगा, स्वच्छ, निर्मल और निश्चल मन से गले लगा, मन से समस्त कुछ इच्छाओं, सब बुराइयों को जो तुझे रोकती हैं उन्हें दूर कर उसके लिए सभी संभव अच्छाई कर । तेरा पड़ोसी; वह जो न केवल तेरा मित्र है, तेरा सगा-संबंधी है ... न केवल जो गुणी है, जिससे तेरी मित्रता है, जो तुझसे प्रेम करता है, जो तेरी दया का प्रतिदान करता है; परन्तु

प्रत्येक मानव जाति, प्रत्येक आत्मा से जिसे परमात्मा ने रचा है, उन्हें जिन्हें आप जानते है कि वे दुष्ट हैं, आभारहीन हैं, अधन्यवादी हैं ... जो आपपर अत्याचार करते हैं उन्हें भी आप अपने ही समान प्रेम करें, उसी उमंग से बिना थके बिना उसमें कोई दोष दिखाए, उसे किसी प्रकार दुःख दिए - शारीरिक अथवा आत्मिक वेदना पहुँचाए ।[7]

उपर्युक्त प्रेम - विवरण अर्थात् दूसरों से अपने समान प्रेम करना सक्रियता का उत्तम उदाहरण है । इस दिशा में हमें -

गरीबों को देना है; भूखों को अपना भोजन खिलाना है । नंगों को वस्त्र देना है ... अपरिचित को आश्रय देना है; जो कारावास में हैं उन्हें सहायता - सामग्रियाँ पहुँचानी हैं । रोगियों की सेवा-सुश्रुषा करनी है, उन्हें चंगाई देने के लिए अपनी ओर से जो भी बन पड़े जो परमेश्वर ने आप को दिया है, उनकी इस रीति से सहायता करना, न कि किसी चमत्कार के द्वारा, परन्तु परमेश्वर आप को जो समय - समय पर आशीष से भरपूर करता है । आप पर वह आशीष बनी रहे जबकि आपका सर्वनाश होने पर ही था, हमारी सारी आवश्यकताएँ आप पर ही संभव हैं, हम आप पर ही आश्रित हैं । जो कष्ट में हैं उनकी रक्षा करें । जो अनाथ हैं उनके हितों की रक्षा करें, और जो विधवा हैं उनके मन हर्षित होकर गा उठें ।[8]

हम में से अधिकांश वेस्ली के स्तर को पढ़ रहे हैं, वे प्रार्थना करने के लिए प्रेरित हो रहे हैं, अपनी गवाही देने के लिए नहीं । आपका क्या विचार है ? क्या आप स्वयं को भुला देने के जीवन के लिए तत्पर हैं ?

कार्यसाधन -

1. वस्तु - सूची प्रश्नोत्तरी

   यह कैसे संभव हो सकता है कि जो लोग अपने काम - धन्धों में व्यस्त हैं, वे कहें कि मैं सब वस्तुओं और सब लोगों से अधिक परमेश्वर से प्रेम करता । करती हूँ ?

1) बहुत संभव है । 3) कुछ सीमा तक संभव है ।
2) संभव है । 4) कोई संभावना नहीं ।

a. यदि आप किसी अत्याचारी शासन के द्वारा पीड़ित किए जाए क्योंकि आप परमेश्वर से प्रेम करते हैं, क्या आपको अपराधी घोषित करने के पर्याप्त प्रमाण होंगे ?

b. यदि आपके कोई समीपी संबंधी से पूछा जाए कि आप सबसे अधिक, संसार में किससे प्रेम करते हैं, उनका उत्तर क्या होगा ?

c. यदि मेरे जीवन में परमेश्वर के साथ मेरी भक्ति के बीच कोई स्पर्धा उपस्थित हो, यह है ...
यदि आप उपर्युक्त प्रश्नों के सकारात्मक उत्तर दें, तो आप उसके अनुग्रह के अद्‌भुत कामों के लिए जो उसने आपके मन में किए हैं, तो परमेश्वर की स्तुति के लिए समय निकालें ।

2. इस भजन को अपनी प्रार्थना बनाइए :

ओ महिमावान् प्रेम की सिद्ध आशा !
यह मुझे ऊपर की बातों के लिए उठाती है;
यह मुझे गिद्ध के पंखों का परिधान देती है;
यह मेरी आनन्दमय आत्मा को स्वाद देती है
और मुझे कुछ क्षणों के लिए तृप्त करती है
यीशु के महायाजक और राजाओं के राजा की दावत में
लिए चलती है ।
अब उस महान आशा में मैं आनन्दमग्न हूँ,
मैं उस पर्वत की शिखर पर खड़ा हूँ
और नीचे की सारी भूमि को देखता हूँ :
दूध की नदी और मधु उठ रहे हैं,
और स्वर्ग के सब फल
अनन्त संख्या में लग रहे हैं ।
काश मैं एक क्षण में वहाँ पहुँच सकता ।
यर्दन के इस पार कोई रोक नहीं सकता,
पर अब भूमि इस भूमि पर
मेरे जीवन के वर्ष समाप्त हो रहें हैं;
सारे दुःख, और पाप, और सन्देह, और भय,
कोलाहलमय बियाबान ।
अब, ओ मेरे यहोशु मुझे भीतर ले ।
अपने बैरी, पाप के जनक को बाहर खदेड़ दे
सांसारिक मन को निकाल दे;
तेरी मृत्यु ने मुझे पाप से खरीद लिया है !
और ओह ! सभी पवित्र लोगों के साथ
मुझे अपरिमित प्रेम दे दे ।[९]

'परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ कि शैतान के कामों को नाश करे

1 यूहन्ना 3 : 8.

5

ख्रिस्त विजेता हमारा महान मुक्ति दाता

ख्रिस्त किस कारण स्वर्ग से पृथ्वीपर अवतरित हुए ?'' इरेनियस, जो कि प्रारंभिक कलीसिया के प्रमुख प्रभावशाली अगुवों में थे, पूछते हैं । उत्तर : ''ताकि वह पाप का नाश करे, मृत्यु पर विजयी हों, और मनुष्य को जीवन दे ।''[1]

प्रारंभिक कलीसिया के मुख्य तत्त्व विश्वास की ओर जाते हुए, वे फिर कहते हैं, ''हमारे प्रभु ने शक्तिशाली मनुष्य को बाँध दिया और निर्बल को स्वतंत्र कर दिया, और पाप का उन्मूलन कर के अपनी सृष्टि का उद्धार किया ।''[2]

इस विचार के प्रति गस्ताफ ऑलेन (ख्रिस्त विजेता की धारणा को ख्रिस्त का पापों के लिए बलिदान कह कर संबोधित करते हैं ।[3] ख्रिस्त मारे गए और जीवित हुए, पाप को ढाँपने के लिए नहीं परन्तु उसे समाप्त करने के लिए । उनका यह कार्य सबसे प्रथम और महत्त्वपूर्ण था - बुराई की शक्ति पर दिव्य विजय जिसने मानवता को बन्दी बनाये रखा था । उसने अपनी मांस और रुधिरमय देह में, परमेश्वर के पुत्र के रूप में, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उसने, शैतान को सिंहासन से नीचे गिरा दिया और पाप और मृत्यु का उन्मूलन कर दिया !

ख्रिस्त ने यह निश्चित विजय हमारे लिए प्राप्त की, नासरत यीशु के रूप में वह विजेता कहलाया, लोगों के द्वारा सलीब पर चढ़ाया गया, पर पिता ने उसे पुनर्जीवित

किया, परमेश्वर पिताने हमारे लिए महिमामय प्रभु भेंट स्वरूप प्रदान किया जो पवित्र आत्मा को भेजकर अपना उद्धार का काम निरन्तर हमारे लिए उस समय तक करता रहेगा जब तक कि वह पुनः अपनी महिमा में वापस नहीं आता ।

ख्रिस्त की हमारे लिए विजय

नया नियम ख्रिस्त की पाप, मृत्यु, और शैतान के शासन के चित्र को वर्णनातीत रूप में चित्रित करता है ।''''प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर "हम आगे पढ़ते हैं", उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई" (कुलुस्सियों 2 : 15) ।

अपनी समीप आती मृत्यु को जानकर, यीशु ने घोषणा की, " अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा" (यूहन्ना 12 : 31) "और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा ... न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है (16 : 8, 11) । परमेश्वर का धन्यवाद, हमारे प्राचीन शत्रु का सर्वनाश हुआ ! अब हम वर्तमान विजय का आनन्द मना सकते हैं, "क्योंकि जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है" (1यूहन्ना 4 : 4)'

पाप पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया गया है । "अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता मे, और पाप के बलिदान होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी" (रोमियों 8 : 3)' दोषी ठहराने का अर्थ इससे भी अधिक है केवल अस्वीकृति नहीं - विधि ही ऐसा कर सकी । पौलुस का यही अर्थ है जिसे सी. एच. डॉड ने इस घोषणा में कहा, "अपनी सम्पूर्ण आज्ञाकारिता से प्रेरित जीवन, और विजयी मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण पाप का अधिकार मानव स्वभाव से समाप्त कर दिया गया ।"[4]

जॉन वेस्ली का कथन, "इस प्रकार परमेश्वर ने घोषणा की कि पाप का सर्वनाश होना चाहिए और विश्वासियों को पूर्ण रूप से पाप से मुक्ति मिलनी चाहिए ।"[5]

ख्रिस्त हमारे लिए पाप बने । उन्होंने हमे मुक्त किया । उन्होंने हमे न्यायपूर्वक स्वतंत्र घोषित किया । अनुग्रह का यह रहस्य जेम्स स्टेवर्ट की कहानी फॉस्ट की चित्रकारी में सफलतापूर्वक चित्रित की गई है ।

फॉस्ट ने इस प्राचीन कथा में अपनी आत्मा के साथ जुआ खेला और हार गया । स्टेवर्ट ने चित्रकारी में (चित्रित किया है, फॉस्ट और शैतान शतरंज की बिसात के आमने - सामने बैठे हैं और फॉस्ट की आत्मा दांव पर लगी है । चित्र में दर्शाया गया है कि खेल प्रायः समाप्ति पर आ पहुँचा है । फॉस्ट के पास कुछ ही मोहरें शेष रह

गई हैं - एक या दो मोहरें, एक नाइट (वीर) और एक सम्राट । फॉस्ट के मुख पर निराशा मण्डरा रही है, जब कि शैतान व्यंग्य हँसी से अपनी भावी विजय की आशा से फूला नहीं समा रहा है ।

चित्रकारी का शीर्षक, जो कि स्कॉटिश चित्र दीर्घा में लटका हुआ है - यह है - "चेकमेट" । अनेक शतरंज के खिलाड़ियों ने इस चित्रकारी में दर्शायी स्थिति को देखकर अपनी एक राय दी है कि शतरंज की बिसात को देखकर स्पष्ट है कि फॉस्ट की स्थिति इस खेल में नितांत निराशाजनक है - यह चेकमेट है ।

पर एक दिन शतरंज का एक कुशल खिलाड़ी वहाँ आकर उस चित्रकारी को बड़े ध्यान से देखता खड़ा रहा । वह चित्रकारी में चित्रित फॉस्ट की निराशाजन्य मुद्रा को देखकर आकर्षित हुआ । फिर वह बिसात पर रखी हुई मोहरों को ताकता रहा । वह बड़ी तन्मयता से देखता रहा । उस गॅलरी में कई दर्शक आए और चले गए, परन्तु वह शतरंज का धुरन्धर शतरंज की बिसात की स्थिति पर गंभीरता से अध्ययन करता रहा, अपनी तन्मयता में मानो खो गया हो । अचानक उसने एक ज़ोरदार आवाज़ में चिल्लाया, वह आवाज़ चित्रवीथिका के भवन में प्रतिध्वनित हो उठी : "यह झूठ है ! राजा के पास एक चाल शेष है ... । राजा के पास एक चाल और है ।"

मैं दिव्य - भवन के न्यायालय कक्ष में खड़ा हूँ, ग्लानि से भरा हुआ, अपराधी, निराश । दण्ड की आज्ञा भवितव्य है, टाली नहीं जा सकती । मैं न्यायालय में मैं अपने जघन्य पापों को स्वीकार कर चुका हूँ । सहसा एक आवाज़ गूँजती है, "राजा, राजाओं के राजा के पास अभी एक चाल बाकी है !" यीशु वहाँ खिसकर कर मेरे बाजू आकर खड़े हो जाते हैं और बड़ी धीमी आवाज़ में, शान्त सागर के स्वर में, अनन्तता की गहराई के स्वर में, वे कहते हैं, "मैं इसके लिए पाप बना ।"[6]

निश्चय ही परमेश्वर का पुत्र शैतान के कामों को समूल नष्ट करने पृथ्वी पर स्वर्ग से नीचे आया ।

आगे, ख्रिस्त ने न केवल पूर्ण रूप से पाप का सर्वनाश किया; परन्तु अपनी देह के प्रत्येक सदस्य को पवित्र भी किया । इरेनियस ने चिरस्मरणीय शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया है,

वह बच्चों से भी बच्चा बनाया गया, निर्दोष शिशु को शुद्ध किया; बच्चों के बीच एक बच्चा बचपन को पवित्र किया, और सन्तान के प्रति स्नेह का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया - धार्मिकता और कर्तव्यपरायणता का, नवयुवकों में एक नवयुवक, उनके लिए एक उदाहरण बन गया, और उन्हें प्रभु के लिए शुद्ध किया । वह वृद्धों के बीच एक नवयुवक था, ... वृद्धों को शुद्ध कर रहा था, और उनके लिए एक

उदारहण बन रहा था । और इस तरह वह मृत्यू को प्राप्त हुआ ताकि वह "मृतकों में प्रथम जीवित हो उठा बने ।" सभी भी में सर्वोत्तम बने, जीवन का रचयिता, जो सबके आगे चलता है और मार्ग दिखाता है ।"[7] और अन्त में, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, उसने, "जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया" (2 तीमुथियस 1 : 10) उसकी मृत्यु से उसने सर्वनाश किया है, "ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे । और जितने मृत्यू के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसे थे, उन्हें छुड़ा ले" (इब्रानियों 2 : 14-15) ।

ऐसी मुक्ति, सारांश में, एक महिमामय विजय ख्रिस्तने हमारे लिए जीती है - शैतान पर, पाप पर, और मृत्यु पर ।

अब आइए, हम इस पर विचार करें ।

हम में ख्रिस्त की विजय का अधिकार देना, यही सम्पूर्ण समर्पणता का आशय है, स्वयं को उसके प्रति सौंप देना । रोमियों 8 : 1-11 में पौलुसने तत्व रूप में इसी सत्य को अधिकारिक रूप से प्रस्तुत किया है । वही ख्रिस्त जिसने हमारे मन-परिवर्तन के समय रहना आरंभ किया था, अब वह हमारे मनों में शासन करता है ! इस अर्थ में सम्पूर्ण पवित्रता की प्रक्रिया हमारे मन परिवर्तन की वास्तविकता है । वास्तविक रूप से शुद्ध होना, कोई 'उत्कृष्ट'' मसीही होने का अर्थ नहीं, यह तो एक 'सच्चा'' मसीही होने की स्थिति है ।

ख्रिस्त जिसने हमारे मनः परिवर्तन के अवसर पर हम में रहना आरंभ किया, अब वह हमारे मनों पर शासन करता है !

परन्तु आइए, सावधान रहें । यद्यपि हम अब "शारीरिक इच्छाओं के अधीन नहीं रहते परन्तु आत्मा के अधीन, यथार्थ में परमेश्वर का आत्मा हम में निवास करता है" (रोमियों 8 : 9), परन्तु हम फिर भी शरीर-रूप में जीवित रहते हैं, जिसमें इच्छाएँ, तीव्र कामनाएँ होती हैं, परन्तु उन में पापमय रूप से संगति नहीं होती, उनके अधीन नहीं होते, हमें इन्हें "आत्मा के द्वारा" अवश्य "समाप्त करना" है (पद 13) प्रेरित की तरह स्वयं को" मारना - कूटना है ताकि इन दैहिक इच्छाओं के दास न बन जाएं (1कुरिन्थियों 9 : 27) । अन्यथा हम पुनः आत्मिक मृत्यू पा सकते हैं । यद्यपि हम यथार्थ रूप में पवित्र किये गये हों, हम अभी भी महिमामय नहीं हुए हैं ! इसी बात को पौलुस हमें रोमियों 8 : 12-19 में स्मरण कराता है ।

फिर भी, यह हमारी विश्वास योग्य आशा है कि हमारी देह, उस समय, जब ख्रिस्त का आगमन हो उद्धार पायें, अर्थात् ख्रिस्त के महिमामय आगमन के अवसर पर ।

समस्त सृष्टि के साथ हम आन्तरिक रूप से कराह रहे हैं और अपने शरीर को मुक्ति पाने के लिए व्याकुल हैं'' (रोमियों 8 : 23) । और इस प्रतीक्षा के अन्तर्गत हम ''आत्मा के प्रथम फल'' होने के लिए आनन्दमग्न होकर राह तकते हैं'' (वही सन्दर्भ), उस महिमा का हम पहले ही से आनन्दानुभव करते हैं, जो हमारा होनेवाला है, जबकि हम शीघ्र ही यीशु को साक्षात् देखेंगे ! 14-31 पदों में पौलुस ने ऐसा ही धर्मज्ञान का सिद्धान्त प्रस्तुत किया है ।

यह आशा, मात्र एक सिद्धान्त तक ही सीमित नहीं - यह तो आत्मा की पुकार, ''यीशु प्रभु'' हैं, हम ऐसा स्तुति गान करते हैं (1 कुरिन्थियों 12:23) स्वर्गदूतों के साथ मिलकर हम यह गुणानुवाद करते हैं, ''हॅल्लिलूय्याह, इसलिए कि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वमान राज्य करता है'' (प्रकाशित वाक्य 19 : 6) । और जिनका सभी युगों में उद्धार हुआ है, हम उसके साथ मिलकर खिस्त विजेता की स्तुति में गुणानुवाद करते हैं : ''जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेमने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य युगानुयुग रहे'' (प्र. वा. 5 : 13) ।

आपकी आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति

आधारस्तंब

1. इस अध्याय के अन्तर्गत समाहित विस्तृत दर्शन के लिए रोमियों 6, 7, और 8 का अध्ययन कीजिए । इन सन्दर्भों का विभिन्न अनुवादों में पठन कीजिए और साथ ही सरल भावानुवाद - व्याख्या - सन्देश का भी अध्ययन कीजिए।
2. यह अध्याय दो स्तंबों पर आधारित है : खिस्त की हमारे पक्ष में विजय । इन आधारस्तंबों के मुख्य अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए प्रत्येक को एक वाक्य में व्यक्त करने का प्रयास कीजिए ।
3. कल्पना कीजिए यदि आपको निम्नलिखित रूप-रेखा पर आधारित, व्याख्यान, उपदेश अथवा प्रचार प्रस्तुत करना हो :

a. खिस्त की हमारे पक्ष में विजय ।

b. खिस्त की हम में विजय ।

c. इससे क्या अन्तर होता है ?

अन्तिम रूप-रेखा को आप किसप्रकार विकसित करेंगे ? क्या आप इसके अन्तर्गत मनःपरिवर्तन की कथा को समाहित करेंगे, पवित्र करनेवाले अनुग्रह की साक्षी देंगे, अपने व्यक्तिगत अनुभवों का विवरण प्रस्तुत करेंगे ? तीन विभिन्न विचारों को जिन्हें आप समाहित करेंगे, उन्हें प्रस्तुत करें ।

आत्मिक सीढ़ियाँ :

1. फॉस्ट की चित्रकारी पर ध्यान केन्द्रित करें । आपके व्यक्तिगत पाप और उद्धार के सन्दर्भों में यह कहानी किस प्रकार संबंधित है ?
2. "ओ" एक हज़ार जिव्हाओं के लिए गाओ" - इस गीत के पदों का गान कीजिए :

यीशु ! यह नाम हमारे भयों को दूर करता है,
जो हमारे दुःखों को तिरोहित करता है;
यह तो पापी के कानों में मधुर संगीत;
यह जीवन है, और स्वास्थ्य और शान्ति है ।

यह (नाम) पाप की शक्ति का दमन करता है;
यह कैदी का स्वतंत्र करता है ।
उसका लाहू जघन्य पाप को शुद्ध कर सकता है;
उसका लोहू मेरे लिए है ।

- चार्ल्स वेस्ली

3. अपने किसी मित्र, पड़ोसी अथवा किसी पारिवारिक सदस्य के सम्पूर्ण शुद्धिकरण के लिए प्रार्थना कीजिए ।

कार्यसाधन :

1. इन मुख्य वाक्यांशों पर विचार कीजिए । इस अध्याय में प्रयुक्त अर्थों पर ध्यान केन्द्रित करें । इनका क्या महत्त्व अथवा विशेषताएँ हैं ?
   - "ख्रिस्त विजेता ।"
   - "राजाओं के राजा के पास एक और चाल है ।"
   - "मृतकों में प्रथम - उत्पन्न ।"
   - "न कि "उत्कृष्ट' मसीही (परन्तु) एक सच्चा मसीही ।"
   - "अपने शरीर को यातना देना और (हमारा) दास बनाना ।"
   - "अपने सम्पूर्ण पवित्रिकरण की प्रक्रिया में हम ख्रिस्त को अपने जीवन- अस्तित्व का सारभौम प्रभु बनाने के लिए अनुमति देते हैं ।"
2. इस पुस्तक के लेखक को एक पत्र लिखिए । उन्हें निम्नलिखित बातों के विषय अपने विचार प्रस्तुत करें ।

- वह विचार अथवा दर्शन जो आपको सर्वाधिक सार्थक प्रतीत हुआ ।
- वह विचार - दर्शन जो आपके लिए नया था
- वह विचार - दर्शन जिसने आपको अत्याधिक व्याकुल किया, और क्यों ?
- इस अध्याय की सब से प्रमुख भावना जिसने आपको उत्तेजित अथवा प्रेरित किया ।

रोमियों 6 - 8 अध्याय के अन्तर्गत किसी पद, वाक्यांश अथवा वाक्य को चुनिये जिसे ख्रिस्त की विजय उस समय हमारी भी विजय बन जाती है, जब हमारा विश्वास प्रायश्चित से उत्पन्न होता है - अर्थात् ऐसा विश्वास जो बपतिस्मा विधि से स्वीकृत और सुदृढ़ हो जाता है । हम ख्रिस्त में एक हो जाते हैं । प्रत्येक वास्तविकता ख्रिस्त के बलिदान के कार्य में की गई हमारे लिए मसीही अनुभव की दिशा में प्रकट होने लगती है, हमारा जीवन और पवित्रता उसकी समानता में ढलने लगता है । पौलुस ने इसी तथ्य को इसप्रकार व्यक्त किया है ।

4. मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित नहीं रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है : और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया'' (गलतियों 2 : 20) ।

ख्रिस्त की मृत्यु हमारी मृत्यू बन गई है, अर्थात् पाप की प्रवृत्ति उस मृत्यु के साथ समाप्त हो गई है, और उसका जीवन हमारा नया जीवन पवित्रता और धार्मिकता का हो गया है ।

सर्वप्रथम, हम जब परिवर्तित होते हैं तो हम ख्रिस्त के साथ मर जाते हैं और उसके पुनरुत्थान में नये जीवन के साथ जिलाए जाते हैं । क्रूस पर उसकी मृत्यु को आत्मसात् कर लेते हैं हम न्यायोचित ठराए जाते हैं - ग्लानि के अनुभव से मुक्त, पाप की प्रभुता से रहित; साथ ही साथ हम में नवीनिकरण होता है - उसमें परिवर्तित हो जाते हैं, एक नया आत्मिक जीवन, प्रेममय जीवन, और आज्ञाकारिता की पवित्रता सम्मत जीवन उत्पन्न हो जाता है । यही सत्य को हम रोमियों 6 : 1 - 11 में जिसे पौलुस ने प्रेरणा से अनुभव किया, उसका सार तत्त्व पाते हैं । दूसरी बात सम्पूर्ण शुद्धिकरण में हम ख्रिस्त को अपने में निवास करने की अनुमति देते हैं और वह हमारे जीवन में बस जाता है, और हमारे अस्तित्व का एक मात्र प्रभु बन जाता है । उसी प्रकार जब कोई ''मृत्यु से पुनः जीवित किया जाता है'' (रोमियों 6 : 13) नये जीवन में, हमें अब अवश्य स्वयं को परमेश्वर के लिए समर्पित करना है ... और हमारे शरीर के अंश परमेश्वर की धार्मिकता के साधनों के लिए, उसकी पवित्रता के लिए सौंपने

होंगे'' (13 - 19 पद) । यही पौलुस का प्रेरणात्मक तर्क और वचन है जो 12-23 और मुख्य रूप से 13, 19 पदों में व्यक्त किया गया है ।

स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पणता, उसकी प्रभुता को अपने जीवनों में आत्मसात कर लेना और फिर प्रभु का आत्मा पूर्ण रीति से हमारे मनों में प्रभुता करता है, अर्थात प्रभुको अपनी शुद्धता, पवित्रता जिसमें आपकी रुचि है, आपकी आवश्यकता है, अथवा जिसे आप स्मरण रखना चाहते हैं । इसे आप एक कार्ड पर लिख लीजिए, और इसे अपने बटुवे में, अपनी मेज़पर, फ्रिज़के ऊपर कॅलेण्डर इत्यादि स्थानों में रखें - यह ऐसे स्थानों पर स्थित हो जहाँ से इसे हर समय देखा जा सके, यह संकेत सत्य आपके भावी जीवन का आदर्श बना रहे ।

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित नहीं रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।"

गलतियों 2 : 20.

6

पवित्रता : ख्रिस्त की आन्तरिक प्रभुता

गलतियों 2 : 20 में पौलुस के पवित्रीकरण का सुसमाचार निहित है, जिसमें अपूर्व सौन्दर्य और दिव्य सहभागिता संलग्न है, उसके नाय्यता (औचित्य) के सिद्धान्त के बीच मानों एक अद्वितीय मणि पिरो दिया गया हो (2 : 15 - 21) और आत्मा का वचनबद्ध उपहार (3 : 1 - 14)।

पौलुस के सन्दर्भ में जैसा कि हम देख चुके हैं, नाय्यता अथवा औचित्य दोनों का पारस्परिक घनिष्ठ संबंध है, उसी भाँति जैसे ख्रिस्त की मृत्यु और पुनरुत्थान एक ही विषय के दो पक्ष हैं। ख्रिस्त के साथ मरना वैसा ही है जैसे पाप से मुक्त होना है, और ख्रिस्त के साथ "आत्मा में नये जीवन" में जिलाया जाना है" (रोमियों 7 : 6; 6: 1-4 को भी पढ़िए)।

गलतियों 2 : 20 हमें, परमेश्वर के उद्देश्य का हमारे लिए एक स्मरण सूचक है, यह स्मरण जो कि परमेश्वर का उद्देश्य हमारे उद्धार का एक छोर है : वह यह कि किसी दिव्य चमत्कारिक विधि से ख्रिस्त पुनः हमारे के स्वरूप अवतार ले, और अपने पवित्र जीवन को हम में स्थापित करे ! (देखिए रोमियों 8 : 29)।

सुसमाचार की पवित्रता का ऐसा सामर्थ्यवान और ओजस्वी स्वरूप है : ख्रिस्त हमारे मनों में प्रभुता करता है, हमारी समस्त शक्तियों पर उसका नियंत्रण है और क्रमशः हमें अपने स्वरूप में ढालता है, ख्रिस्त ऐसा, अपने आतमा के जीवन - दान स्वरूप करता है (देखिए 2 कुरिन्थियों 15 - 45) ।

आइए अब पवित्रता के सुसमाचार की मणि को ऊपर उठाए रखें, जिसे हमने अपने वचन में देखा है, पाया है, ओर इसका अवलोकन तीन आयामों में करें । गलतियों 2 : 20 यह प्रगट करता है कि मेरे पास :

- एक पाप की गठरी है जिसे ख्रिस्त के साथ क्रूस पर चढ़ानी है,
- मानवीय स्वार्थ की भावना ख्रिस्त के अनुशासन में प्रशिक्षित करनी है, और
- एक वास्तविक व्यक्तित्व ख्रिस्त में कार्यान्वित करना है, उसके अनुरूप बनाना है ।

एक पापमय व्यक्तित्व को ख्रिस्त के साथ सलीब पर चढ़ाना है

ग्रीक भाषा में यथार्थ में इस तरह लिखा हुआ है, ख्रिस्त के साथ मैं क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ; और अब मैं (अहम्) जीवित नहीं रहा, परन्तु ख्रिस्त अब मुझ में निवास करता है ।''

मार्टिन लूथर के कथन का यह आशय है, आदम के पतित वंश के वंशज होने के कारण, हम ''अपने स्वार्थ में लिप्त'' उत्पन्न हुए हैं । हमारे मनों की यह गंभीर वक्रता है (टेढ़ापन) परमेश्वर इसी पापमय प्रवृत्ति को विश्वासी के मन से समाप्त कर देना चाहता है, उसे सलीब पर चढ़ाना चाहता है : हमारे मनों में समाहित मूर्ति - पूजा जो परमेश्वर को मनों से बहिष्कृत करती है, वह भावना, हमारे झूठे घमण्ड ओर विद्रोह की द्योतक है (देखिए रोमियों 1 : 21 - 25) ।

पाप तो एक वंशानुगत सत्य है, इसके पूर्व कि वह व्यक्तिगत कार्य बन जाए ।

सभी नश्वर प्राणी आदम की पतित वंशावलि का वंशज हैं, इस में कोई अपवाद नहीं, फलस्वरूप इस दोष के कारण आत्मा का अनुग्रह जो कि पवित्र करता है, उसे वंचित कर दिए गए हैं । आत्मा के अनुग्रह के वरदानसे वंचित, और नैतिकता की दृष्टि से भी वंचित हैं । पाप इसके पूर्व कि वह व्यक्तिगत कार्यरूप में आता है, वह तो एक वंशानुगत् पाप है । आदम में पतित, हम निस्सन्देह ''व्यक्तिगत'' रूप से पापी हैं । हम सभी अपने व्यक्तिगत जीवन में इसी ''पतन'' के भागीदार हैं । संत प्रचारक ने हम सभी के विषय में कहा है, ''बिना व्यवस्था पाप मृतक है । मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई तो पाप जी गया और मैं मर गया'' (रोमियों 7 : 8 - 10) । हम कभी अपनी व्यक्तिगत जीवन - यात्रा में इसे - युग का नैतिक

उत्तरदायित्व कह कर संबोधित करते हैं - हम से प्रत्येक परमेश्वर की वाणी को सुनता है, जो हमें आदेश देती है, "तू न कर !" बिना किसी अपवाद के, क्योंकि हम सभी अनुग्रह से वंचित हैं, हम अवश्य आज्ञानुल्लंघन करते हैं । इस प्रकार पाप आज्ञा का उल्लंघन बन जाता है । प्राध्यापक ॲडवर्ड रॅम्सर्डेल ने एक विश्वविद्यालय में भाषण करते हुए कहा, "मौलिक पाप को आप जैसा चाहें समझाइए" इसे आप नल्हीं समझा सकते, यह एक इन्द्रियानुभवात्मक (अनुभवसिद्ध) सत्य है ।" वचन सुस्पष्ट करता हैं", सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं ।" यह तो निस्सन्देह बुरा समाचार है !

परमेश्वर का धन्यवाद, एक सुसमाचार भी है : "यह बात सच और हर प्रकार से मानने योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिनमें सब से बड़ा मैं हूँ" (1 तीमुथियुस 1 : 15) ।

परन्तु क्योंकि उद्धार तो अनुग्रह से और व्यवस्था के कामों से अलग है, और क्योंकि व्यवस्था कोई पवित्र जीवन उत्पत्र नहीं कर सकती; परन्तु केवल पाप को सक्रिय बनाती है और इसे आज्ञानुल्लंघन की दिशा में मोड़ देती है और जहाँ पाप बहुत हुआ, वहाँ अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ (देखिए रोमियों 5: 18-21), "तो हम क्या कहें ?" क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो ?" इस प्रकार के व्यर्थ, सारहीन तर्क के प्रति उत्तर में संत पौलुस कहता है, "कदापि नहीं, जब हम पाप के लिए भर गए तो फिर आगे उस में क्यों कर जीवन बिताएँ ?" (6 : 1-2) । इस के बजाय कि हमारे सभी पापों के लिए एक समान क्षमा हेतु "अतीत, वर्तमान, और भविष्यत्" नाय्यता ने पाप की शक्ति का उन्मूलन कर दिया !

पुराने नियम में पाप के निमित्त चढ़ाई गई बलि औचित्य विश्वास की ओर एक सहायक उदाहरण प्रस्तुत करती है । एक इस्राएली को जब इस बात का ज्ञान हो जाता कि उसने पाप किया है, और इस पाप से क्षमा पाने के लिए उसे अपने झुण्ड से, पाप मोचन के लिए, एक मेमने को जिस में कोई दोष न हो, चुनना पड़ता और उसे याजक के पास लाना होता था । उसे उस बलि के मेमने के साथ आना होता था, उसे उस मेमने के सिर पर हाथ रखना होता यह इस बात का चिन्ह ठहरता कि वह यह निश्चित करता और उस पाप के प्रभाव का आभास करता कि उस बलि के मेमने में उसकी भी संगति है, उसे बलि के समय अपने पापों को भी स्वीकार करना होता था । जब उस मेमने के गले से लोहू बहता, पापी "मर जाता" अर्थात् उस निर्दोष मेमने की बलि में । यह सहभागिता, अर्थात् बलि के मेमने के साथ दी गई इस बात का निश्चय, विश्वासी इस्राएल के लिये था कि अब इस प्रकार की सहभागिता (बलि के

मेमने पर हाथ रखकर) से उन्हें नयी शक्ति - नव - जीवन - संचार हो गया है, उस बलि - वेदी के सम्मुख - परमेश्वर की उपस्थिति में उस प्रतिनिधि - बलि के द्वारा उसे नव जीवन प्राप्त हो गया है ।"[1]

इसी भाँति जब हम ख्रिस्त के समीप क्षमा प्राप्ति के लिए आते हैं, हमें यह ज्ञान हो जाता है कि ख्रिस्त को हमारे पापों के कारण क्रूस पर कीलों से लटकाया गया । पश्चाताप और विश्वास में, हम ख्रिस्त की मृत्यू में सम्मिलित होते हैं, उसकी मृत्यू जो कि हमारे पापों के कारण हुई, वही मृत्यु हमारी पापों के प्रति हो जाती है । यह ख्रिस्त की बलि जो हमारे पापों के कारण दी गई, यही कारण था कि पौलुस उस धारणा को सर्वथा अस्वीकृत करता है कि मसीहीजन पाप में निरन्तर रह सकते हैं : "जब हम पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएँ" (रोमियों 6:2) । कहने का तात्पर्य यह है कि, हम मसीही होने के नाते, पापमय जीवन निरन्तर कैसे कर सकते हैं, मसीही होने के कारण हम तो पाप के लिए मर चुके हैं ? अर्थात् अब पापमय जीवन हमारे लिए अतीत की बात हो गया है ।

अब यीशु प्रभु है,

परन्तु अहम् प्रधानमंत्री बनना चाहता है !

एक ऐसी नवयुवती जो सांसारिक ऐशो आराम, मनोरंजन, खाने-पीने - मौज - मस्ती के लिए जानी जाती थी, एक धार्मिक आन्दोलन के फलस्वरूप उस में बड़ा भारी मनः परिवर्तन आया । कुछ रातों के बाद उसकी एक पुरानी सहेलीने उसे फोन पर यह कहा, "हम एक शराब की दावत का आयोजन कर रहे हैं, कोई खान-पान की पार्टी नहीं । क्या तुम मेरी पुरानी सहेली होने के नाते वहाँ आओगी ?" इसके प्रत्युत्तर में उसने कहा, "मुझे खेद है । मैं नहीं आ सकती - मैं मर गई हूँ !" दूसरी ओर से फोन रखने की आवाज़ सुनाई दी । पाप से संबंध तोड़ देना, एक ऐसा निर्णय है जो बपतिस्मा लेने के बाद निर्णयात्मक रूप से हस्ताक्षर के द्वारा मुहरबन्द हो जाता है (देखिए रोमियों 6:3-4), इसका अर्थ है पवित्र वचन के द्वारा मनःपरिवर्तन । चार्ल्स वेस्ली के गीत के ये शब्द,

> **वह निरस्त पाप की शक्ति को नष्ट करता है;**
> **वह कैदी को स्वतंत्र कर देता है ।**

हमारी पापमय विकट परिस्थिति, पाप करने की अनिवार्यता से कहीं अधिक गंभीर है, जिसे परमेश्वर मनःपरिवर्तन के समय चंगा करता है । यहाँ तक कि बुनियादी मनःपरिवर्तन पाप-समस्या का समाधान नहीं कर सकता (हो सकता है हम पहले ऐसा सोचते हों) यद्यपि पाप कभी त्यागता नहीं, प्रत्येक मसीही शीघ्र ही यह पता लगा लेता

है कि पाप फिर भी बना रहता है, एक घमण्ड के रूप में, खिस्त - प्रभुता हमारे ह्रदयों में शासन करती है । कहने का आशय यह है कि बुनियादी पापमय प्रवृत्ति तो बनी रहती है, और मसीही गण यह भी दावा करते हैं कि उनके ह्रदयों में खिस्त का राज्य है । इसी भाँति यीशु तो प्रभु है, परन्तु अहम् प्रधान मंत्री बनना चाहता है !

पाप की अवशेष ''जड़'' यह है

समस्त धार्मिक उपदेशों और पत्रों में पवित्रता के सन्दर्भ में जो प्रार्थनाएं हैं, उनकी पूर्व धारणा (2 कुरिन्थियों 7 : 1; 1 थिस्सलुनीकियों 4 : 4-8; 5 : 23 - 24).

कलीसिया द्वारा निर्धारित समस्त धार्मिक सिद्धान्तों के प्रति आस्था और

बड़ी नम्रता से प्रत्येक औचित्य मसीही के समान स्वीकार करना और मानना ''खिस्त का सा मन रखना'' और यीशु के समान आचरण करना'' (1कुरिन्थियों 2: 16; 1 यूहन्ना 2 : 6) ।

पाप के अवशेष को अनेक प्रकार से भाषित किया गया है, यथा -

स्वयं से प्रेम करने की मूर्ति पूजा स्वरूप कट्टर भावना (रिचर्ड एस. टेलर)

''अवशिष्ट अवआज्ञाकारिता'', अर्थात् आज्ञा-पालन न करने का हठ (ई. स्टेनली जोन्स)

''स्वशासन की भ्रान्ति'' (मिलर्ड रीड).

''हमारी शत्रु से भेंट हुई है, और वह हम में है !'' विदुषक चरित्रनायक पोगो का कथन है । पाप शब्द के बच में ''आप'' हैं, इसके मध्य में स्वमूर्तिपूजा की भावना है । एक प्राचीन वचन इस तरह व्यक्त करता है,

मेरे भाई को नहीं, मेरी बहन को भी नहीं, परन्तु मुझे ओ प्रभु

मुझे प्रार्थना की आवश्यकता है ।

अहम् प्रवृत्ति अशुद्ध विश्वासी के मन को अधिक परेशान करती है ऐसे विश्वासी को पाप से मरने की अधिक आवश्यकता है - ऐसी मृत्यु जो स्वयं पाप की हो, ''केवल मेरे लिए, मेरे अधिकार के लिए'' । एक शब्द में पवित्रता का आदेश मेरे मन परिवर्तन को वास्तविकता देना है यह अत्यन्त आवश्यक है ।

पौलुस रोम के मसीहियों को उपदेश देते हुए कहता है स्वयं को परमेश्वर के प्रति ''उपस्थित'' करो, हमेशा - हमेशा के लिए समर्पित करो,[2] उसी तरही जिन्हें मृत्यु से जीवन की ओर लाया गया है । इस सुसमाचार की ओर लौटत हुए, इस अनिवार्यता की ओर उन्मुख हो वह कुछ पदों के बाद उन्हें मानवीय रीति से समझाता है, क्योंकि आत्मिक रीति से उनमें अपनी ''स्वाभाविक सीमितता'' के कारण कमी थी, ''मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूँ जैसे तुमने अपने

अंगों को कुकर्म के लिए अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिए धर्म के दास करके सौप दो'' (रोमियों 6 : 19)। ओसवाल्ड चॅम्बर्स यहाँ एक रहस्य को देखते हैं - कि वह जो पहले ऐसा विकट पापी था, वह अब नम्र संत न बनने का चुनाव कर लेता है ! मेरे अहम् को पूर्ण रूप त्याग करने का आश्वासन है और परमेश्वर की प्रभुता को अपने हृदय और जीवन में स्थान देने का आह्वान है ।

वह पाप जो हमेशा बना रहता है वह स्पष्ट रूप से स्वशासित होता है : मेरा संकल्प कि मैं अपना स्व परमेश्वर को कितना देना चाहता हूँ, अपनी पवित्रता के स्वामित्व में परमेश्वर को इसके लिए कितनी अनुमति देता हूँ । आह्वान तो सम्पूर्ण स्वत्याग का है, परमेश्वर के लिए अपना सर्वस्व त्याग वेस्ली ''पवित्रता के लिए'' कभी - कभी ''पूर्ण पवित्रता'' का प्रयोग करता है । यह पवित्रता हृदय की शुद्धता और जीवन की फलस्वरूप पवित्रता का दिव्य कार्य मानता है । निम्नलिखित पद इसे स्पष्ट करता है, ''पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुमको फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त होती है और उसका फल अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6 : 22); अथवा, ''पर अब तुम जो पाप से मुक्त किए जा चुके हो, और परमेश्वर के दास बन गये हो, इसका लाभ जो तुम्हें मिलता है वह शुद्धिकरण है ।'' (N. R. S. V.)

सम्पूर्ण स्वत्याग जिसे परमेश्वर की शुद्ध करने की शक्ति को संभव बनाता है, वह हीब्रू दास के उदाहरण में बड़ी सुन्दरता से स्वसमर्पण के सन्दर्भ में प्रदर्शित किया गया है, जो कि जुबली - वर्ष में स्वतंत्र घोषित होने पर भी जाने का चुनाव नहीं करता, और यह घोषित करता है, ''मैं अपने स्वामी, और अपनी पत्नी, और बालकों से प्रेम रखता हूँ; इसलिए मैं स्वतंत्र होकर न चला जाऊँगा'' (निर्गमन 21 : 5) । फिर वह अपने स्वामी के समक्ष प्रस्तुत होता है, जो उसके कान में सुतारी से छेद कर उसे ''प्रेमी दास'' बनाकर आजीवन अपने पास रखता है । (देखिए 2 - 6 पद) यह सम्पूर्ण स्वतंत्रता की दासता है ।

यह ख्रिस्त की मेरे लिए स्व-दान का कार्य है, जिसने मेरे हृदय में पवित्रता का राज्य स्थापित किया है, जिसके कारण उसने मुझे इस योग्य बनाया है कि मैं पूर्ण नम्रता से परमेश्वर की स्तुति करूँ : ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित नहीं रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'' (गलतियों 2 : 20) ।

मानव स्वार्थ ख्रिस्त में अनुशासित हो

यद्यपि मैंने पाप की बुनियादी मृत्यू का अनुभव किया है और अब ख्रिस्त मुझ में, अपने आत्मा के सामर्थ्य के साथ राज्य करता है, मेरी निरन्तर विजय केवल मेरे इस

संबंध को स्थिर रखने पर निर्भर करती है । "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ" इस वाक्य को ग्रीक भाषा में सम्पूर्ण काल में व्यक्त किया गया है, और इसमें एक बल है, "मैं खिस्त के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ ।" पवित्र जीवन क्षण प्रति क्षण के संबंध के साथ स्थिर किया जाता है, और जब में आत्मा के अनुशासन के अधीन स्वयं को समर्पित करता हूँ । पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे (5 : 16) ।

निरन्तर विजय को एक संकट का सामना करना पड़ता है, वह है, स्वाभाविक स्वार्थ जो कि सम्पूर्ण शुद्धता के आगे संकट बनकर खड़ा रहता है । पौलुस के विचार को किंग जेम्स संस्करण ने उचित रीति से प्रकट किया है, जब वह लिखता है, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ : पर मसीह मुझ में जीवित है (2 : 20) । "मैं" और "मुझ" सर्वनामों की पुनरावृत्ति इस पद में बार - बार की गई है, वह इस बात पर ज़ोर देती है कि "स्व"का आवश्यक अस्तित्व पापमय "स्व" क्रूस के परे भी बना रहता है । अतः यह धारणा गलत है कि "स्व" की मृत्यु खिस्त के सलीब पर चढ़ाये जाने से समाप्त हो जाती है, पर यथार्थ तो यह है कि "स्व" पाप करने के लिए मर जाता है, पाप-प्रवृत्ति की मृत्यु वास्तव में होती है । एक प्रचारक ने घोषणा की, "मैं मर गया, और मैं महिमा हीन मर गया," "परन्तु मैं केवल उसके लिए मर गया जिसके कारण मुझे मरना पड़ा, अर्थात् जिसने मुझे मारा ।

आगे, पवित्र जीवन वह जीवन है जो "दैहिक" है : जब पौलुस कहता है, "मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ (परन्तु दैहिक लालसाओं के अनुसार नहीं) तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया" (पद 20) । उसके कहने का यह आशय है कि मैं शरीर और लोहू निर्मित इस देह में पवित्र जीवन यापन करता हूँ - अर्थात् सभी लालसाओं और इच्छाओं के साथ - उसी प्रकार के शरीर में जिस में परमेश्वर के पुत्र ने अवतार लिया । वह वास्तव में एक सच्चा मनुष्य था, "वह सब बातों में हमारी तरह परखा तो गया, फिर भी निष्पाप निकला" (इब्रानियों 4 : 15) । जैसा कि उसने शारीरिक देह में (भौतिक शरीर) पवित्र जीवन यापन किया जिसमें शरीर की समस्त आवश्यकताएँ, इच्छाएँ थीं, तो हम भी ऐसा ही जीवन उसी आत्मा की शक्ति से जो उसमें विद्यमान थी, जी सकते हैं । संत प्रचारक पूछता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है, जो तुममें बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो ? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो" (1 कुरिन्थियों 6 : 19-20) ।

पौलुस एक स्थान पर लिखता है, "सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गिक वस्तुओं की खोज में रहो ... । क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है ... । इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हैं अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है" (कुलुस्सियों 3 : 1 3, 5) । जब पौलुस रोमियों में कहता है, "तुम शारीरिक दशा में हो" (रोमियों 8 : 9); उसके कहने का आशय है कि मसीही जन "शरीर के अनुसार नहीं चलते" (पद 4 - 5, 12-13) (देखिए 5 - 7 पद) और न ही अपने मन अथवा अपने ऊपर निर्भर होकर चलते हैं (देखिए 1-7 पदों को) । इसके विपरीत, पौलुस लिखता है, "पर आत्मा का फल प्रेम; धीरज संयम, ... । और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषों समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है । यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी" (गलतियों 5 : 22 - 25) ।

"मैं ऐसे संसार में पवित्र जीवन किस प्रकार व्यतीत करूँ ?" एक मनुष्य ने जॅक फोर्ड से जो ब्रिटिशद्वीप नाज़ेरिन कॉलेज, जो कि मेनचेस्टर इंग्लॅण्ड के अधिष्ठाता थे, यह प्रश्न पूछा ।

फ़ोर्ड महोदय ने उस व्यक्ति से प्रश्न किया, "क्या आप यीशु ख्रिस्त पर विश्वास करते हैं, जिसने पवित्र जीवन-यापन किया ?"

उस मनुष्य ने उत्तर में कहा, "अवश्य ।"

फोर्ड महोदय ने आगे कहा, "तो फिर प्रश्न यह है । क्या आप यीशु को अपने जीवन में उसके पवित्र जीवन को जीने की अनुमति देंगे ?"

यही प्रश्न है ।

वचन स्पष्ट रूप से प्रतिक्रियात्मक और दमन-उन्मूलन दोनों ही सिद्धान्त का है, पाप का नहीं (जो कि पवित्रीकरण - अनुग्रह से नष्ट कर दिया गया है) परन्तु हमारी देह की प्रबल इच्छा प्रवृत्ति का है जो पाप की ओर प्रवृत्त करती है । पौलुस रोमियों 8 में चेतावनी देते हैं, "क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे" (पद 13) । यह वचनात्मक प्रतिक्रियात्मक सिद्धान्त है । पौलुस पुनः लिखते हैं, "परन्तु मैं अपनी देह को मारता-कूटता और वश में लाता हूँ; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करूँ, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ" (1 कुरिन्थियों 9 : 27) । यह वचनात्मक दमन - उन्मूलन का सिद्धान्त है ।

"सोमा" (शरीर) के द्वारा, एक नये नियम का लेखक लिखता है, पौलुस का आशय" हमारे शब्द के बहुत समीप के पर्यायवाची शब्द से है - "व्यक्तित्वं ।"[३] "शरीर के काम" हमें आदेश दिया गया है कि हम "इन्हें मार डालें" ये इसलिए हमारी मनोवैज्ञानिक और साथ ही हमारी शारीरिक इच्छाएँ हैं - सभी मन की प्रवृत्तियाँ (औचित्य प्रदर्शन आरोपण, खण्डन इत्यादि) इच्छाएँ जो स्वाभाविक शरीरजन्य होती हैं ।

आत्मा-पूरित विश्वासी मानवीय स्वार्थ रूप होता है जिस में स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ होतीं हैं, फिर भी उसमें "अवचेतन मनः प्रवृत्ति" होती है जिसे फ्रायड "इड" कह कर संबोधित करता है, ये इच्छाएँ प्रभाव और प्रोत्साहन उत्पन्न करती हैं । क्योंकि ये प्रवृत्तियाँ चेतन मन के नीचे दबी रहती हैं, वे नैतिक रूप से निष्क्रिय होती हैं, परन्तु वे ऊपर उठकर पाप की ओर उद्यत् हो सकती हैं अतः इन्हें अवश्य नियंत्रित और आत्मा के सामर्थ्य से दमित करना चाहिए । यदि हम इन्हें तिरस्कृत कर इन्हें दबा दें, तो हम न केवल स्वयं से छल करते हैं परन्तु हम रोगी भी बन जाते हैं । आत्मा के द्वारा हमें इन्हें अवश्य "दबाना" - समाप्त करना चाहिए, परमेश्वर के समक्ष इन्हें स्वीकार करके और परमेश्वर अनुमति दे कर कि वह हमें इन पर विजय दिलाएँ (देखिए 1 यूहन्ना 1 : 7 - 8) ।

डब्लू. ई. सेंग्स्टर ने अपनी पुस्तक "प्योर इन हार्ट" में बड़ा सहायक अंश प्रस्तुत किया है, जिस में वह आग्रह करता है कि "जीवन, जो कि अवचेतनावस्था से फूट पड़ता है, वह अनैतिक है, और इसे केवल एक प्रवृत्ति अथवा "प्रतिक्रियात्मक" समझना चाहिए, जब तक कि स्व चेतन इसे पहचानकर इस से उत्पन्न इच्छाओं को नष्ट नहीं करता ।" वह आगे कहता है :

जब मुझ में अचानक ईर्ष्या जागृत हो उठती है, क्या यह मैं हूँ ? - क्या उस क्षण तत्काल मैं इसे अनुभव करता हूँ ? क्या यह मैं हूँ जब गर्व की लहर उठकर मेरी आत्मा को हठी बना देती है ? क्या यह मैं हूँ, जब कोई शारीरिक इच्छा मेरे शरीर में तत्काल उभरकर आती है ?

अवश्य, उस क्षणिक काल में, मुझे लगता है कि वह मैं हूँ ... । क्या यह काम-वासना, घमण्ड, ईर्ष्या, अथवा इसी प्रकार की कुवासनाएँ - क्या ये सब मेरी अपनी हैं ? क्या इन्हें मैं अपनी समझता हूँ चाहे मैं इसे स्वीकार करूँ अथवा नहीं ?

मैं अनुभव नहीं कर सकता कि ऐसा है । एक चेतन नैतिक व्यक्ति होने के नाते, यह जब तक मेरी नहीं है जब तक मेरी इच्छा इसे मेरी न बना दे । मेरा एक नीतिनिरपेक्ष स्वभाव है, मेरे वंश, और परिवार की यादों और प्रवृत्तियों के आधार पर मेरा सदाचार और दुराचार से कोई संबंध नहीं । परन्तु एक व्यक्ति होने के नाते, और

पवित्रात्मा की सहायता से, पाशविक प्रवृत्ति संयमित - नियंत्रित की जा सकती है, वशीभूत की जा सकती, अथवा उन पर स्वामित्व प्राप्त किया जा सकता है । मेरे नैतिक जीवन में इनकी कोई आवश्यकता नहीं अपेक्षाकृत परमेश्वर की सहभागिता की अनुमति । जैसे ही मेरे अन्दर यह जोश उत्पन्न करती है, और मेरे नैतिक जीवन से मल्लयुद्ध करती है, और मैं यह निर्णय करता हूँ कि यह बुरी बात है, इस स्थिति तक यह केवल लालच तक सीमित रहती है । यदि मैं इस से कुछ समय तक उत्तेजित करता रहूँ, और अपनी कल्पना मे इसे प्रश्रय देता रहूँ, तब तो यह मेरी होती है, यद्यपि अभी तक यह कार्यरूप में परिणत नहीं हुई हैं, क्योंकि मैंने इसे "अपनी" स्वीकार कर लिया है ।

मैं इसे "अपनी" स्वीकार नहीं करूँगा । मैं संतों के अनुभव और उदाहरणों से सीखूंगा कि जितनी शीघ्रता से संभव हो, परमेश्वर की ज्योति और यह जानकर कि यह बुराई है, तत्काल इसका मूल्यांकन करूँगा और प्रार्थना के द्वारा इसकी घोर - भर्त्सना करूँगा । यह मेरी कभी नहीं थी । यह तो एक नीति निरपेक्ष भावना थी । यह केवल नैतिक चरित्र की उदारता को स्थिर करने के लिए की गई थी । इसे परमेश्वर की ज्योति में इसकी प्रवृत्ति को समझने के लिए किया गया था, और इसे नैतिक रक्षक की भांति कभी स्वीकार नहीं किया गया ।[4]

सन्त यूहन्ना लिखते हैं, "हे बालकों; तुम परमेश्वर के हो : और तुमने उन पर जय पाई है : क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है" (1 यूहन्ना 4 : 4) । इसके पश्चात् वह कहता है, "वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है, हमारा विश्वास है" (5 : 4) ।

एक सच्चा व्यक्तित्व ख्रिस्त में कार्यान्वित होना है :

"फिर भी मैं नहीं, परन्तु ख्रिस्त"

मुझे याद है एक बार पौलुस गलतियों से कह रहा था, जिसे यीशु ने सुसमाचार में कहा था - यदि मै स्वयं का इन्कार करूँ और प्रतिदिन अपना क्रूस लेकर उसके (यीशु) पीछे चलूँ, मैं सम्पूर्णता को प्राप्त करूँगा (देखिए लूका 9 : 23-24)

स्व कार्यान्वन नव युग - आन्दोलन का लक्ष्य है ।

ख्रिस्त - कार्यान्वन सुसमाचार का गंतव्य है ।

निस्सन्देह कुछ भी सत्य नहीं : केवल क्रूस का मार्ग ही वास्तव में व्यक्तिगत सिद्धता का मार्ग है । फिर भी मसीही आपेक्षिक महत्त्व, तो मात्र ख्रिस्त के साथ क्रूस पर चढ़ना गौण उत्पादन है, ख्रिस्त का सर्वप्रथम क्रूस पर चढ़ना ही मुख्य बात थी । अन्त में परमेश्वर के मन में ख्रिस्त के साथ हमारे क्रूस पर चढ़ने की बात है - इसे

दिव्य के साथ कार्यान्वित कहते हैं, ख्रिस्त के साथ वास्तविक मिलन - "मैं नहीं परन्तु ख्रिस्त" वास्तविक कार्यान्वित नये युग के आन्दोलन का आदर्श है; ख्रिस्त - कार्यान्वन सुसमाचार का लक्ष्य है ।

परमेश्वर का मेरे बाह्याडंबर को क्रूस पर चढ़ाने का प्रयोजन यह है कि ख्रिस्त मुझमें अवतरित हों, और अपना पवित्र दासत्व का जीवन, परहित सेवार्थ मेरे दैनिक नीरस जीवन में भर दें, ताकि मेरा नीरस अस्तित्व सार्थक बन जाए । बिल ब्राइट हमारे साथ ख्रीस्तमय जीवन का उल्लेख करते हैं :

1. मैं अपने विद्यार्थियों से किस ज्ञान की अपेक्षा करूँ ?

   वह यह कि किस प्रकार की विचार धाराएँ, धारणाएँ, सच्चाइयाँ, और यथार्थ को उन्हें समझना आवश्यक है ?

2. मैं अपने विद्यार्थियों में किस प्रकार की अनुभूति चाहता हूँ ?

   शिक्षा उस समय तक व्यावहारिक नहीं कहलाई जा सकती जब तक वह उसके साथ अनुभूति का समावेश नहीं हो जाता । मैं उन में किस प्रकार का गुण-दोष - विवेचन, उत्कंठाएँ, इच्छाएँ, उद्देश्य प्रयोजन, मूल्य इत्यादि को उनमें उत्पन्न करने की आशा करता हूँ ?

3. मैं अपने विद्यार्थियों से किस काम की अपेक्षा करता हूँ ?

   शिक्षा से प्राप्त कौन से कार्य परिणाम स्वरूप चाहता हूँ - प्रार्थना, धर्माभिषेक संस्कार, भक्तिमय कार्य, साक्षी, सम्पूर्ण शुद्धिकरण की खोज ?

   यदि आप का कोई आत्मिक मित्र अथवा प्रार्थना - साथी हो, उसे इन अभ्यास क्रमों के लिए अपने साथ सहकार्य के लिए निमंत्रण दीजिए ।

1. आत्मिक सीढ़िया

एक व्यक्ति ने अपने पादरी से कहा, "मेरे स्वप्न में मैं एक पिंजड़े के पास पहुँचा उसमें वन्य पशु भरे पड़े थे । पिंजड़े के सामने भूखे सिंह, बाघ, और भालू थे । पिंजड़े के पीछे एक नम्र, भोला - भाला, सुन्दर आँखोंवाला एक हिरण था । मैं उस हिरण को खिलाने का प्रयास करता रहा, परन्तु वे हिंसक- भूखे वन्य - पशु जो पिंजड़े के सामने थे, सारा भोजन झपट कर खा जाते थे । अन्त में वह भूख से पीड़ित हिरण दुर्बल होता जाता है और मर जाता है ।"

उस परामर्शदाता पादरी ने उस व्यक्ति से कहा, "वह हिरण; वास्तव में आपका वास्तविक रूप है, आपका उत्तम "स्व" - आपका वह रूप जिसे परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया है । सिंह, बाघ और भालू संभवतः लालच, सांसारिक

इच्छाएँ, क्रोध, कामुकता, इत्यादि हो सकते हैं जो कि भूख से पीड़ित हैं, जो कि आपके जीवन के सबसे उत्तम अंश हैं ।

इस अध्याय के अन्तर्गत कौन सी बातें हैं जिन्हें आप इस स्वप्न से जोड़ सकते हैं ? इस स्वप्न - कहानी को आप अपने जीवन की आत्मा-यात्रा से किस प्रकार संबंधित कर सकते हैं ? अपने जीवन की आज की परिस्थिति में ?

2. ख्रिस्त कार्यान्वन

कई लोगों के लिए स्व संपूर्णता अथवा स्वबोध उनके जीवन का सर्वप्रथम और सर्वप्रधान लक्ष्य होता है । लेखक के अनुसार सुसमाचार का सर्वोच्च लक्ष्य तो ख्रिस्त - कार्यान्वन है, अर्थात् ख्रिस्त को जीवन में यथार्थरूप में उतारना है ।

इस विचार पर ध्यानाकर्षित कीजिए । यीशु को आपके जीवन में उसके पवित्र जीवन को पुनः स्थापित करने के लिए अर्थात् इस अनुमति सिद्धान्त से पूर्व कौन से परिवर्तनों का होना आवश्यक है ताकि ख्रिस्त का आपके जीवन में आगमन एक वास्तविकता बन जाये ?

सच्ची पवित्रता हमेशा निस्वार्थ सेवा के माध्यम से अभिव्यक्त की जाती है । ख्रिस्त क्रियान्विति और मसीही सेवा परस्पर किस प्रकार संबंधित हैं ?

जॉन वेस्ली का कथन कि एक व्यक्ति "विश्वास के एक कण के साथ" अपने और दूसरों के लिए" व्यतीत करेगा आपका इस दिशा में क्या विचार है ?

यदि आपका कोई आत्मिक मित्र है अथवा प्रार्थना - साथी है, इस विषय पर परस्पर चर्चा करें और प्रार्थना करें ।

3. स्वाभाविक स्वार्थ (अहम्)

कई लोगों की धारणा है कि यदि आप एक बार पूर्णरूप से शुद्ध किए जा चुके हैं, तो स्वाभाविक अहम् अपने समस्त मनोवैज्ञानिक और भौतिक प्रवृत्तियों और इच्छाओं को स्वयं संभाल लेंगे । यद्यपि, पौलुस और लेखक ग्रेट हाऊस की धारणा है कि हमारे बीच जो सबसे अधिक पवित्र हैं उन्हें भी अपने शरीर को "दास बनाना" है, अर्थात् शरीर की समस्त मनोवैज्ञानिक और दैहिक इच्छाओं और प्रवृत्तियों को अपने अधीनस्थ करना होगा । आपका इस दिशा में क्या विश्वास है ? आपकी आत्मिक यात्रा के कौन से अनुभव इस प्रश्न पर प्रकाश डालते हैं ?

4. पापमय स्व (अहम्) को क्रूस पर चढ़ाना होगा, परन्तु यह आपको परमेश्वर द्वारा दिये गए स्व - स्वभाव को नष्ट करने से भिन्न है । यह अन्तर कितना

महत्त्वपूर्ण है ? क्या व्यक्तित्व का होना मानवता में परमेश्वर की समानरूपता का अंग है ?

कार्यसाधन

प्रार्थना-सभाओं, कक्षाओं और यहाँ तक अध्यायों के पठन के उपरान्त स्वस्तिवाचनों की आवश्यकता होती है । और अब जब आप ''पवित्र भूमि'' पर खड़े हैं, यह अध्याय प्रगट करता है - इस के लिए एक स्वस्तिवाचन लिखें । आप को इस दिशा में मार्गदर्शन के लिए हम निम्नलिखित उदाहरण दे रहे हैं :

ओ महिमामय यीशु हमें क्षमा कीजिए कि हम कैसे रहे हैं;
अपने पवित्र अनुशासन से हम जैसे हैं, उस से अनुशासित करें ।
अपने अनुग्रह के द्वारा हमें आदेश दें कि हमें कैसा होना है,
और अन्त में हमें अपने उपहार का दान दीजिए ।

- जॉन वेस्ली

हे प्रभु, ... कोई भी घमण्ड अथवा स्वार्थ, कोई लालच अथवा प्रतिशोध, कोई तुच्छ कल्पना मेरी आत्मा को प्रदूषित न करे । मेरी देह को मेरी आत्मा की दासी बनायें और मेरी देह और मेरी आत्मा दोनों ही यीशु के दास बने रहें ।[6]

और जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश - अंश करके बदलते जाते हैं ।

2 कुरिन्थियों 3 : 18.

7

परिवर्तित रूप

जब मूसा सीनै पर्वत से नीचे उतरा, और उसके हाथ में, वाचा की दो तख्तियां थी, "तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण उसके चेहरे से किरणें निकल रही थीं" (निर्गमन 34 : 29) । हारून और इस्राएलियों की आँखें उसके मुख के तेज से कहीं अन्धी न हो जायें, मूसा ने अपने चेहरे को एक वस्त्र से ढाँप लिया जबकि वह उनसे बात कर रहा था ।

मूसा की वाचा को ख्रिस्त की नई वाचा से जब तुलना की जाती है तो पौलुस, मूसा के मुँह को ढाँपने में एक गहरा अभिप्राय पाता है : इस सच्चाई' को छुपाने के लिए कि जिस अलौकिक महिमा से उसका मुख दमक रहा था, वह मन्द पड़ती जा रही थी । "हम मूसा के अनुरूप नहीं हैं," पौलुस इसे घोषित करता है, "जिसने अपने मुँह पर परदा (आवरण) डाला था ताकि इस्राएली उस घटनेवाली वस्तु के अन्त को न देखें । परन्तु वे मतिमन्द हो गए, क्योंकि आज तक पुराने नियम को पढ़ते समय उनके हृदयों पर वही परदा पड़ा रहता है; पर वह मसीह में उठ जाता है । और आज जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है, तो उनके हृदय पर परदा पड़ा रहता है । परन्तु जब कभी उनका हृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह परदा उठ जाएगा । परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है - जिस प्रकार

दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं ।'' (2 कुरिन्थियों 3 : 13, 18)

इस अध्याय का शीर्षक फिनिख्स एफ. ब्रीस के एक उपदेश से लिया गया है, ब्रीस महोदय अपने विश्वास को प्रकट करते हैं कि शुद्धिकरण का सारतत्त्व विश्वासी के यीशु ख्रिस्त की अनुरूपता में बदला जाना है ।

डॉ. ब्रीस, जॉन वेस्ली की शुद्धिकरण की प्रतिक्रिया की बुनियादी धारणा की अभिव्यक्ति कर रहे थे, जिस के अन्तर्गत विश्वासी, 'परमेश्वर के रूप में नया बन जाता है, अर्थात् परमेश्वर की धार्मिकता और यथार्थ पवित्रता में ।''[1]

इस प्रक्रिया में अनेक संकट संलग्न होते हैं, जिन में विश्वासी, पाप की ग्लानि और उसकी शक्ति से मुक्त किया जाता है (मन - परिवर्तन के समय), पाप के मूल में और पापमय स्थिति (सम्पूर्ण से अन्त में, पाप के प्रभाव से मुक्त हो जाता है (महिमा की स्थिति) । परन्तु यह प्रक्रिया एक सम्पूर्ण एक अंश में एक ही साध्य के लिए सम्पन्न होती है - व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों ही रूपों में हमें बचाने के लिए होती है, ''मसीह के संपूर्ण व्यक्तित्व में परिवर्तित होने तक'' (इफिसियों 4 : 13)।

ख्रिस्त के साथ निरन्तर बढ़ते संबंध के साथ यह कहते हुए ।

ओ तेरे तुल्य होकर, ओ तेरे तुल्य होकर,
हे धन्य मुक्तिदाता, तू जितना पवित्र है !
अपनी मधुरता में आ, अपनी पूर्णता में आ,
अपनी छवि मेरे हृदय - पटल पर अंकित कर दे ।

- थॉमस ओ. किशोल्म

शुद्धिकरण

जब आदम पाप में गिरा, उसने परमेश्वर से प्राप्त छवि (स्वरूप) को खो दिया, जिस में (अनुरूपता) उसकी सृष्टि हुई थी, और परमेश्वर की महिमा से वंचित कर दिया गया, जिसमें वह मूल रूप से परिपूर्ण था, (अपने अस्तित्व में) परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो,

दूसरा आदम इस संघर्ष से,
बचाने लिए अवतरित हुआ ![2]

ख्रिस्त, दूसरा आदम, परमेश्वर के द्वारा मुक्तिदाता ठहरा (देखिए कुरिन्थियों 4 : 4) ख्रिस्त में होना, "नये मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया" (इफिसियों 4 : 24) ।

हमारा परमेश्वर की अनुरूपता में नवीनिकरण, परमेश्वर की महिमा में निरन्तर विकासशील होनेवाला परिवर्तन है । पौलुस कुलुस्सियों की कलीसिया को अपने पत्र में लिखता है, "तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है । ओर एक नये मनुष्यत्व को पहन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है" (कुलुस्सियों 3 : 9 - 10) । निस्सन्देह हम "उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं, उस प्रभुत्व के द्वारा जो आत्मा है (जीवनदायक आत्मा)" (2 कुरिन्थियों 3 : 18, 1 कुरि. 15 : 48 को भी देखिए) ।

क्योंकि मैं, पाप का बालक हूँ,
पर उसकी छवि में रहना चाहता हूँ !
शान्तिदाता आ गया है !

- फ्रँक बॉथम

परन्तु साथ ही साथ यह भी सच है कि हम सब जो मसीही हैं, यहाँ तक कि जो यथार्थ में शुद्ध किए गए हैं, "परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3 : 23); उस महिमा को अपने मूल रूप में पुनः प्राप्त करना यीशु के द्वितीय आगमन के समय ही संभव है, हम उस आगमन की राह देख रहे हैं । उस घड़ी वह हमारे उद्धार को पूरा करेगा : "हमारी दीन - हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा" (फिलिप्पियों 3 : 21) ।

परन्तु, "यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें" (1 यूहन्ना 1 : 7), ख्रिस्त जो परमेश्वर का प्रतिरूप है" (2 कुरिन्थियों 4 : 4)" हमें क्रमशः अपनी अनुरूपता में परिवर्तित करता है, यद्यपि मूसा की भांति, हमें इस परिवर्तन का ज्ञान नहीं होता (देखिए निर्गमन 34 : 29) । परन्तु एक दिन सभी उसके अनुग्रह की स्तुति करेंगे, "जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है" (1 यूहन्ना 3 : 2) ।

परमेश्वर की महिमा हमारे हृदयों में देदिप्यमान होती है,
और हमारा परिवर्तन आरंभ होता है ।

आरंभिक शुद्धिकरण

हमारा रूप परिवर्तन हमारे मनःपरिवर्तन से आरंभ होता है । यह पौलुस ने जो 2 कुरिन्थियों में लिखा है उस से स्पष्ट हो जाता है :

"मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश, उन अविश्वासियों के लिए, जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वरने अन्धी कर दी है, यह नाश होने के लिए परदा पड़ा है ।" परन्तु पौलुस अपने विषय में और हम सबके लिए कह सकता है जो विश्वास करते हैं, "इसलिए कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, कि अंधकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो" (2 कुरिन्थियों 4 : 4, 3, 6) ।

पौलुस के सन्दर्भ में, यह परिवर्तन का चमत्कार उस समय आरंभ हुआ, जब पुनरुत्थानित ख्रिस्त का सामना उसे दिमासकस के मार्ग पर यात्रा करते समय हुआ ।

हमारे पक्ष में, परिवर्तन ख्रिस्त की अनुरूपता में उस समय आरंभ होता है जब हम पश्चाताप और विश्वास के साथ क्रूस पर चढ़े, पुनरुत्थानित हुए यीशु से साक्षात्कार करते हैं । उस क्षण, "यीशु ख्रिस्त के मुख पर परमेश्वर की महिमा की ज्योति हमारे हृदयों पर चमकती है और हमारा रूप परिवर्तन उसकी अनुरूपता में होना आरंभ होता है ।

परन्तु यह चमत्कारिक रूपान्तर कोई व्यक्तिगत विषय नहीं है । हमें अपने विश्वास को सामूहिक रूप से प्रकट करना है और बपतिस्मा विधि से स्वयं को ख्रिस्त की देह में परिचित कराना है । यह हम सब के लिए कहा जाना आवश्यक है, जैसा कि नये नियम के समस्त मसीही विश्वासियों के लिए कहा गया था, "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्हों ने मसीह को पहन लिया है; जिसके शरीर में "अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न कोई नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो" (गलतियों 3 : 27, 28) ।

उसके प्रेम में भय आता है ।

उसके विश्वास में सन्देह आता है ।

उसकी नम्रता में घमण्ड आता है ।

सम्पूर्ण शुद्धिकरण

"न्याय्यता से", जॉन वेस्ली कहते हैं, "हम पाप की ग्लानि से मुक्त किए जाते हैं, और परमेश्वर के पक्ष में बचाए जाते हैं; शुद्धिकरण से हम पाप की शक्ति और

उसके कारण से बचाये जाते हैं, और इस भांति उसकी छवि में बचाए जाते हैं ।[3]

परमेश्वर की छवि, के सन्दर्भ में वेस्ली की धारणा यह है "पवित्र, नम्र, शान्त, परमेश्वर का सहनशील प्रेम और मनुष्य.' "ऐसा प्रेम उस समय आरंभ होता है जब हम न्याय संगत ठहरते हैं ।" जैसे, "सब अनुभव, और साथ ही साथ पवित्रवचन जैसे दर्शाता है ।"[4]

परन्तु नये दीक्षान्त मसीही में, यह प्रेम "सन्देहयुक्त अथवा भययुक्त" और शेष "मिश्रित" पापमय स्वप्रेम-रूप होता है ।[5] नये विश्वास की दीप्ति में, नव दीक्षित मसीही अपने पूर्व विश्वास के अवशेष पापों से अवगत न हों । परन्तु शीघ्र ही वे जानते हैं कि उनमें कहीं न कहीं स्वार्थमय पाप हुआ है जो ख्रिस्त के नियंत्रण से प्रतिस्पर्धा कर रहा है, और इस प्रकार उनके आनन्द और शान्ति में बाधा उत्पन्न कर रहा है । परन्तु डॉ. ब्रीस संबोधित करते हैं कि आगे संकट खड़ा है : "इस नव-प्राप्त जीवन का विरोध है, उसके ही जीवन में विरोध-संघर्ष है; ... यद्यपि वह परमेश्वर से प्रेम तो करता है, परन्तु अपने सम्पूर्ण मन से नहीं और ... "स्व" भी उस में सम्मिलित है । उसके प्रेम में भय व्याप्त है । उसके विश्वास में सन्देह उभरता है । उसकी दीनता - नम्रता में घमण्ड घर करने लगता है । उसकी भक्ति में लालसा और स्वार्थ आने लगते हैं । उसके मन में संघर्ष चलता रहता है । वह यीशु की पवित्र आत्मा की ओर निहारता है, पवित्रात्मा के प्रकाश में इसके दर्शन करता है और आनन्दविभोर हो उठता है ।"[6]

परन्तु वह मसीही धन्य है जो अपने शेष पापों से अवगत हो जाता है और इनसे मुक्त होने के लिए व्याकुल हो उठता है । "धन्य वे हैं, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएँगे" (मत्ती 5 : 4) यह यीशु के वचन हैं । ऐसों के लिए, वेस्ली का कथन है, "परमेश्वर तत्पर हैं - उस वचन को पूरा करने के लिए जिसे परमेश्वर ने सर्वप्रथम अपने प्राचीनों के साथ किया था, और उन में परमेश्वर की सभी संतानों में : "और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का ख़तना करेगा, कि तू अपने अपने यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे" (व्यवस्थाविवरण 30 : 6)[7]

सिद्ध प्रेम- प्रतिज्ञा "शुद्ध प्रेम" की प्रतिज्ञा है" - वह अमिश्रित प्रेम है जिसमें स्वार्थमय कामना अथवा स्व मूर्तिपूजा की वासना नहीं होती । सम्पूर्ण शुद्धिकरण के गंभीर संकट - काल में, हृदय स्व-प्रेम के पापमय बंधन से शुद्ध किया जाता है । वेस्ली ने इसे इस तरह समझाया है, "जबतक उनकी आत्मा में यह सारभौम परिवर्तन नहीं आया उनकी सम्पूर्ण पवित्रता मिश्रित थी ... । अब उनकी सम्पूर्ण आत्मा स्वयं

में संयत है । अब उसमें कोई विरोधी तत्त्व अथवा आकर्षण नहीं रहा : सभी कुछ शान्त और सामंजस्यपूर्ण है (आन्तरिक)''[8]

परन्तु इस आन्तरिक परिवर्तन के पश्चात् वेस्ली आगे कहते हैं, ''वे अभी भी महिमा में बढ़ रहे हैं, ख्रिस्त - ज्ञान में विकसित हो रहे हैं; परमेश्वर की छवि और प्रेम में अग्रसर हो रहे हैं; और यह क्रम न केवल मृत्यु तक परन्तु अनन्तकाल तक निरंतरित चलता रहेगा ।''[9]

सम्पूर्ण पवित्रीकरण में, वेस्ली निष्कर्ष में कहते हैं, ''हृदय सम्पूर्ण पाप से शुद्ध किया जाता है, और परमेश्वर और मनुष्य के शुद्ध प्रेम से भर जाता है । और वह प्रेम निरन्तर बढ़ता ही चला जाता है, उस समय तक जब तक, 'हम परमेश्वर की सभी इच्छाओं में नहीं बढ़ते क्योंकि वह हमारा शीर्ष है; ख्रिस्त के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में बढ़ते जाते हैं ।''[10]

अन्तिम पवित्रीकरण (शुद्धिकरण)

यहाँ एक याचिका पत्र अवश्य दिया जाना चाहिए । यद्यपि मेरा हृदय पौलुस की भाँति पुकारता है - ''मैं ख्रिस्त और उसके मृत्युंजय (पुनरुत्थान) के सामर्थ्य को जानूँ'' मैं हमेशा अवश्य उसके सम्मुख स्वीकार करूँ, ''यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ ... परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ, जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है'' (फिलिप्पियों 3 : 10, 12-14) । सम्पूर्ण निष्ठा और नम्रता में होकर मैं प्रतिदिन स्वीकार करता हूँ,

मैं वह मनुष्य हूँ जिसे परमेश्वर बना रहा है,
एक आकृति की तरह परमेश्वर मुझे निखार रहा है;
परमेश्वर मुझे परिवर्तित और सुधार रहा है,
परमेश्वर का ध्येय मेरी सिद्धता में निहित है ।
परन्तु मैं अभी तक सिद्ध नहीं किया गया हूँ ।

प्रेरित प्रचारक पौलुस और परमेश्वर के अन्य संत, यद्यपि सभी प्रौढ़ और अनुभव-सम्पन्न थे, सभी निस्संकोच ई. स्टेनली जोन्स के साथ सहमत हैं कि हम केवल ''निर्माण प्रक्रिया में मसीही हैं ।''

मैं एक ऐसे प्रौढ़ और ख्रिस्त सदृश महान संत का स्मरण करता हूँ जो मुझसे बहुधा कहा करते थे, ''भाई ग्रेट हाऊस, कभी कभी मैं सोचता हूँ कि मैं अत्याधिक

पार्थिव (सांसारिक) हूँ । कभी-कभी हम वास्तव में इतने उदास-मन हो जाते हैं, जबकि हमें प्रसन्न चित्त होना चाहिए । कई बार हम इतने निराश हो जाते हैं जबकि हमें आनन्दमग्न होना चाहिए । कई बार हम मनुष्यों की भाँति व्यवहार करते हैं जबकि हमारी इच्छा होती है कि हम ख्रिस्त के सदृश बनें । स्मरण रहे : हमारी देह फिर भी उद्धारहीनावस्था में ही होती है ।

फिर भी यह सब कुछ दिव्य योजना आधारित होता है । "कार्ल बार्थ कटाक्षपूर्ण कथन प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं, "यदि मसीही धर्म पूर्ण रूप से व्याकुल धर्मज्ञान नहीं होता, इसमें ख्रिस्त से कोई संबंध नहीं रह जाता ।"[11] "यह तो इस वर्तमान की पीड़ा है" - पेन्तेकुस्त और पॅरॉशिया के मध्य (देखिए 8 : 18-23) जो हमें प्रार्थनामय और ख्रिस्त - निर्भर बनाये रखती है ।

अब हम वैसे नहीं हैं जैसे पहले थे, परन्तु अभी भी वैसे नहीं हैं जैसे हम होंगे - जब यीशु ख्रिस्त हमारी देहों को मुक्त करने पुनः आयेंगे, और तब हमारा पूर्ण शुद्धिकरण होगा । पौलुस को सुनिये वह क्या लिखता है जब उसने कुरिन्थियों को पत्र लिखा :

देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ : कि हम सब तो नहीं सोएँगे, परन्तु सब बदल जायेंगे । और यह क्षण भर में, एक पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा । और जब यह नाशमान अविनाश को पहन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा कि जय ने मृत्यु को निगल लिया । हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही ? हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा ? मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था है । परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवंत करता है (1 कुरिन्थियों 15 : 51 - 52, 54 - 57) ।

यह 'इस आशा में" - वह महिमामय आशा - जो कि ख्रिस्त के साथ है, जिसके द्वारा हमारा उद्धार हुआ ।" (रोमियों 8 : 24) ।

आपकी आत्मिक यात्रा के लिए प्रकाश

आधारस्तंब

इन वाक्यों को इस अध्याय के अन्तर्गत दी गई सूचनाओं से पुनरावृत्ति के लिए पूर्ण कीजिए

- पवित्रीकरण
- आरंभिक पवित्रीकरण
- सम्पूर्ण पवित्रीकरण
- अन्तिम पवित्रीकरण

आत्मिक सीढ़ियाँ

आज "मुख्य दस" सूचियाँ बड़ी लोकप्रिय मानी जाती हैं । इस अध्याय में से चुनकर अपनी मुख्य दस शब्दों, वाक्यांशों, अथवा विचारों की सूची बनाइए जिस के द्वारा आप को बड़ी प्रेरणा, शान्ति, उत्साह अथवा आशा प्राप्त होते हैं । उदाहरण के लिए, "अमिश्रित प्रेम स्वमूर्तिपूजा के साथ," मेरी दस मुख्य बातों में संभवतः हो सकता है । अपने चुनावों से पूर्ण कीजिए - सब से अर्थपूर्ण चुनाव को क्रमांक "एक" के लिए सुरक्षित रखें

10

9

8

7

6

5

4

3

2

1

कार्यसाधन

यहाँ चार्ल्स वेस्ली के गीत के दो पद प्रस्तुत हैं । मेरे 1849 के संस्करण का गीत जो कि लोगों के उपयोग के लिए मॅथोडिस्ट कलीसिया की गीत पुस्तक क्रमांक 408 हैं, प्रस्तुत है । इसका कोई शीर्षक नहीं है । आपका गृह कार्य यह है कि यदि आप इसे स्वीकार करते हैं, तो इस में एक पद अपनी ओर से जोड़िए । यह पहला, दूसरा अथवा अन्तिम पद बन सकता है । इसके अन्तर्गत आप स्वयं के मनोभावों का समावेश कर सकते हैं जो कि आपकी आत्मिक आवश्यकता अथवा परमेश्वर की स्तुति हो सकता है । आप के गृहकार्य का दूसरा भाग यह है कि आप इस गीत को उपयुक्त शीर्षक दीजिए ।

वह चाहता है कि मैं पवित्र बनूँ;
उस पवित्रता की अनुभूति का मैं अनुभव करना चाहता हूँ;
वह सम्पूर्ण दिव्य सादृश्यता

मेरे उद्धारकर्ता सम्पूर्ण धार्मिक अभिलाषा ।
मेरे उद्धारक आ, आ, और मुझे सम्पूर्ण कर;
मेरे समस्त पापों को दूर हटा दे;
मेरी आत्मा को पूर्ण चंगाई दे,
मुझे सिद्ध पवित्रता और दिव्य प्रेम दे ।

आपका पद

आपका शीर्षक :

शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें
पूरी रीति से पवित्र करे;
और तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह
हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष
सुरक्षित रहें। तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है,
और वह ऐसा ही करेगा।

- 1 थिस्सलुनीकियों 5 : 23-24

8

सम्पूर्ण पवित्रीकरण के लिए एक प्रार्थना

जब पवित्र जीवन के आधार की मीमांसा की जाए तो, हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 1 थिस्सलुनीकियों से अधिक महत्त्वपूर्ण कोई अन्य पुस्तक नहीं, सामान्यतः अनेक विद्वानों की यही धारणा है, पौलुस के आरंभिक पत्र (लगभग 50 ईस्वी) इसी श्रेणी में आते हैं, अतः मसीही साहित्य के अन्तर्गत यही अति प्राचीन साहित्यिक सामग्री आज अस्तित्व में है ।

प्रमुख महत्व की दृष्टि से इस दिशा में 1 थिस्सलुनीकियों में पौलुस के अन्य पत्रों की अपेक्षा पवित्रता संबंधित उच्च शब्दावलियों को सम्मिलित किया जा सकता है । यह कहा जा सकता है कि पौलुस के सम्पूर्ण पत्रों का यदि औसत निकाला जाये तो इस पुस्तक में दो गुणा प्रतिशत पाया जाता है । पौलुस द्वारा दी गई आशीर्वादात्मक प्रार्थना जो इस पुस्तक के 5 : अध्याय 23-24 पदों में संकलित है, एक मात्र अत्यन्त स्पष्ट सन्दर्भ है जो उसकी सम्पूर्ण रचनाओं में समस्त पवित्रीकरण के

अध्ययन क्षेत्र में आता है । यह सन्दर्भ प्रचारक के उद्देश्य का इस पत्र के अन्तर्गत व्याख्या करता है, और प्रथम थिस्सलुनीकियों में पवित्रता की केन्द्रीय साक्षियों का समावेश भी उपलब्ध है ।[1]

जब मैं एक नवयुवक मसीही था, मैंने 1 थिस्सलुनीकियों के पाँच अध्याय अपनी सांध्य-भक्ति के अवसर पर एक ही समय पढ़ डाले थे । उस अवसर पर मैंने मसीही पवित्रता के सन्दर्भ में जो वर्णनात्मक लेख पढ़े और मुझे एक नये नाजेरीन विश्वासी के रूप में उस समय इस दिशा में सन्दर्भित विषय का ज्ञान दिया गया, उसका सारतत्व मैंने उस शाम अपने पाँच अध्यायों के पाठ्य अध्ययन में प्राप्त किया, वह मेरे अध्यात्म ज्ञान का प्रमुख दिशानिर्देश बन गया, मेरे आध्यात्मिक ज्ञान का गुरु । आगे पढ़ने से पूर्व, अपने आत्मिक हित के लिए 1 थिस्सनुनीकियों से सलाह लीजिए । कुछ समय निकालकर इन पाँच छोटे आकार के अध्यायों का पाठन करें; तत्पश्चात् अपनी बाइबल खोलें उस रूपरेखा पर विचार करें जो आगे है ''पवित्रशास्त्रों में ढूंढते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं'' (प्रेरितों 17 : 11).

1 थिस्सलुनीकियों सच्चे विश्वासी थे

(1 : 1 - 2 : 16)

प्रत्येक बात जो पौलुस ने अपने थिस्सलुनीकियों के विषय में कहीं, जो कि नये विश्वासी थे, उनकी गवाहियों से उनके मसीही विश्वासी होने का वास्तविक परिचय मिलता है । उन्होंने अपने विश्वास, आशा और प्रेम का एक सच्चे मसीही अनुभव का प्रमाण सिद्ध किया (1 : 3) - ''उनका नैतिक जीवन परमेश्वर के प्रति निष्ठा, और अपने अन्तिम उद्धार की आशा, और भाईचारे की प्रेमासक्ति भावना का प्रतीक हैं।''[2]

थिस्सलूनीकियों के उद्धार के चुनाव का उदाहरण स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया । उनके पास सुसमाचार ''न केवल वचन मात्र ही में परन्तु सामर्थ्य और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा ।1 (पद 4 - 5)'' सताए जानेके बावजूद'' ''उन्होंने'' बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर विश्वास किया ''और इस प्रकार सब विश्वसियों के लिए आदर्श स्वरूप बने'' (पद 6-7) और वे, ''मूरतों से परमेश्वर की ओर फिर ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करें और उसके पुत्र के स्वर्ग से आने की बाट जोहते रहें ।'' (पद - 9 - 10) ।

दूसरे अध्याय में उनके विश्वास की कथा निरन्तर चलती रहती है, साथ ही उनके प्रेममय संबंध जो प्रचारक के साथ थे उसका भी उल्लेख मिलता है । थिस्सलूनीकियों की कलीसिया, ''परमेश्वर की उन कलीसियाओं की चाल चलने लगे, जो यहूदिया में मसीह यीशु में है, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दुःख पाया, जैसा उन्होंने

यहूदियों से पाया था'' यहूदियों ने यीशु को और भविष्यवरताओं को मार डाला'' (2 : 14 - 15) ।

2. थिस्सलुनीकियो का विश्वास कठोर क्लेशों की कसौटी पर जांचा गया (2 : 17 - 3 : 9)

पौलुस का थिस्सलूनीके प्रचार में एक बड़े आन्दोलन का कारण बन गया, वहाँ जो अविश्वासी यहूदी थे उन्होंने ''डाह से भरकर बाजारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे ... तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज दिया'' (प्रेरितों के काम 17 : 5, 10; 1 - 10) को भी देखिए) । ऐसी परिस्थिति में पौलुस को वहाँ से जाना पड़ा। - ''व्यक्तिगत रूप से परन्तु हृदय से नहीं ''(1 थिस्सलूनीकियों 2 : 17) ''हम तो बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुँह देखने के लिए और भी अधिक यत्न किया,'' पौलुस लिखता है, ''परन्तु शैतान हमें रोकता रहा । भली हमारी आशा, या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है ? क्या हमारे प्रभु यीशु के सामने उसके आने के समय तुम ही न होगे ? हाँ, हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो ।'' (पद 17 - 20) ।

जब वह अधिक सहन कर सका, पौलुस ने तीमुथियुस को एथेन्स से (जहाँ वह बेरिया से गया था) भेज दिया ताकि, ''वह तुम्हें स्थिर करे, और तुम्हें तुम्हारे विश्वास के विषय में समझाए ''(3 : 2)'', कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा परिश्रम ''व्यर्थ तो गया हो'' (3 - 5 पद)

पौलुस आगे लिखता है, ''पर अभी तीमुथियुसने जो तुम्हारे पास से हमारे यहाँ आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया ... क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं'' (पद - 6 - 8) । जो उत्साहवर्धक विवरण प्रचारक को प्राप्त हुआ वह परमेश्वर के सम्मुख उनके लिए एक आनन्दमय सुअवसर था (पद - 6, 8 - 9) ।

3. थिस्सलुनीकियों के विश्वास में अवशेष अभाव था

(3 : 10 - 4 : 12)

यद्यपि उन में सहनशक्ति, अर्थात् क्लेशों को सहने और उन पर विजय प्राप्त करने के कारण, अदम्य सहनशक्ति और साहस था और इसका उदाहरण उनके पारस्पारिक और परमेश्वर के प्रति प्रेम का परिचायक था, फिर भी हम पढ़ते हैं कि पौलुस, ''हम रात-दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं, कि तुम्हारा मुँह देखें और तुम्हारे विश्वास की घटी को पूरा करें'' (3 : 10) । दूसरे उपवाक्य में ग्रीक क्रिया

है जिसका अर्थ हैं "पूर्णता प्रदान करना", अथवा "सामंजस्यता लाना" अथवा "समरसता की भावना।" इस क्रिया का प्रयोग यहाँ इस आशय हेतु किया गया है ताकि वह वस्तु जिसका अभाव उन विश्वासियों में जिसके लिए उन्हें परमेश्वर ने चुना था,अपने विश्वास के क्रियान्वन में पूरी रीति से उपयोग करें। (इफिसियों 4:102)[3]

पौलुस की थिस्सलुनीकियों के प्रति, उन्हें "अपने सामने देखने" में धर्मशास्त्रीय महत्व निहित है। कलीसिया के सिद्ध विश्वास के लिए धर्मप्रचारक - उपस्थिति सामान्यतः अपेक्षित समझी जाती है (रोमियों 1 : 11)[4] अचानक थिस्सलुनिका से अलग हो जाने के कारण अब धर्म-प्रचारक उनके पास व्यक्तिगत रूप में भेंट के लिए आतुर प्रतीत होता है ताकि उनके अपर्याप्त विश्वास और अनुभव को सिद्धता प्रदान कर सके।

थिस्सलुनीकियों में यह अभाव अथवा अपूर्णता के दो क्षेत्र कहे जा सकते हैं : उनके प्रेम में और उनकी पवित्रता के सन्दर्भमें (3 : 11 - 4 : 12). ये दोनों ही क्षेत्र वास्तविक थे, परन्तु उनकी प्रेम में सिद्धता की आवश्यकता थी और उनकी पवित्रता में पूर्णता की भी।

उनके अभाव का कारण प्रेम और पवित्रता से संबंधित था।

इन शेष अभावों को संबोधित करने में प्रचारक का उद्देश्य स्पष्ट सकारात्मक कहा जा सकता है। उसका यह व्यवहार उसकी प्रार्थना में कलीसिया के लिए स्पष्ट अभिव्यक्त होता है: "अब हमारा परमेश्वर और पिता आप ही और हमारा प्रभु यीशु, तुम्हारे यहाँ आने के लिए हमारी अगुआई करें। और प्रभु ऐसा करे, कि जैसा हम तुम से प्रेम रखते हैं; वैसा ही तुम्हारा प्रेम भी आपस में, और सब मनुष्यों के साथ बढ़े और उन्नति करता जाये। ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे, कि जब तुम्हारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें" (3 : 11 - 13)। यह प्रार्थना स्पष्ट रूप से प्रकट करती है प्रचुर प्रेम और निर्दोष रहना पवित्रता के सन्दर्भ में ये दो पक्ष वास्तव में एक ही हैं।

जब हम 4 : 9 - 12 की ओर देखते हैं हमें पुनः पौलुस के सकारात्मक, उनके (थिस्सलुनीकियों) प्रेम की पूर्णता के पक्ष में आवश्यक दृष्टिकोण स्पष्ट परिलक्षित होता है : "किन्तु भाईचारे की प्रीति के विषय में यह अवश्य नहीं, कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूँ; क्योंकि परस्पर प्रेम करना तुमने स्वयं ही परमेश्वर ही से सीखा है ... इस में और भी विकसित होते जाओ।" (4 : 9 - 10, देखिए इफिसियों 3 : 14 - 19)। उनकी पवित्रता के संबंध में; धर्मप्रचारक यही दृष्टिकोण रखता है जब वह

लिखता हैं, निदान, हे भाइयों और बहनों, हम तुमसे विनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुमने हम से योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ'' (4 : 1). फिर इसके बाद विशेष धर्म विधान आता है जो यह स्पष्ट करता है कि हृदय और जीवन में पवित्र बने रहने का क्या अर्थ है, जिस संस्कृति में अन्य देवी - देवताओं की अनेक अनैतिक बातें भरी पड़ी हैं, जो अपनी वासनाओं से उत्तेजित किया करती हैं । लियॉन्स इसे इस प्रकार समझाते हैं, ''पौलुस धर्मज्ञान के आधार पर अनुमान लगाकर आगे बढ़ते हैं, कि मसीहीजनों के चरित्र मूर्तिपूजक विश्वासियों से भिन्न होते हैं, कारण परमेश्वर के चरित्र के आधार पर, अन्य धर्मावलम्बी अपने अनुसार व्यवहार करते हैं क्योंकि वे, ''सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते'' (4 : 5, 2 थिस्सलुनीकियों 1 : 8; गलतियों 4 : 9) । पौलुस अपनी नैतिक शिक्षा की विशेषता बताते हुए थिस्सलुनीकियों को धार्मिक उपदेश के द्वारा समझाते हैं कि ''जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, बरन अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पायेंगे'' (2 : 12) - एक ऐसा जीवन जो पवित्रता से पारदर्शी है ।[6]

परमेश्वर ने थिस्सलुनीकियों को ''अशुद्ध होने के लिए नहीं परन्तु पवित्र होने के लिए बुलाया है'' (4 : 7) । ''पवित्रता'' के लिए ग्रीक संज्ञा यहाँ (हेगियसमॉस जो कि पद 3 और 7 में) शुद्धिकरण की प्रक्रिया को परिभाषित करता है : दिव्य कार्य जो कि विश्वासी के सन्दर्भ में ठोस रूप में अभिव्यक्त किया जाता है ।''[7] जो विचार यहाँ प्रस्तुत किया गया है वह यह है कि थिस्सलुनीकियों को परमेश्वर की पवित्रता के राज्य के लिए बुलाया गया था । अतः जो कोई सम्पूर्ण शुद्धिकरण अथवा पवित्रीकरण का तिरस्कार करता है, वह ''मनुष्यों की प्रभुता को नहीं परन्तु परमेश्वर की सत्ता का तिरस्कार करता है, वह जो तुम्हें भी अपना पवित्र आत्मा प्रदान करता है, ''जे. बी. फिलिप्स के द्वारा भावानुवाद ''परमेश्वर हमें जो आत्मा प्रदान करता है वह पवित्र आत्मा है, यह निरर्थक नहीं'' (पद 8) । यथार्थ पवित्रता कोई मानवीय सिद्धान्त नहीं है, यह तो शुद्ध - पवित्र करनेवाली आत्मा है जिसे हम स्वयं की हानि के लिए तिरस्कृत करते हैं । और पवित्रता को यौन - संबंध - अनुभव की भाँति अवश्य स्वीकार करना है । यद्यपि स्व-मूर्तिपूजा पाप का मूल है, और अनैतिक यौन - संबंध इसका स्पष्ट पहला फल है (देखिए रोमियों 1 : 21 - 27; गलतियों 5 : 19) । पवित्र जीवन तो नैतिक पवित्रता का जीवन है ।

4. धर्म - प्रचारक थिस्सलुनीकियों के लिए सम्पूर्ण पवित्रीकरण के सन्दर्भ एक प्रार्थना से समाप्त करता है, ''शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे;

और तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे - पूरे निर्दोष सुरक्षित रहें । तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा" (5 ; 23 - 24) ।

यह प्रार्थना स्पष्ट रूप से "पत्री की शिखर" है । यह पौलुस की "इच्छा प्रार्थना" की पुनरावृत्ति है जो 3 : 9 - 13 में संकलित हैं, और समस्त महत्त्व पूर्ण तत्वों को जो उसके निर्देशों में 4 : 1 से 5 : 22 में निहित हैं, एक साथ सम्मिलित किया गया है, इस प्रकार उसकी समस्त पत्री के सन्देश का चरमोत्कर्ष कहा जा सकता है । इस प्रार्थना के अन्तर्गत जो पहले आ चुका है, हम उसकी चेतन और उद्देश्यपूर्ण झलकी देखते हैं, अर्थात् एक विस्तृत और सर्वांगीण स्वस्तिवाचन का उदाहरण पाते हैं ।[8]

यह आशीर्वादात्मक प्रार्थना के तीन रूप हैं, विषय की अभिव्यक्ति, विस्तार और पवित्रीकरण की सम्पूर्ण निश्चितता ।

विषय -

"स्वयं परमेश्वर पर विशेष बल दिया गया है, यही इसका सक्रिय विषय है," स्त्रॉस महोदय का यही विचार है ।[9] जब कि पवित्रात्मा पवित्रीकरण कार्यसाधक अभिकर्ता है । (देखिए 2 थिस्सलुनीकियों 2 : 13); यह मानव के सहयोग बिना कार्य नहीं करता, जैसा कि पौलुस का धर्म-उपदेश पवित्र जीवनयापन के सन्दर्भ में स्पष्ट अभिव्यक्त करता है । परमेश्वर का पवित्रता का आह्वान अस्वीकृत किया जा सकता है (देखिए 1/5 थिस्सलुनीकियों 4 : 8) । पवित्र जीवनयापन में आत्मा, पवित्र करता है, प्रेरित और प्रोत्साहित करता है, और कार्य करने के लिए योग्य बनाता है, परन्तु हमारा व्यक्तिगत सहकार्य इस दिशा में पूर्व अपेक्षित है ।[10] जैसा कि ऑग्सटीन तथा अन्य व्यक्तियों का विचार हैं, "बिना परमेश्वर के हम कुछ नहीं; बिना हमारे (सहयोग) परमेश्वर कुछ नहीं करेगा ।

जब कि वास्तविक पवित्रीकरण के लिए हमें परमेश्वर की इच्छा पर छोड़ना अनिवार्य है (देखिए रोमियों 6 : 13, 19) केवल "शान्ति का परमेश्वर ही "(थिस्स - 5 : 23) हमारे सम्पूर्ण पवित्रीकरण को परिणाम दे सकते हैं । पौलुस के लिए यहूदी को जो परमेश्वर की शान्ति मिलती है वह "शलोम' है जो, हितकारी, सिद्ध और धन्य है । यहाँ इसका यह भी अर्थ है, "अन्तिम उद्धार, जो कि अन्तिम आशीष - वरदान है जिसे प्रभु अपने लोगों को प्रदान करते हैं ।"[11]

बिना परमेश्वर के हम कुछ नहीं; बिना हमारे (सहयोग) परमेश्वर हमारे लिए कुछ भी नहीं करेगा ।

पौलुस यहाँ इस क्रिया पद का प्रयोग करता है, जिसके अन्तर्गत यह बताया है कि पवित्रीकरण की पूर्णता उस प्रक्रिया से आरंभ होती है, जब हमारा मनःपरिवर्तन होता है और यह ख्रिस्त के आगमन तक निरन्तर चलता रहता है, अर्थात् यह एक निरन्तर चलनेवाली प्रक्रिया है, जिसकी सम्पूर्णता ख्रिस्त के आगमन के अवसर पर ही पूर्ण होती है । एक विद्वान तो यहाँ तक अपनी धारणा प्रस्तुत करते हैं कि यह क्रियापद यहाँ "अवश्य का अर्थ है 'परमेश्वर के स्वभाव के अनुकूल सामंजस्यता प्राप्त करना,' स्वयं को उसके स्वभावानुकूल गढ़ना ।" इसके अन्तर्गत अवश्य नैतिक सिद्धता निहित होती है, इसमें सीमितता नहीं होती, सम्पूर्णता होती है ।"[12] परमेश्वर स्वयं हमारी समर्पणता में हमें पवित्र करते हैं, हमारे पापों से पूर्णरूप से विमुख होने पर, और हमारे "स्व" के त्याग करने पर उसके कार्य को अपने हृदयों में कार्यानुमति देने पर ही । लियॉन मॉरिस स्पष्ट करते हैं, "जब कि मानवीय तत्व तो होता है, परन्तु इस में मानव को परमेश्वर के प्रति समर्पित करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है (देखिए 4 : 4); क्योंकि प्रमुख बात तो परमेश्वर के सामर्थ्य की है जो इस सिद्धि की प्राप्ति में सहायता करता है, योग्य बनाता हे ।"[13]

विस्तार

"शान्ति का परमेश्वर स्वयं ही तुम्हें पूर्ण रीति से पवित्र करे" (1 थिस्स.) संयुक्त क्रियाविशेषण - "होलोटेलेइस" का प्रयोग केवल नये नियम के अन्तर्गत किया गया है जिसका वास्तविक अर्थ है "पूर्णरूप से और सम्पूर्णता से," "जिस के अन्तर्गत संपूर्णता का भाव निहित है ।" डॅन स्रॉस अपना मत प्रस्तुत करते हैं, "पवित्र की प्रार्थना, सम्पूर्ण पवित्रता के लिए है ।"[14] अर्थात "आरंभ से अन्त तक" के थिस्सलुनीकियों के लिए पौलुस की प्रार्थना सम्पूर्ण नैतिकता और आत्मिक नवीनिकरण के लिए है, चार्ल्स वेस्ली की प्रार्थना का संबंध, जब उसने निम्न गीत लिखा यह था :

हे प्रभु फिर अपनी नई सृष्टि का समापन करें;
हमें पवित्र और निष्कलंक बनाए रखें ।
हमें आप के महान उद्धार का दर्शन कराएँ,
जो आप में पूर्णतः व्याप्त है ।

अन्य लेखक इस क्रिया विशेषण में दूसरा अभिप्राय देखते हैं । लियॉन मॉरिस का अवलोकन हैं, "मुख्य बात यह है कि यह शब्द यौगिक है जिसके प्रथम पद का अर्थ है, "सम्पूर्ण", यदि इसके दूसरे पद के अर्थ का उचित महत्व देखा जाए, तो हमें इसके अन्त को पाने के लिए, इसके अभिप्राय की प्राप्ति के लिए किसी विचार की आवश्यकता होती है, अर्थात् जिसके लिए उसे बनाया गया है ।"[15] तब हमें अवश्य

पूछना चाहिए, तब वह उचित अन्त (गंतव्य) क्या है जिसके लिए हमारी सृष्टि की गई है ?'' ऍडम क्लार्क का इस सन्दर्भ में यह कथन है, ''जिस प्रकार परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति उसे अपने सम्पूर्ण मन, आत्मा, हृदय और सामर्थ्य से प्रेम करें और अपने पड़ोसी को अपने तुल्य प्रेम करे; तो वह व्यक्ति तो सिद्ध प्रमाणित हुआ, जो इस रीति से प्रेम करता है; अर्थात् वह अपनी सृष्टि के अन्त का उत्तर देता है, जिस हेतु उसकी रचना की गई ।'' (मुख्य प्रभाव संकलित)[16]. सम्पूर्ण पवित्रीकरण अपने अन्तिम उद्देश्य अथवा अभिप्राय में सिद्ध प्रेम के लिए ही है ।[17]

पौलुस की थिस्सलुनीकियों के पवित्रीकरण के लिए की गई प्रार्थना में आगे उन्हें पवित्रता को बनाए रखने का भी निवेदन सम्मिलित है । ''तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीहके आने तक पूरे - पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें ।'' (5 : 23) । अधिकांश व्याख्याता ''आत्मा, प्राण और देह'' शब्दावली को एक सामूहिक रूप में स्वीकार करते हैं, मानव - व्यक्तित्व की सम्पूर्णता के सन्दर्भ में देखते हैं । यद्यपि उपदेशक ग्रीक - शब्दावली का ही प्रयोग कर रहा है, वह स्वयं को हीब्रु के रूप में सोच रहा है, उसी तरह जब हमारे प्रभु ने आदेश दिया कि हमें अपने परमेश्वर को अपने पूरे मन, प्राण और हृदय से प्रेम करना चाहिए । (देखिए मत्ती 22 : 37) - अर्थात् अपने पूर्ण व्यक्तित्व से । सम्पूर्ण पवित्रीकरण नैतिक, आत्मिक और सम्पूर्णता में है, आत्मिक स्वास्थ्य परमेश्वर की शक्ति में सुरक्षित ।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन के अवसर पर निर्दोष रखे जाएंगे'' (5 : 23) । निष्कलंकता को इस रूप में प्रभु के आगमन के समय नहीं लिया जाना चाहिए । ''पाए जाएं'' पदावली (टेरेथेरे) के अनुवाद में दोहरे भाव सम्मिलित हैं, केवल सुरक्षित रखने का विचार नहीं, परन्तु इसे सर्वरूप में बचाकर, बनाये रखना है । गॉर्डन पिट्स वाईल्स के अनुसार, यह पदावली, ''उसे, जो पूर्व में अस्तित्ववान् है उसे निरन्तर बनाये रखना है - ताकि उनका पवित्रीकरण प्रभु के आगमन के समय तक बना रहे, अक्षुण्ण बना रहे । वह प्रार्थना कि वे यीशु मसीह के आने तक पूरे - पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें, इस बात का भी भावार्थ रखता है कि वे वर्तमान समय में भी बने रहें''[18] इसी विचार के अन्तर्गत, अर्नेस्ट बेस्ट महोदय लिखते हैं : पवित्रता, कोई अचानक नहीं आजाएगी, जब तक कि वे पहले से ही अर्थात् अभी से ही ''पवित्र'' नहीं हैं, और पवित्रता की खोज में नहीं लगे हुए हैं । यदि विश्वासी न्याय के दिन में सुरक्षित पाये जाते हैं, इसका अर्थ है अभी से उस घड़ी तक न बने रहें तों ।''[19]

मुझ में कितनी धार्मिकता का होना अनिवार्य है ?

"मुझ में कितनी धार्मिकता अवश्य होनी चाहिए ? किसी ने ऐसा प्रश्न किया था । उत्तर : "ख्रिस्त का आगमन किसी भी समय हो, और हम निश्चय ही उसके लिए तैयार रहें ।" यथार्थ रूप में पवित्र किया गया मनुष्य यूहन्ना प्रकाशित करनेवाले के साथ यह प्रार्थना करे, "आमीन । हे प्रभु यीशु आ ।।"

निश्चितता

"तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा ।" (1 थिस्स. 3 : 24) । न्याय्यता के विश्वास की भांति, पवित्रीकरण का विश्वास, "परमेश्वर की महिमा करता है; ... पूर्णरूप से विश्वस्त होने पर कि उसने क्या प्रतिज्ञा की है, जिसे वह करने में सक्षम भी है" (रोमियों 4 : 20 - 21) । "परन्तु वह कौन सा विश्वास है जिसके द्वारा, हम पवित्र किए गए हैं ... पाप से बचाए गए हैं, और प्रेम में पूर्ण किए गए हैं ?" जॉन वेस्ली पूछते हैं । वे इसका उत्तर निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत करते हैं :

यह दिव्य प्रमाण और पूर्ण विश्वास है, पहली बात यह कि परमेश्वर ने इसकी पवित्र वचन में प्रतिज्ञा की है । जब तक कि हम इस दिशा में पूरी रीति से संतुष्ट नहीं हो जाते, तब तक एक पग भी आगे बढ़ाना संभव नहीं । और कोई कल्पना करेगा कि एक शब्द की भी कोई आवश्यकता नहीं जो इस आदि मनुष्य के द्वारा दिये गए वचन में पर्याप्त उपयुक्त नहीं है, कोई और विवरण देने की आवश्यकता नहीं । "फिर मैं तेरे हृदय का खतना करूंगा, और तेरे वंश के हृदय का, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" यह कथन सिद्ध प्रेम के विषय में कितनी स्पष्टता से व्यक्त करता है ! कितने सशक्त ढंग से पाप से बचाए जाने की बात प्रस्तुत करता है ! जब तक सम्पूर्ण मन में प्रेम भरा रहे, उस में क्या पाप के लिए कोई स्थान संभव है ?

यह दिव्य प्रमाण और विश्वास है, दूसरी बात, यह कि यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा है, और वह इसे पूर्ण करने में सक्षम भी है । यह स्वीकार करते हुए कि, "यह मनुष्य के लिए असंभव है", फिर भी इस दिशा में यह देखने में कोई कठिनाई नहीं, "परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है" ... यदि परमेश्वर कहता है, वह पूरा किया जाएगा ...

तीसरी बात यह है, दिव्य प्रमाण और विश्वास यह कि वह सक्षम है और अभी करने को तत्पर है । और क्यों न हो ? उसे, जो वह करना चाहता है उसे पूरा करने के लिए उसे और अधिक समय लगाने की आवश्यकता नहीं । क्या उस के लिए एक क्षण एक हज़ार वर्ष के समान नहीं ? और वह किसी व्यक्ति में उपयुक्तता

अथवा योग्यता के लिए और अधिक समय की अपेक्षा नहीं करता, वह सम्मान देने के लिए तत्पर और प्रसन्न है । अत; हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं, किसी भी समय, किसी भी अवसर पर, "आज उद्धार का दिन है !" "यदि आज तू उसका स्वर सुने, अपने ह्रदय को कठोर मत कर !" ...

इस विश्वास के साथ, कि परमेश्वर में अभी पवित्र करने में सक्षम और उत्सुक है, केवल एक मात्र बात की आवश्यकता है, एक दिव्य प्रमाण और विश्वास की कि वह यह कर सकता है । उसी क्षण यह किया जा सकता है ... । तब विश्वासी उन धन्य शब्दों के गंभीर अर्थ के अनुभवों को ग्रहण कर सकता है, "यदि हम ज्योति में चलें, जैसा कि वह ज्योति में है, हमारी एक दूसरे के साथ सहभागिता होती है, और उसके पुत्र प्रभु यीशु ख्रिस्त का लोहू सभी पापों से शुद्ध करता हे ।"[20]

नाज़ेरीन थियोलॉजिकल सेमिनरी जो कॅनसस सिटि में है, मुझे किर्क व्हिले, मिसौरी के धर्मोपदेशकों के साथ एकत्रित होने के लिए आमंत्रित किया गया, और रोमियों, छः से आठ अध्यायों पर व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए कहा गया । पंद्रह अथवा सोलह मुख्य सम्प्रदायों के धर्मोपदेशक प्रतिनिधि वहाँ सम्मिलित थे, इनके साथ ही रोमन कॅथलिक पुरोहित, और नाज़ेरीन तथा अॅसेम्बली ऑव्ह गॉड पास्टर्स भी वहाँ उपस्थित थे । हम शहर से दूर एक छोटे से ग्रामीण कलीसिया में सम्मिलित हुए । एक बड़ी मेज के चारों ओर बैठे भोजन से पूर्व छः और सात अध्यायों पर विचार - विमर्श हमने समाप्त किया । भोजन के उपरान्त हमने आठवें अध्याय पर एक घण्टे से अधिक समय लगाया । पारस्परिक विचार की एकता को देखकर मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा, ऐसा लगा मानों हम ने संत प्रचारक को स्वयं अपनी पत्री से कहने के लिए हमें प्रेरित किया हो । दोपहर के बाद इस अध्याय के निश्चित कथन पर पहुँचेः "और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते । परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं; परन्तु आत्मिक दशा में हो ।" (पद 8 - 9) । मैंने इस बात पर विशेष बल दिया कि, जब पौलुस ने यह लिखा, "तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो", वह स्वर्गस्थित संतों के लिए यह नहीं लिख रहा था, परन्तु उन संतों के लिए जो उस समय रोम में स्थित थे ।

तब फिर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मुझे पवित्रीकरण अनुग्रह की आत्मा के विषय अपनी स्वयं की साक्षी उन प्रतिनिधियों के साथ बाँटनी चाहिए । जब मैंने अपनी साक्षी को समाप्त किया, उन बॅपटिस्ट पादरी ने जो कि मेरे निकट ही बैठे थे मुझ से पूछा, "परन्तु आप यह कैसे कह सकते हैं कि आप कब यथार्थ में पवित्र किए

गए ?'' मैं जब उन्हें उत्तर देने ही वाला था, उसी बीच रोमन कॅथलिक पुरोहित एक ऊँचे आसन पर एक प्राटस्टंट भाई के साथ बैठे थे, मुझे बीच में ही रोक दिया । अपने साथी के गंजे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ''वह दिन आया जब, आपने अपना सिर मुंडवाया, और दर्पण में देखते हुए स्वयं से पूछा, ''मैं गंजा क्यों हूँ !'' अतः वह क्षण आता है जब परमेश्वर के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता दर्शाते हुए, हम स्वयं आश्चर्यचकित होते हैं, ''पूरा हुआ !''

''परन्तु आप कैसे जानते हैं कि पवित्र किए गए, अपने जन्म के पाप से मुक्त हुए ?'' वेस्ली पूछते हैं । वे उत्तर देते हैं, ''हम ऐसा साक्षी से जानते हैं और आत्मा के फल से जानते हैं ।''[21] फल साक्षी के साथ मिलकर कार्य करता है । सम्पूर्ण पवित्रीकरण एक अनुभव से कहीं अधिक है; यह तो ज़ीवन - परिवर्तन - कार्य है, परमेश्वर का अनुग्रह है जो कि स्वमूर्तिपूजा के पाप से हृदय को शुद्ध करता है, परमेश्वर के प्रेम में सिद्ध करता है, पड़ोसी के साथ प्रेम में सिद्ध करता है, और विश्वासी को ख्रिस्तमय बनाने में सहायक होता है, ख्रिस्तरूप में विश्वासी को अग्रसर करता है । जैसा कि थिस्सलुनीकियों के पक्ष में परमेश्वर की ओर से सम्पूर्ण पवित्रता की प्रतिज्ञा में था, वही प्रतिज्ञा आज हमारे पक्ष में भी विद्यमान है ! तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा ।'' (1 थिस्स. 5 : 24) ।

ओ, एक हृदय के लिए मेरे परमेश्वर की स्तुति में,
एक हृदय को पापमुक्त करने के लिए,
वह हृदय जो हमेशा तेरे लोहु का आभास करता है
जो मेरे लिए बिना मूल्य बहाया गया ।
वह हृदय जो समर्पित हुआ, नम्र हुआ,
मेरे महान मुक्तिदाता के सिंहासन के सम्मुख,
जहाँ केवल यीशु को ही सुना जाता है
जहाँ केवल यीशु ही प्रभुता करते हैं ।
ओ, एक नम्र-दीन हृदय, पश्चातापी मन,
विश्वासमय, सच्चा, और शुद्ध,
जिसे न तो जीवन न मृत्यू अलग कर सकती है''
वह हृदय में निवास करता है ।
एक ऐसा हृदय जो सभी विचारों से नया है
और दिव्य प्रेम से भरा हुआ है,

सिद्ध और सच्चा और शुद्ध और उत्तम है -

हे प्रभु तेरी साक्षात् छवि है ।

- **चार्ल्स वेस्ली**

आप की आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति -

आधारस्तंब

वहाँ होने की अनुभूति का आभास

थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के मसीहियों के परिवार के किसी एक सदस्य की भांति होना । आप बाहर से काम करके हारे - थके घर पहुंचते हैं । आप में इतनी शक्ति नहीं रह जाती कि आप आज शाम कलीसिया में सम्मिलित हो सकते हैं । परन्तु कलीसिया का एक उत्सुक सदस्य आप के पास आकर कहता है, "पौलुस के पास एक पत्री आई है ! आप इस प्रार्थना सभा से वंचित नहीं होना चाहते । हमारे पादरी समस्त मण्डली के समक्ष इस पत्री को पढ़ने जा रहे हैं !"

पौलुस के पास से एक पत्र ! आप की सारी थकान तत्काल जाती रहती है । सात बजे ठीक शाम को आप सपरिवार प्रार्थना सभा में सबसे आगे की बेंच पर जाकर बैठ जाते हैं । पौलुस क्या कहना चाहता है इस पत्र में ?

1. जब आप पौलुस के शब्दों को अपने विश्वास, प्रेम, दृढ़ संकल्प जब आप सताहत में हो, और अच्छे उदाहरण के विषयों में सराहनीय शब्दों में कहते-सुनते हैं तो आप की प्रतिक्रिया क्या होगी ? क्या आप इस दिशा में
   - सोचेंगे ?
   - आभास होगा ?
   - कुछ कहेंगे ?
   - कुछ करेंगे ?
2. जब पादरी महोदय प्रेम और परस्पर प्रेम करने के कथनों को पढ़ते हैं आप की प्रतिक्रिया क्या होगी ? जब पादरी महोदय इसप्रकार के पदों को पढ़ते हैं जैसे; "एक परिचारिका अपने बच्चों का बड़े - लाड़ - प्यार से पालन - पोषण करती है", "क्या इसी गहराई से हम पालन - पोषण करते हैं," क्या स्वयं को दूसरों के हितार्थ प्रस्तुत करते हैं अथवा "आप हमारे प्रति बहुत प्रेम-प्रदर्शन करते हैं।"

   (1 थिस्स. 2 : 7 - 8), आप क्या कहेंगे ?
   - सोचेंगे ?
   - आभास करेंगे ?

- ♦ कहेंगे ?
- ♦ कुछ करेंगे ?

3. जब पाठक पौलुस के सिद्ध होने के सन्दर्भ में पढ़ते हैं तब आप के "विश्वास में किस बात का अभाव" पौलुस के दृष्टिकोण से आप को अनुभव हुआ (3 : 10), आप क्या करेंगे ?
   - ♦ सोचेंगे ?
   - ♦ आभास करेंगे ?
   - ♦ कहेंगे ?
   - ♦ कुछ करेंगे ?
4. जब आप परमेश्वर की अच्छा को सुनते हैं, आप के व्यक्तिगत सन्दर्भ में; (समस्त मण्डली के सन्दर्भ में) क्या वह पवित्रीकरण और यौन पवित्रता थी (4 : 3), आप क्या करेंगे ?
   - ♦ सोचेंगे ?
   - ♦ आभास करेंगे ?
   - ♦ कहेंगे ?
   - ♦ कुछ करेंगे ?

   जब पादरी महोदय उस प्रार्थना को पढ़ते हैं ताकि परमेश्वर आप को पूर्ण रीति से शुद्ध - पवित्र करें (5 : 23 - 24), आप क्या करेंगे ?
   - ♦ सोचेंगे ?
   - ♦ आभास करेंगे ?
   - ♦ कहेंगे ?
   - ♦ कुछ करेंगे ?

पवित्रीकरण अनुग्रह के लिए सीढ़ियाँ

यहाँ चार उन सीढ़ियों की सूची प्रस्तुत कीजिए जिन्हें एक मसीही विश्वासी को पवित्रीकरण अनुग्रह प्राप्त करने के लिए करनी चाहिए । जॉन वेस्ली के विस्तारित अवतरण को, जो कि इस अध्याय के अन्त में प्रस्तुत है, उसे पुनः पढ़िए । चार सीढ़ियाँ ये हैं

1.
2.

3.

4.

क्या आप आत्मा की अगुवाई का इच्छापूर्वक अनुसरण करना चाहते हैं, और अभी उन्हें स्वीकार करना चाहते हैं ?

कार्यसाधन -

कुछ महत्त्वपूर्ण बातें जिन्हें स्मरण रखनी हैं :

♦ आप का मनःपरिवर्तन का अनुभव, पुनर्जीवन, अनुग्रह के कार्य में महान योगदान था । इसने आप का जीवन परिवर्तित कर दिया - उसी प्रकार जैसे थिस्सलुनी - कियों के हित में किया, जिनके विश्वास, प्रेम, कार्य और भाईचारे की भावना सराहनीय थी । नया जीवन केवल पवित्रीकरण की दिशा में कोई प्रस्तावना स्वरूप नहीं । अभी, इसी समय परमेश्वर का उसके बचानेवाले अनुग्रह के लिए धन्यवाद दीजिए, उसका गुणानुवाद कीजिए ।

यह सत्य है कि परमेश्वर का आपके लिए आह्वान एक गंभीर पवित्रता के अनुभव और आज्ञा-पालन के लिए है, इस से आप को कोई निराशा नहीं होनी चाहिए । परमेश्वर को धन्यवाद दीजिए जिसने आप के लिए पहले जो कुछ हित किया है, उसे समर्पित होइए । वह आप से प्रेम करता है और आप के लिए सर्वोत्कृष्ट करना चाहता है ।

प्रत्येक मसीही पीढ़ी ने दो प्रकार के मसीही - वर्ग उत्पन्न किए हैं - एक सामान्य वर्ग जो असफलता और विजय में भेद न करके उलझे रहते हैं, पर वे भी हैं जिन्होंने गंभीर जीवन अर्थ को समझा है, उसे प्राप्त किया है, पवित्र जीवन को प्राप्त किया है, उसका अनुभव किया है । उन्होंने ख्रिस्त तुल्यता का एक गहरा अनुभव प्राप्त किया है । इस के द्वारा उन्हें आनन्द, और सन्तोष प्राप्त हुए हैं जबकि कुछ मसीही विश्वासियों के लिए यह मात्र स्वप्न की बात होती है ।

आप की आत्मा की प्यास इस बात को दर्शाती है कि आप किस वर्ग में होना चाहते हैं । "अपने मन में सांसारिक बातों की कल्पना" न करें यथा, कथाकार, संगीत, नृत्य, फिल्म अभिनेता - अभिनेत्री बनने के स्वप्न इत्यादि । वह आप को पुकार रहा है । और यदि वह पुकारता है वह आप को जिसकी उसने आप से प्रतिज्ञा की है वह आप को देने के लिए निष्ठावान और वचनबद्ध है । अपना सम्पूर्ण विश्वास उस पर रखें । वह आप से दूसरी बार कहता है, "तू निर्दोष बना रह !"

और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उसको हम जान गए, और उसकी हमें प्रतीति है : परमेश्वर है : और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है । इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं । प्रेम में भय नहीं होता, बरन, सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ । हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हम से प्रेम किया ।

1 यूहन्ना 4 : 16 - 19.

9

प्रेम ने सिद्ध बनाया

पुराने नियम में, परमेश्वर को पवित्र रूप में स्वीकार किया गया है - उन सभी रचित वस्तुओं से जिनकी उसके द्वारा सृष्टि की गई, वही एकमात्र महिमामय है, "तेरी आँखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता" (हबक्कूक 1 : 13) । भविष्यवक्ता यशायाह का मन्दिर अनुभव परमेश्वर की पवित्रता का स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है । जब उसके ज्ञानचक्षु पर से आवरण हट गया, यशायाह ने परमेश्वर यहोवा की एक झलक देखी, "सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है !

उस दर्शन ने भविष्य वक्ता को पूर्ण रीति से नम्र बना दिया, और वह पुकार उठा, "मैं नाश हुआ; क्योंकि; मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ; क्योंकि मैंने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है ।"

यशायाह 6 : 1,3,5

पवित्र प्रेम

नये नियम में, पवित्र परमेश्वर को प्रेमरूप में प्रगट किया गया है । पहला यूहन्ना 4 अध्याय परमेश्वर को मसीहीजनों के लिए प्रेम रूप में प्रकाशित करता है; यह नये नियम अध्याय यशायाह के छठवें अध्याय के सादृश है, जो परमेश्वर को पवित्र रूप में प्रकट करता है ।

परमेश्वर ने स्वयं को सर्वप्रथम "इस्राएल का पवित्र" बताकर अभिव्यक्त किया, वही महान पवित्र परमेश्वर ख्रिस्त रूप में हमारे बीच आया और स्वयं को प्रेम रूप में घोषित किया - पवित्र प्रेम (देखिए यशायाह 1 : 4; 10 : 17; 12 : 6) । परमेश्वर का यह द्वैत रूप प्रकाशन हम नाशवान प्राणियों के उद्धार हेतु सर्वमान्य आधार है, जिसके माध्यम से हम परमेश्वर के विषय में उचित ज्ञानाधार स्थापित करते हैं ।

परन्तु यूहन्ना के कथन का क्या आशय है ? जब वह परमेश्वर को इस रूप में घोषित करता है - "परमेश्वर प्रेम है" ? अंग्रेजी भाषा का शब्द "लव्ह" इस सन्दर्भ में कोई तथ्य प्रकट नहीं करता । प्रेम एक अस्थिर-प्रवृत्ति सादृश शब्द है, जो गिरगिट की भांति जिस स्थान पर होता है उसी रंग में रंग जाता है । विलियम सॅगंस्टर के शब्दों में इस के अन्तर्गत सभी कुछ समाहित है "कुत्ते के पिल्ले से प्रेम" से लेकर, परमेश्वर के महान प्रेम तक विस्तृत है, जिस प्रेम ने परमेश्वर को उदात्त बनाकर हमारे पापों के बलिदान के लिए ख्रिस्त को हमारे बीच में भेजा ताकि वह संसार के पापों को अपने ऊपर ले ले । यदि अंग्रेज़ी भाषा में कहें कि "परमेश्वर प्रेम" है तो इससे वह भावाभिव्यक्ति नहीं हो पाती ।

आप पूर्ण रूप से इस बात से जागरूक हैं कि ग्रीक भाषा में स्थिति भिन्न है । इस भाषा के अन्तर्गत कम से कम चार निश्चयात्मक अथवा प्रामाणिक शब्द पाए जाते हैं, जिनके आधारपर अनेक प्रकार के प्रेमों की अभिव्यक्ति, जिनका हम अनुभव करते हैं, होती है ।[1]

यहाँ दो ग्रीक शब्दों का उल्लेख करना पर्याप्त होगा, ताकि जो बात यूहन्ना इस अध्याय के अन्तर्गत कर रहा है उसका स्पष्टीकरण किया जा सके । इअरॉस (मानवी प्रेम) और अगापे (दिव्य प्रेम)[2] इअरॉस आवश्यकता रूप प्रेम हैं; अगापे उपहार

स्वरूप प्रेम है । इस अन्तर को समझना अत्यन्त आवश्यक है ताकि परमेश्वर और मानव-उद्धार के विषय में उचित धारणा स्थापित की जा सके, और प्रमुख रूप से ''प्रेम ने सिद्ध बनाया'' के सन्दर्भ में ।

इअरॉस अर्थात् मानवी प्रेम सीमित व्यक्तित्व की इच्छा - जागरण के फलस्वरूप उत्पन्न होता है, अर्थात् इसमें अपूर्णता विद्यमान होती है, सिद्धता नहीं । यह ऐसा प्रेम है जो दूसरे की चाहत करता है, पाने की अभिलाषा करता है और दूसरे पर स्वामित्व की इच्छा करता है, और दूसरों के साथ मिलन और स्वामित्व के कारण यह मानवी प्रेम अपनी संपूर्णता की प्राप्ति समझता है ।

ग्रीक वासियों के पास इस प्रकार के प्रेम (इअरॉस) की अनेक दन्त कथाएँ (काल्पनिक, पौराणिक) पाई जाती थीं । एक ऐसी कथा के अनुसार हम नाशवान मौलिक रूप में, नर-नारी - मिश्रित प्राणी थे । परन्तु हम ने देवों को अप्रसन्न कर दिया, जिन्होंने क्रोधाभिभूत होकर वज्रपात किया और हमें परस्पर अलग कर दिया । उसी समय से, अर्ध भाग दूसरे की खोज कर रहा है ।[3] इसप्रकार, इअरॉस अपने मौलिक रूप में श्रेष्ठ, शुद्ध विचारधारा है ।[4]

बाइबल हमें बताती है कि मानवी प्रेम परमेश्वर की अपनी धारणा और सृष्टि थी । आरंभ में परमेश्वर ने हमें ''नर - नारी'' रूप में रचा'' (उत्पत्ति 1 : 27) । परमेश्वर ने कहा, ''आदम के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं (2 : 18) । अतः परमेश्वर ने हव्वा को आदम के लिए एक साथी के रूप में रचा । हम इसे उत्पत्ति में पढ़ते हैं, ''इस कारण पुरुष अपने माता - पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे'' (पद, 24)[5] ध्यान दीजिए परन्तु वह स्त्री उसकी पत्नी स्वरूप थी; ''इअरोज'' (मानवी प्रेम) परमेश्वर के द्वारा आयोजित किया गया, ताकि विवाह के अन्तर्गत इसका आनन्द लिया जाए, परमेश्वर का इस प्रेम - आयोजन के पार्श्व में यह अभिप्राय था, न कि अन्य स्त्री अथवा पुरुष के साथ अनैतिक यौन - संबंध जैसा कि आज हमारे अन्य जातियों की संस्कृति में यह बढ़ता जा रहा है ।

जबकि दिव्य अभिप्राय के अनुसार यह आनन्द उठाया गया और विवाह के नैतिक नियम के द्वारा पवित्र किया गया - यह यौन - आनन्द, परमेश्वर की ओर से दिया गया मानव जाति के सन्दर्भ में एक अत्यन्त मूल्यवान उपहार है ।[6] फिर भी, एक का जीवन साथी / संगिनी किसी एक की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता कर सकती, और वैवाहिक संबंध से वह सम्पूर्ण मानवीय पूर्णता की आशा करना अन्य प्रकार की मूर्तिपूजा (प्राणी मात्र की पूजा न कि सृष्टि कर्ता की) में गिरना है अथवा हताशा - कुण्ठा, भ्रम में पड़ना, क्योंकि मानवी प्रेम, स्मरण रहे, मानवी

आत्मा की उत्कट लालसा को कदापि पूर्ण नहीं कर सकता । सीमित की आवश्यकता को ध्यान में रखकर असीम के लिए, ग्रीकवासियों ने स्वर्गिक आनन्द के विषय में कहा : आत्मा की इच्छा, सच्चे, उत्तम, सुन्दर - परमेश्वर के लिए होती है, पारलौकिक कामना की प्राप्ति के लिए आत्मा उत्कंठित रहती है ऑगस्टीन ने इस महान सत्य को स्वीकार किया और उस पर विश्वास करते हुए यह अभिव्यक्त किया, "तूने मेरी सृष्टि अपने लिए की, और मेरा हृदय ललायित है, जब तक कि यह तुझ में शान्ति नहीं पाता ।"[7]

गीतकार ने इस गीत के अन्तर्गत यही समानान्तर विचार व्यक्त किया है :

मेरा सम्पूर्ण जीवन तृषित रहा
कि वह किसी निर्मल - शीतल झरने से प्यास बुझाए
मैंने ऐसी आशा की कि उससे मेरी तृष्णा शान्त हो जाएगी
वह व्याकुल प्यास जिसे मैंने अपने भीतर अनुभव की ।
अपने आस-पास की व्यर्थ वस्तुओं से
भूख मिटाता रहा,
जब तक कि मेरी शक्ति प्रायः समाप्त हो चली,
मेरी आत्मा कुछ उत्तम वस्तु की लालसा करती रही,
केवल उसे पाने के लिए भूखी (क्षुधित) रही ।
हॅलेलूय्याह ! मैंने उसे पा लिया है -
जिसे पाने के लिए मेरी आत्मा चिर प्रतीक्षित रही !
यीशु ने मेरी प्रतीक्षा को संतुष्ट किया,
मैं अब उसके लोहु से बचाया गया हूँ ।

- क्लेरा टी. विलियम्स

हमारा मानवी प्रेम परमेश्वर के लिए है, जो कि ख्रिस्त में अपनी सच्ची पूर्णता को प्राप्त करता है, वही जीवन की रोटी और जल है ।

यीशु धँसती रेत से और पतित अवस्था से बचाने हेतु आया, हमें अपने पापों से शुद्ध करने आया, और हमें पुनः अपने स्वरूप में ढालने आया ।

मानवी प्रेम की यही उदात्त और सुन्दर भावना है, यह नये नियम के प्रेम का विचार नहीं है । मसीही दृष्टिकोण से प्रेम का आशय अगापे (दिव्य आसक्ति) से है - हमारा परमेश्वर के लिए प्रेम नहीं, परन्तु परमेश्वर का प्रेम हमारे लिए ! यूहन्ना लिखता

है, "प्रेम इस में नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इसमें है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा । और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उसकी प्रतीति है; हम इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि पहले उसने हम से प्रेम किया" (1 यूहन्ना 4 : 10, 16, 19)[8] यहाँ निश्चित रूप से सुसमाचार के केन्द्र में हैं - प्रथम परमेश्वर ने, बिना किसी अपेक्षा के, हमारे प्रति सार्वभौमिक प्रेम किया ।

हमारा मानवी प्रेम परमेश्वर तक पहुँचने की सीढ़ी है; अगापे (दिव्य प्रेम) परमेश्वर का हमारे प्रति दिया गया, नीचे उतरा स्वर्गिक उपहार है ।

'अगापे' परमेश्वर का अपना प्रेम है जो स्वर्ग से हमारे लिए यीशु ख्रिस्त के माध्यम से अवतरित हुआ, और हमारी मानवीय परिस्थिति में पूर्ण रीति से प्रवेश किया ।

ख्रिस्त में अवतार और उसकी पीठ पर क्रूस के साथ अगापे, पहाड़ी पर जिसे कलव्हरी कहते हैं ठोकरें खाता हुआ, वहाँ पहुँचा और स्वयं को "हमारे पापों के लिए बलिदान कर दिया ।" इस ख्रिस्त ने उन समस्त बन्धनों को जिन्हें हम नाशवान मनुष्यों ने खड़े किये थे जो हमारे और परमेश्वर के बीच बाधाएँ बने हुए थे, ख्रिस्त ने तोड़ दिए, हमारे पापों के बन्धनों को बिनामूल्य क्षमा कर दिया, उस धँसती रेत से ऊपर खींच निकाला, उस निराशा से उभार लिया, और हमारे पापों को धोकर शुद्ध किया, इस प्रकार हमारे सृष्टिकर्ता से पुनर्मिलन करवाया और अपनी स्वयं की अनुरूपता में फिर से सँवारा, नई सृष्टि निर्माण की !

प्रेम से बचाए गए

"जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है" (1यूहन्ना 4 : 16) यह ज्ञान जिसे हो जाता है, वह बचाया जाता है । चार्ल्स हेडॉन स्पर्जन, जो कि टेबरनिकल मेट्रोपॉलिटन, लन्दन के अनेक वर्षों तक पादरी पद पर कार्य करते रहे, एक नवयुवक थे परन्तु धार्मिक रूप में मतिभ्रम रहे । "शायद मैं सोचता हूँ कि मैं सदा मति भ्रम ही बना रहूँगा," उन्होंने कहा, "केवल उस बर्फीले तूफान के जो उस इतवार की सुबह लन्दन शहर पर टूट पड़ा ।" किसी कलीसिया को ढूँढ़ने के प्रयास में, वह बर्फ पड़ने के कारण अपना मार्ग नहीं खोज पा रहा था, स्पर्जन महोदय ने अन्त में एक सड़क के किनारे एक खुले दरवाजे को पाया । दरवाज़े के अन्दर प्रवेश करने पर, उन्होंने पाया कि वह स्थान एक पुराना मॅथोडिस्ट प्रार्थना - गृह है (आराधनालय) जहाँ 10 - 12 विश्वसीजन एकत्रित थे । स्पर्जन वहाँ बालकनी के नीचे एक बेंच के पास जा पहुँचा ।

जब मण्डली प्रतीक्षा कर रही थी, शीघ्र ही पता चला कि उनके पादरी महोदय मार्ग में कहीं तूफान में फँस गए है । कुछ समय बाद एक सदस्य उठ खड़ा हुआ, उसके हाथ में बाइबल थी, और वह पुलपिट तक पहुँचा । उसने बाइबल से यह पद पढ़ा - यशायाह 45 : 22 : ''पृथ्वी के दूर - दूर के देश के रहनेवालो तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ'' वह सज्जन कह उठे, ''यह यीशु कह रहे हैं'', ''यीशु सलीब पर ।'' आगे बोलते हुए, उन्होंने यूहन्ना से सन्दर्भ प्रस्तुत किया, और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए, ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए'' (यूहन्ना 3 : 14 - 15) । लगभग दस मिनट के बाद स्पर्जन महोदय ने कहा, और उस मनुष्य के धैर्य का बाँध टूट गया ।'' उसने इन शब्दों में अपनी चर्चा समाप्त की : ''बचाये जाने के लिए किसी महाविद्यालय के शिक्षण की कोई आवश्यकता नहीं ! तुम्हें, कोई उन्नति भी करने की आवश्यकता नहीं ! केवल यीशु की ओर देखो और जीवित रहो !''

''फिर'', स्पर्जन महोदय ने कहा, ''मुझे वहाँ बालकनी के नीचे बैठे देखकर उसने कहा, ''नवयुवक, तुम कुछ व्याकुल दिखलाई देते हो ! जब तब कि तुम यीशु की ओर उन्मुख नहीं होते, तुम इसी तरह परेशान रहोगे ! नवयुवक यीशु की ओर उन्मुख हो । अभी इसी समय उसकी ओर देखो !''

स्पर्जन ने स्वीकार करते हुए कहा, ''मैंने देखा'', और जैसे ही परमेश्वर की शान्ति मेरे हृदय में समा गई, मेरे कन्धों से पाप का बोझ उतर गया । उसी क्षण मैं उन पवित्र विश्वासियों के साथ खड़े होकर उनके साथ भजन में सम्मिलित हो सका,

वहाँ एक लोहु से परिपूर्ण झरना है
जो इम्मानुएल के वंश से प्रवाहित है;
और पापी उस लोहु प्लावित झरने में शुद्ध होता है,
और समस्त पाप-ग्लानि - कलंक से मुक्त जो जाता है''

- विलियम कॉउपर

महिमामय होने के कारण परमेश्वर पापी को क्षमा कर देता है, चमत्कार जो विश्वास के कारण किया जाता है, वह भी कुछ महान नहीं । पाप से क्षमा ''परमेश्वर में पैदा'' होना भी है, और यहीं से परमेश्वर के प्रेम में सम्मिलित होने का कार्य आरंभ होता है । जैसा कि यहून्ना कहता है, ''जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है । यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है'' (1यहून्ना 4 : 7, 12) ।

दो सत्य स्पष्ट होते हैं : (1) परमेश्वर में पैदा होना अर्थात् उसका प्रेम प्राप्त होना, और (2) परस्पर प्रेम करना जैसा कि यीशु ने आदेश दिया - "वही हमारे पापों का प्रायश्चित है" (1 यहून्ना 2 : 5, देखिए मत्ती 22 : 34 - 49; यहून्ना 13 : 34 - 35) ।

सिद्ध प्रेम

निस्सन्देह परमेश्वर के प्रेम की श्रेणियाँ भी हैं, जैसा कि यह गद्यांश परिलक्षित करता है : "इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं । प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ ।" (1 यहून्ना 4 : 17 - 18) ।

इस गद्यांश के अन्तर्गत समस्त क्रियाएँ और संज्ञाएँ जो ग्रीक भाषा से उद्‌भूत हुई हैं, वे सिद्धता से संबंधित हैं और उनकी व्युत्पत्ति 'टेलॉस' मूल से हुई है, जिसका आशय "समाप्त", "गंतव्य", "अभिद्येय से है । परमेश्वर का प्रेम (अगापे) अपने दिव्य गंतव्य पर उस समय पहुँचता है, जब वह हम में अवतरित होता है - तब हमारे विषय में कहा जा सकता है, "जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं" (पद 17) यहाँ "वह" सर्वनाम यहाँ इस पत्री में पाँच बार प्रयुक्त हुआ है, और इसका सन्दर्भ ख्रिस्त से है । अतः उपदेशक इसलिए कह रहा है, "जिस प्रकार ख्रिस्त है, वैसे ही संसार में हम भी हैं ।" "अगापे" अपनी "सिद्धता" पर पहुँच गया है, "वह पूर्ण किया गया है - जब वह हम में घर कर लेता है, अवतार ग्रहण करता है - ख्रिस्त की अनुरूपता में समा जाता है । परमेश्वर का प्रेम हम में पुनरअवतरित होता है जो कि वास्तव में व्यक्तिगत् उद्धार का अन्तिम, यथार्थ सत्य है ।

परमेश्वर का प्रेम हम में पुनरअवतरित होता है जो कि वास्तव में व्यक्तिगत् उद्धार का अन्तिम यथार्थ सत्य है ।

"सिद्ध प्रेम" भय को दूर करता है, अर्थात् परमेश्वर से न्याय के दिन होनेवाले साक्षात्कार के भय को निरस्त कर देता है (देखिए 1 यूहन्ना 4 : 17 - 18) ।" जब प्रेम उत्पन्न होता है, भय तिरोहित हो जाता है," बारक्ले महोदय लिखते हैं, "भय वह विशेष भावना है जो उस व्यक्ति में व्याप्त होती है जिसे दण्ड की आशंका सताती है।"[9] इसी सन्दर्भ में वेस्ली का कथन है, "दासत्व का भय वहाँ व्याप्त नहीं होता जहाँ प्रेम शासन करता है, क्योंकि ऐसा भय कष्ट की अनुभूति उत्पन्न करता है - प्रेम के आनन्द में बाधा उत्पन्न करता है ।" वेस्ली के अनुसार चार प्रकार के मसीही पाए जाते हैं, वह उल्लेख करता है, "एक स्वाभाविक मनुष्य में न तो भय होता है और

न प्रेम; वह जो जागृत हो गया है, उसमें भय बिना प्रेम के होता है; ख्रिस्त में एक शिशु, प्रेम और भय; ख्रिस्त में पिता, भयरहित प्रेम ।''[10]

वेस्ली महोदय ने इस सिद्ध प्रेम की अभिव्यक्ति अपने आरंभिक मॅथडिस्ट अनुयायियों में व्यावहारिक रूप में देखी । ''हमारे विश्वासी सुखद मृत्यु पाते हैं,'' यह उसका निष्कर्ष - अनुभव था । उसने स्वयं ऐसा प्रकट किया - ''मृत्यु की कला'' की परम्परा का उपयुक्त पालन किया । अपनी मृत्यु - शय्या पर पड़े निर्बल वेस्ली ने अपनी समस्त शेष शक्ति को समेट कर आइज़क वॉट्स का एक गीत गाना आरंभ किया, ''मैं अपने सृष्टिकर्ता की स्तुति करता रहूँगा, जब तक मेरी श्वास 'चलती रहेगी, '' वे जो उससे अन्तिम भेंट करने एकत्रित हुए थे, यह देखकर विस्मित रह गए । वेस्ली इस गीत की यह पँक्ति आगे गाने अथवा कुछ कहने की समस्त शक्ति फिर नहीं बटोर पाए, सारी चेष्टाएँ निष्फल ही रहीं, फिर भी उसने किसी भांति अपनी शक्ति संजो कर अपने अन्तिम उद्‌गार व्यक्त किए : ''सबसे उत्तम बात तो यही है कि, परमेश्वर हमारे साथ है ।''[11]

अनेक वर्ष पूर्व मैं एक बड़ी अच्छी कलीसिया में जो न्यूयॉर्क शहर-क्षेत्र में है, वहाँ उपदेश दे रहा था । वहाँ गुरुवार और शुक्रवार की रात की प्रार्थना - सभा के बाद एक महिला-जिसने कुछ ही समय पूर्व सत्य को स्वीकार किया था - मुझसे द्वार पर मिलीं उनके पास एक प्रश्न था : ''मैं जानती हूँ ख्रिस्त ने मुझे बचाया है, परन्तु मुझे एक भय सदा व्याकुल किए रहता है । मैं इसे नहीं समझ पा रही हूँ । क्या आप मुझे इसके विषय में कि मैं क्या करूँ; मेरी सहायता कर सकते हैं ?''

मैं चाहता था कि परमेश्वर ही उसके प्रश्न का उत्तर दें, तो अच्छा होगा, मैंने बड़ी सरलतापूर्वक उन्हें उत्तर दिया, ''प्रार्थना सभा में निरन्तर आते रहिए ।'' शनिवार की शाम वह पहली थीं जो प्रार्थना के लिए सामने आईं । कुछ क्षणों के बाद, परमेश्वर ने बड़ी सुन्दरता से उसकीं आवश्यकता को पवित्र - अनुग्रह से पूरा किया । मैं इतवार की सुबह प्रार्थना - सभा के बाद द्वार पर लोगों से भेंट - स्वीकार करने के लिए खड़ा था, उस महिला ने मुझसे पुनः कहा : ''आप को स्मरण हो मैंने इस सप्ताह के आरंभ में आप से अपने भय के विषय में कहा था जो मुझे व्याकुल किए हुआ था ? भाई ग्रेटहाऊस, वह जाता रहा !''

परमेश्वर के प्रति प्रेम और दूसरों के प्रति प्रेम परस्पर दृढ़तापूर्वक संबंधित हैं ।

सिद्ध प्रेम दुःखदायी भय से उत्पन्न दण्ड को निकाल देता है । केवल वही भय शेष रह जाता है वह यह कि उसने हम से प्रेम करने के लिए कितना दुःख उठाया । जब परमेश्वर का प्रेम सिद्धता को पहुँचता है, उस समय हमारा प्रेम भी सिद्ध ठहराया

जाता है - और ऐसी स्थिति में दण्ड का भय निकाल दिया जाता है । आगे जैसा कि यह गद्यांश स्पष्ट करता है, कि परमेश्वर के प्रति प्रेम और अन्य व्यक्तियों के प्रति किया गया प्रेम, परस्पर सुदृढ़ रूप से संकलित है, इनके मध्य अन्योन्याश्रित संबंध है । विलियम बारक्ले के विचार प्रस्तुत हैं, ''जैसा कि सी. एच. डॉड इस प्रकार कहते हैं, ''प्रेम की शक्ति तीन रेखाओं से होकर एक त्रिभुज का निर्माण करती हैं, ''जिसके तीन बिन्दु हैं, परमेश्वर, स्वयं, और पड़ोसी । यदि परमेश्वर हम से प्रेम करता है, तो हमें परस्पर प्रेम करना वांछनीय है, क्योंकि यह हमारा ध्येय है कि हम मानवता में परमेश्वर के जीवन को उत्पन्न करें, और समय आने पर अनन्त जीवन ।''[12]

''हम परमेश्वर और अन्य लोगों से प्रेम करते हैं, क्योंकि उसने हम से पहले प्रेम किया ।'' यूहन्ना लिखता है (1यूहन्ना 4 : 19) केवल एक ही मार्ग है जो यह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर हमारे हृदयों में विद्यमान है, वह यह कि हमारे जीवन निरन्तर यह प्रदर्शित करते रहें कि हम दूसरों से प्रेम करते हैं । इस भांति प्रेम पूर्णता अथवा सिद्धता को प्राप्त होता है ।''आत्मा से परिपूर्ण होना'' (इफिसियों 5 : 18) अर्थात् प्रेम से परिपूर्ण होना है । एल एड एच. स्टोक्स का कथन है, ''धन्य, दिव्य, अनन्त आत्मा । प्रेम से परिपूर्ण, और मुझ में अभी भर दे ।''

दिव्य प्रेम, समस्त प्रेम से महान
स्वर्ग का आनन्द, पृथ्वी पर उतर आया है !
अपना नम्र निवास हम में स्थिर कर;
अपनी समस्त करुणा का मुकुट ।
यीशु तू करुणामय प्रभु है;
तेरा प्रेम पवित्र, और असीम है ।
हमारे पास अपना उद्धार भेज;
प्रत्येक थरथराते हृदय में निवास कर ।
.... ।
हे सर्वशक्तिमान मुक्ति देने आ;
हम सब तेरे जीवन को पाएं ।
सहसा वापस आजा और कभी न,
अपने मन्दिर को त्याग !
हम केवल तेरी ही स्तुति करें,

केवल तेरी ही सेवा करें, जैसी स्वर्ग में होती हैं,
केवल तेरी ही प्रार्थना और स्तुति निरन्तर करें,
तेरे सिद्ध प्रेम की महिमा हो ।

- चार्ल्स वेस्ली

आप की आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति

आधार स्तंब

इस अध्याय का पुनरावलोकन कीजिए, इन प्रतीकों का प्रयोग करते हुए कुछ वाक्यों और परिच्छेदों पर चिन्ह लगाएँ :

उस गद्यांश के साथ एक त्रिभुज का चिन्ह लगाएँ जिस में कोई ऐसा सत्य विचार निहित हो, जो आप के लिए सर्वथा नया है ।

✞ योग का चिन्ह गद्यांश के साथ लगाएँ जो आप को प्रेरणा, नवीनीकरण, शान्ति अथवा आशा का सन्देश देता है ।

○ एक चक्र चिन्ह लगाइए उस विचार पर जो आप को अशान्त, घबराया हुआ अथवा दोषी ठहराता है

⇧ गद्यांश के साथ एक बाणाकार लगाइए जिसे आप हृदय से स्वीकार करते हैं, उस से पूर्ण रूप से सहमत हैं

⇩ जिस कथन से आप असहमत हैं, उसे नीचे की ओर चिन्हित बाणाकार से दर्शाइए ।

? एक प्रश्नवाचक चिन्ह गद्यांश अथवा कथन के साथ लगाइए जिसे आप नहीं समझे । अपने प्रार्थना - साथी अथवा अपने पादरी महोदय से इस पर चर्चा कीजिए।

आत्मिक सीढ़ियाँ

1. बाइबल अध्ययन : यूहन्ना की पहली पत्री का सम्पूर्ण पाठन कीजिए । उन सभी गद्यांशो की सूची बनाइए जिसके अन्तर्गत प्रेम का उल्लेख किया गया है । इस पर भी ध्यान दीजिए कि पहला यूहन्ना ज्योति और अंधकार के विषय क्या बताता है ।
2. इस अध्याय में उस कथन पर विचार कीजिए जो कहता है, "इअरोस आवश्यक प्रेम है:'अगापे उपहार स्वरूप प्रेम है ।" यह जागरूकता आप के व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक अथवा अन्य रूप में किस प्रकार का अन्तर उत्पन्न कर सकता है ?

3. स्मरण कीजिए कि परमेश्वर और लोगों ने प्रेम - उपहार के द्वारा आप को किस प्रकार आशीषें दी हैं ? प्रेम कितना मूल्यवान है ! यह कुछ ऐसा है कि हम इसके अभाव में अधूरे रह जाते हैं । उपन्यासकार जॉन अपडाइक ने आधुनिक संस्कृति का एक रेखा-चित्र प्रस्तुत किया है, जब कि एक प्रेम-वंचित मनुष्य अपनी आत्महत्या की योजना बना रहा होता है जब कि वह एक स्व-सहायता पुस्तकों के ढेर पर बैठा हुआ है ।

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति के विषय में सोच सकते हैं जो आप से कुछ प्रेम - उपहार का उपयोग कर सकता है ?

कार्य साधन

1. इस अध्याय का लेखक घोषणा करता है कि परमेश्वर के प्रति प्रेम और लोगों के प्रति प्रेम "सुदृढ़ रूप से संबंधित हें ।" पिछले अभ्यास में आप से पूछा गया था - आप किसी ऐसे व्यक्ति के विषय में सोच सकते हैं जो आप से कुछ प्रेम - उपहार का उपयोग कर सकता है । अब उसका नाम, तिथि, और स्थान का उल्लेख करें - दूसरे शब्दों में एक सुनिश्चित योजना बनाइए । अपनी योजना के विषय में अपने मित्र को बताइए (आप को अनेक नामों को देने की आवश्यकता नहीं अथवा विस्तृत जानकारी देने की) ताकि वह व्यक्ति आप का "विश्वस्त सहायक" बन सके ।

2. जेम्स रसॅल लोवॅल द्वारा रचित इस पद को कंठस्थ कीजिए :
   सच्ची स्वतंत्रता वह है जिसे हमारे पड़ोसी धारण करते हैं,
   जिस में सभी भावनाएँ सामंजस्य रूप में होती हैं
   और हम अन्य लोगों को भी स्वतंत्र बनाने की लालसा मन में संजोये रहते हैं ।[13]

3. प्रेम - उपहार जो परमेश्वर की ओर (अगापे) से प्राप्त होता है, जिसे लोगो के साथ बाँटा जा सकता है, जिन में परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो चुका है । इस पर विचार कीजिए ।

सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है ... । और उनके लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं ... जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उनमें रहे और मैं उन में रहूँ ।

यूहन्ना 17 : 17, 19, 26

10

सत्य पवित्रीकरण

मेरे लिए खि्रस्त के साथ पवित्रीकरण का संबंध - स्थापन - प्रवेश कोई सरल कार्य नहीं था । अन्य लोगों की भाँति मुझे भी सम्पूर्ण पवित्रीकरण का अनुभव कई बार हुआ । मेरे मनः परिवर्तन के एक वर्ष बाद, मैंने अपने पादरी महोदय के साथ कॅम्प मीटिंग में सम्मिलित होने के लिए कॅलिफोर्निया स्थित पॅसाडेना कॉलेज परिसर की यात्रा की, वहाँ प्रतिदिन हज़ारों की संख्या में लोग बी. एफ. नीली और एच. व्ही. मिलर के प्रेरणात्मक प्रवचन को सुनने के लिए एकत्रित हुआ करते थे । एक रात मैं सम्पूर्ण रूप से पवित्रीकरण पाने के उद्देश्य से सामने गया; सी. डब्लु. रूथ - जो कि एक समय फीनॅस एफ. ब्रीसी के लॉसएंजिलस प्रथम नाज़रीन कलीसिया के सहायक हुआ करते थे, मंच से नीचे उतरे ताकि मेरे लिए प्रार्थना करें । यद्यपि, मैं एक उत्साही और गंभीर प्रकार का सच्चाई जाननेवाला व्यक्ति था, और फलस्वरूप मुझे डॉ. रूथ की प्रार्थना और आत्मिक परामर्श का लाभ भी प्राप्त हुआ, तथापि मैं आशीष पाने से वंचित रहा ।

समय के साथ, मेरी सत्य - खोज़ निराशाजनक ही रही । अगले वर्ष मई महीने के एक दिन मैंने स्वयं को अपने कमरे में बन्द किया (रविवार के भोजन के बाद) और संकल्प किया कि जब तक मेरी इच्छा की प्राप्ति नहीं होती, मैं कमेरे से बाहर नहीं

निकलूँगा । स्पष्ट था, जैसे कि मैं पहली बार पवित्रता की इच्छा कर रहा था, इसे देखकर, प्रभु ने मेरे भीतर स्थित पापमय गर्व को मेरे अवचेतन मन में जो छिपा हुआ था, मुझे उसका आभास दिलाया । मेरे ह्रदय में जो समस्या विद्यमान थी, एक आवाज़ ने मुझ से पूछा, ''क्या तू अरकांसस (मैं वान बूरेन, अरकांसस में पैदा हुआ था) वापस लौटने को तैयार है, अपनी सेवा वहाँ अर्पित करेगा, और संसार को यह कभी मालूम नहीं होगा कि बिली ग्रेटहाऊस कभी वहाँ रहा ?'' (मैंने पहले ही प्रचार करने के आह्वान को स्वीकार कर लिया था) ।

मैंने उत्तर दिया, ''हाँ प्रभु'' ''मैं तैयार हूँ कि मुझे कोई न जाने, परन्तु केवल तू मेरे ह्रदय को पवित्र करें ।''

फिर वह आवाज़ और अधिक शोधपूर्ण हो गई : ''क्या तू चीन में एक प्रचारक के रूप में जाने को तैयार हे ?'' (यह बात चीन में कम्यूनिस्ट आन्दोलन से पूर्व की है)

''हाँ प्रभु'' मैंने प्रत्युत्तर में कहा, ''यदि तू रुथ को मेरे साथ वहाँ भेजे ।'' (मेरा पहले ही से गंभीर संकल्प था !)

कोई दिव्य उत्तर नहीं मिला । फिर मेरे भीतर और गहराई से खोज़ते हुए, उस आवाज़ ने पूछा, ''क्या तू वहाँ अकेले जाने के लिए तैयार है ?''

कुछ क्षण संकोच करने के बाद, मैंने उत्तर दिया, ''हाँ प्रभु, यदि यही तेरी इच्छा है ।''

तत्काल मैं आत्मविभोर हो गया और इसी विह्वलता में खड़ा हो गया, मेरा ह्रदय आत्मापूरित हो गया और मैं उस आनन्द का वर्णन नहीं कर सकता (मुझे यह नहीं मालूम था कि मेरी कलीसिया उस समय एक अविवाहित पुरुष को ऐसा आदेश नहीं देगी) मेरी खोज़ पूरी हुई । ख्रिस्त ने मुझे - पूर्ण किया ! उस रविवार की दोपहर को मैंने जॉन वेस्ली के साथ मिलकर प्रार्थना की,

क्या कोई वस्तु सूर्य के नीचे है
जो तेरे पास मेरे लिए बाँटने के लिए संघर्षरत है ?
ओ, प्रभु मुझ पर प्रकट कर, और तू ही मेरे मन में शासन कर
हे प्रभू तू ही वहाँ प्रति क्षण निवास कर !

मेरे जीवन के आनेवाले वर्ष बहुत तनावपूर्ण रहे, जैसे उससे पूर्व कभी नहीं थे । परन्तु ख्रिस्त ने मुझे प्रत्येक परिस्थिति में संभाले रखा, और मेरी हर आवश्यकता की पूर्ति की, यद्यपि मैंने ऐसी स्थिति में उसकी इच्छा का तिरस्कार भी किया । कई बार तो मेरी पकड़ उस पर शिथिल सी हो जाती थी, परन्तु उसकी पकड़ मुझ पर कभी

कमज़ोर नहीं रही, वह मुझे निरन्तर संभालते रहा,'' ''उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो'' (इफिसियों 1 : 6) । और मैं जॉन न्यूटन के स्वर में कहता हूँ ।

अनेक संकटों, परिश्रम और जालों से
निकल कर मैं आ पहुँचा हूँ ।
अब तक इस अनुग्रह ने मुझे सुरक्षित पहुँचाया है,
और अनुग्रह मुझे गंतव्य तक पहुँचाएगा ।

सम्पूर्ण शुद्धिकरण एक अनुभव से कहीं अधिक है; यह वास्तव में एक आनुभविक सत्यता है, हृदय में इसका ख्रिस्त के साथ वचनबद्धता का संबंध है, जिस में हृदय की पूर्ण इच्छा, अनुमति और सार्थक चुनाव है, हमारे अस्तित्व का एकमात्र ध्येय प्रभु को स्वीकार करने का संकल्प है । यह स्वीकृति परमेश्वर के लिए हमारा उपहार है, समर्पण है, जिसका पौलुस ने रोमियों की पुस्तक में उल्लेख किया है : ''और अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को समर्पित करो । अपने अंगों को पवित्रता के लिए धर्म के दास करके सौंप दो'' (6 : 13, 19)

हमें अवश्य स्वत्याग (समर्पण) पर पहुँचना है ।

यथार्थ पवित्रीकरण के लिए नैतिक चुनाव की आवश्यकता है । हमें परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि हम स्वत्याग करें, ऐसी स्थिति उसी समय आती है, जब हमें अपने स्वकेन्द्रित और दोहरे व्यक्तित्व का आभास हो जाता है । ख्रिस्त के प्रति पापों की क्षमा के लिए समर्पित होने की अपेक्षा पवित्रीकरण इससे भी अधिक गहराई की ओर बढ़ता है । स्वार्थ - वश इच्छा से कहीं अधिक ऊपर उठी यह भावना का आभास है । यह एक व्यक्ति के लिए स्पष्ट और पश्चातापपूर्ण निम्न, सांसारिक अभिलाषाओं, दर्प (घमण्ड) और स्वार्थ का ज्ञान है, साथ ही साथ परमेश्वर के प्रति अपनी प्रेम-भावना की वचनबद्धता है । ई. स्टेनली जोन्स का कथन है :

''बिना पारस्परिक आत्मसमर्पण के दो व्यक्तियों के बीच प्रेम का आदान - प्रदान हो ही नहीं सकता । यदि कोई स्वार्थ को अपने हृदय में प्रश्रय देता रहे, तो प्रेम प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है ।

सम्पूर्ण समर्पण का मूल्य - भुगतान करें । मेरा आशय निष्ठा से नहीं समर्पण से है । निष्ठा के अन्तर्गत आप उपहार को थामे रहते हैं - समर्पण में इसे आप मुक्त कर देते हैं । समर्पण में संपूर्ण स्वार्थ की आहुति निहित होती है, सर्वस्व दान । उपहार अब आपका नहीं रह,जाता - यह पूर्ण रूप से परमेश्वर का हो जाता है । अब

आपका जीवन, आत्मा - अधीन हो जाता है, अब स्वार्थ - प्रधान नहीं रह जाता । अब आप परमात्मा की इच्छा को अपने "स्व" के स्थान पर प्रधानता देते हैं । आप स्वयं से कहते हैं, "स्व को जाने दो, परमेश्वर को स्थान दो, "स्व" का प्रस्थान परमेश्वर का आगमन । आप परमेश्वर के हाथ में स्वयं को समर्पित कर देते हैं । अब आप भले के लिए समर्पित हो जाते हैं, या बुरे के लिए, धन के लिए, अथवा निर्धनता के लिए, रोग में और स्वास्थ्य में, जीवन में और मृत्यु में

ऐसा समर्पण पूर्ण रूप तथा विस्तारित होता है, अर्थात् असीमित । इस में समर्पण-कर्ता का सम्पूर्ण अहम् समस्त स्वार्थपूर्ण इच्छाएँ, छोटी - बड़ी सभी स्वकेन्द्रित इच्छाएँ सम्मिलित हैं, सन्त फेने लोन का कथन है, "यह कुछ और नहीं, अर्थात् इसमें आपका स्वार्थ नहीं होता, हम कहते हैं कि इसमें अब ऐसा कुछ नहीं रह जाता जिसकी हमें चिन्ता रहती है, आप में ऐसा कुछ नहीं होता जिस से आप परमेश्वर का इन्कार करें, किसी प्रकार का बहाना नहीं रह जाता, अन्त में ऐसा कुछ भी नहीं होता जिसे आप परमेश्वर से गुप्त रख सकते हैं, जिसे आप नहीं करना चाहते ।"[2].

ऐसा पवित्रीकरण जो शुद्धिकरण के लिए अनुग्रह का मार्ग प्रशस्त करता है, उसे अपने स्वार्थ - अहम् का अन्त कहा जाता है ।[3]

स्वयं को पूर्णरूप से परमेश्वर को समर्पित करना वास्तव में परमेश्वर के लिए हमारे अन्तःकरण को उसके आत्मा-द्वारा पवित्र करने और (अन्तःकरण) उसे सिद्ध प्रेम के लिए तैयार करना है । रोमियों 8 : 3 - 4 को 13 : 8 - 10 तक देखिए) । इस गहन दिव्य अनुग्रह की प्रक्रिया में पिता, यीशु की अन्तिम प्रार्थना के सन्दर्भ में हमारे लिए यह उत्तर देता है, "ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं ... जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उनमें रहे और मैं उन में रहूँ" (यूहन्ना 17 : 19, 26) । जिस प्रकार मानव समर्पण सत्य पवित्रीकरण का मार्ग प्रशस्त करता है, उसी प्रकार दिव्य पवित्रीकरण इसे निश्चित ठहराता है इसका प्रदर्शन करता है । ओसवाल्ड चेम्बर्स इस अन्तिम स्थिति का इन शब्दों में वर्णन करता है :

जब एक बार आपका यीशु ख्रिस्त के साथ संबंध स्थापित हो जाता है, फिर आप कभी मुँह नहीं फेर सकते । यही पवित्रीकरण का अर्थ है । परमेश्वर हमारी मानवीय धारणा को स्वीकार नहीं करता कि हमारा इस दिशा में प्रयास मात्र एक अनुभव है; यह भुला देना कि हमारे पवित्रीकरण का भी पवित्र होना आवश्यक है (देखिए यूहन्ना 17 : 19) । मुझे अपना पवित्र - जीवन स्वेच्छा से परमेश्वर की सेवा के लिए अवश्य देना है, ताकि वह मेरे सम्पूर्ण व्यक्तित्व का प्रयोग कर सके।[4].

मुझे अपना पवित्र जीवन स्वेच्छा से परमेश्वर की सेवा के लिए अवश्य देना है, ताकि वह मेरे सम्पूर्ण व्यक्तित्व का प्रयोग कर सके ।

आइए अब हम अपने प्रभु की महायाजकीय प्रार्थना की ओर जो हमारे लिए है, इसकी ओर उन्मुख हों । इस प्रार्थना को उचित रीति से समझने पर, यह प्रार्थना वचनात्मक पवित्रीकरण के मूलभूत सिद्धान्तों को प्रतिस्थापित करती है ।

''उन्हें पवित्र करो''

सर्व प्रथम यीशु प्रार्थना करते हैं, ''उन्हें पवित्र करो,'' वास्तविक आशय है कि ''अलग करो ।'' ग्रीक भाषा की क्रिया ''हेगियाड्ज़ो'' (पवित्र करना), एडम क्लार्क समझाते हैं कि यह दो क्रिया - मूलों से उद्‌भूत हुआ है : ''हा'' (नकारात्मक) और ''गै'' (पृथ्वी) । क्लार्क कहते हैं, यह सूचित करता है, ''1. अभिषिक्त करना, पृथ्वी से अलग करना और साधारण प्रयोग से अलग करना, और परमेश्वर और उसकी सेवा के लिए अर्पित करना अथवा अभिषिक्त करना'' और ''पवित्र करना अथवा पावन ठहराना ।[5]

अतः ''उन्हें पवित्र करो'' का वास्तविक अर्थ है ''सांसारिक कार्यों से रहित !'' अर्थात् ''सांसारिक बातों से और पापमय कार्यों से अलग करके स्वर्गिक और पवित्र कार्यों के लिए अलग करना ।'' यह पृथक्करण की प्रक्रिया पवित्रीकरण के सन्दर्भ में एक रूपक के रूप में हम सम्पूर्ण वचन में पाते हैं । बाइबल बहुधा इसे बहुमूल्य धातुओं के शुद्ध करने की तुलना स्वरूप करती है । एक सन्दर्भ मलाकी की पुस्तक में निश्चयात्मक उदाहरण है :

''देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूँ, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आजाएगा; हाँ वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है । परन्तु आने के दिन को कौन सह सकेगा ? और जब वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकेगा ? क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान है । वह रूपे का तानेवाला और शुद्ध करनेवाला बनेगा, और लेवियों को शुद्ध करेगा और उनको सोने - रूपे की नाईं निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाएंगे ।''

3 : 1 - 3

यूहन्ना बपतिस्मादाता को इस बात का स्वज्ञान था कि उसे जिसकी प्रतिज्ञा की गई है ऐसे शुद्ध करनेवाले के लिए मार्ग सुधारक के रूप में नियुक्त किया गया है : ''मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र

आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा ।'' (मत्ती 3 : 11) । यहाँ एक ऐसे प्राचीन शुद्ध करनेवाले का चित्रांकण किया गया है जो कि चांदी को आग की भट्टी में तपानेवाले पात्र में डालकर भट्टी की ज्वाला को निरन्तर धधकाए रखता था और जब तक कि अशुद्ध धातु पूरी तरहसे जलकर ऊपर नहीं आजाती, उस समय तक ध्यानपूर्वक देखता रहता, जबतक कि खौलना समाप्त न हो जाए, और जब तक कि वह उस पिघली शुद्ध चांदी में अपना चेहरा एक स्वच्छ दर्पण की तरह नहीं देख लेता था । यही बात जॉर्ज बट्रिक ख्रिस्त के द्वारा शुद्ध करनेवाले, आत्मा के बपतिस्मे के दृष्टान्त से स्पष्ट की है ।[6] आप यहाँ दो प्रक्रियाओं का अवलोकन करेंगे : प्रथम, चांदी को खदान से निकाला जाता है, फिर उसे शुद्ध करने के लिए पात्र में डालकर तपाया जाता है । अतः हमारा पवित्रीकरण दो रूपोंवाला है : प्रथम, जब हम सुसमाचार की आज्ञा का पालन करते हैं, हमें संसार से अलग किया जाता है; फिर हम स्वयं को शुद्ध करने हेतु शुद्ध करनेवाले पात्र में डालते हैं ताकि तपाये जाने पर शुद्ध किए जायें, निरन्तर प्रार्थना में लगे रहते हैं,

यीशु की सुन्दरता मुझ में दिखलाई दे -
उसका अद्भुत् सम्पूर्ण प्रेम और पवित्रता !
ओ दिव्य आत्मा,
मेरा सम्पूर्ण स्वभाव शुद्ध कर,
जब तक कि यीशु की सुन्दरता मुझ में न दिखाई दे ।

- अलबर्ट ऑर्सबॉर्न

सन्तों ने हमारे प्रभु के पीछे चलने के आह्वान को आज्ञापालन के रूप में स्वीकार किया, सब कुछ त्याग कर उसका अनुसरण किया, ताकि यीशु उनके विषय में कह सके, ''जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं'' (यूहन्ना 17 : 16) फिर भी, वे संसार से अलग किए गए और ख्रिस्त की ओर उन्मुख हुए, उन में फिर भी सांसारिक आत्मा झलकती रही यथा, मूर्खतापूर्ण घमण्ड, ईर्ष्या, क्रोध और स्वार्थपूर्ण इच्छाएँ (देखिए मरकुस 10 : 32 - 45) । बाह्य रूप से शुद्ध किए गए, परन्तु आन्तरिक रूप से उनमें सांसारिक इच्छाएँ और सांसारिक मानसिकता विद्यमान रहीं । यह एक बात है जिसे संसार से अलग करना कहलाता है, परन्तु इसी तरह दूसरी बात सांसारिकता को हमारे मनों से अलग करना है !

यह प्रमाण विह्वलतापूर्ण दृष्टिगोचर उस समय होता है जब यीशु की प्रार्थना उन भक्तों के लिए और अन्य विश्वासी व्यक्तियों के पक्ष में, वास्तविक रूप में उस अवसर पर जब कि भक्तगण ऊपरी कोठरी में पिन्तेकुस्त के दिन एक एकत्रित हुए

थे, साकार हुई । उस दिन महिमामय ख्रिस्त ने उन्हें अपनी प्रतिज्ञित आत्मा से अभिषिक्त किया (देखिए प्रेरितों 2 : 33), विश्वास के द्वारा उनके हृदय शुद्ध किए गए (15 : 8 - 9) प्रेम में सिद्ध किए गए (देखिए 2 : 37 - 42), और ख्रिस्त ने उन्हें अपने शरीर में भरे आत्मा से सामर्थ्य प्रदान किया ताकि वे उस सेवा कार्य को जिसे नासरत के यीशु ने आरंभ किया था उसे निरन्तर करते रहें (देखिए 1 : 1, 8)।

जैसे हमारे प्रभु प्रार्थना जारी रखते हैं, ''मैं केवल इन्हीं के लिए बिनती नहीं करता परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों'' (यूहन्ना 17 : 20) । यह प्रार्थना, कलीसिया के सन्दर्भ में है, मेरे और आपके लिए है, जिन्होंने ख्रिस्त में होकर, संतों के प्रेरित शब्दों पर जिन्हें बाइबल में संकलित किया गया है, विश्वास किया है और आज ख्रिस्त के प्रचारक एवं शिक्षक उस वचन की घोषणा और हमारे बीच प्रचार करते हैं ।

ख्रिस्त पर विश्वास करने के कारण हमें यह आवश्यक हो जाता है कि हम स्वयं को उस तपानेवाले पात्र में डालें और वहाँ उस समय तक बने रहें जब तक कि हमारे हृदयों में स्थित पाप का कलंक हमें स्पष्ट भासित हो जाये और हम पापों को स्वीकार करे लें ताकि शुद्ध करनेवाला उन पापों के कलंक को धो डाले (देखिए 1 यूहन्ना 1 : 7, 9), और उस समय तक जब कि हमारे पापमय हृदयों से हमारी सांसारिक अभिलाषाएँ ऊपर सतह पर आकर समाप्त नहीं हो जातीं और हमारे हृदय शुद्ध होकर प्रभु की सिद्ध शान्ति में डूब नहीं जाते (देखिए इब्रानियों 4 : 9 - 10), उस समय तक स्थिर बने रहें जब तक कि हमारे हृदय पूर्ण रूप से परिवर्तित होकर, हृदयों में, स्वच्छ दर्पण में यीशु की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर न हो (देखिए 2 कुरिन्थियों 3 : 18) ।

''उन्हें पवित्र करो''

प्रार्थना करने के बाद, ''पवित्र किए जाएं,'' हमारे प्रभु ने जारी रखते हुए कहा, ''जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैंने भी उन्हें जगत में भेजा । और उनके लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किये जायें'' (यूहन्ना 17 : 18 - 19) पिता ने पुत्र को अभिषिक्त करके इस संसार में भेजा; इसलिए अब पुत्र कलीसिया को पवित्र / अभिषिक्त करता है और उन्हें संसार में भेजता है । ''कलीसिया का अस्तित्व धर्म - प्रचार पर आधारित है, ''एमिल ब्रूनटने एक अवसर पर कहा था, ''जिसप्रकार अग्नि का अस्तित्व उसके जलने से है ।'' जब अग्नि का जलना समाप्त हो जाता है, अग्नि का अस्तिव भी समाप्त हो जाता है । अतः जब कलीसिया का उत्साह ख्रिस्त को संसार के लिए प्रकट करने में ठण्डा हो जाता है, तो वह कलीसिया, कलीसिया नहीं रह जाती तब वह मात्र फरीसियों का सम्प्रदाय

बनकर रह जाती है अथवा एक सामाजिक संस्था । विलियम टेम्पल हमें स्मरण कराते हैं कि कलीसिया इस संसार में केवल ऐसी संस्था है, जो बुनियादी रूप से उनके लिए होती है जो उसके सदस्य नहीं है । यीशु हमें स्मरण कराते हैं कि यह मुख्य रूप से इसलिए अस्तित्व में होती है, "ताकि जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझसे प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा" (यूहन्ना 17 : 23) । अतः महायाजक की मध्यस्थता की भूमिका के कलीसिया के सन्दर्भ में निष्कर्ष निकालते हुए, यीशु प्रार्थना करते हैं, "हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैंने तुझे जाना कि तू ही ने मुझे भेजा । और मैंने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुझ को मुझसे था, वह उन में रहे और मैं उनमें रहूँ" (पद 25 - 26)।

उसी शाम के आरंभ में, उन से शीघ्र अलग होने के सन्दर्भ में, यीशु ने प्रचारक संतों को आश्वस्त किया था, "मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ । फिर आत्मा के निकट भविष्य में आने के सन्दर्भ में, उसने कहा, "उस दिन तुम जानोगे कि, मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में ।" (14 : 18, 20) ।

मैंने एक अच्छे मसीही भाई के विषय में कहीं पढ़ा था जिसने यह अनुभव किया कि उसके पादरी महोदय यीशु के द्वितीय आगमन पर अधिक ध्यान नहीं देते । "पादरी महोदय" उस व्यक्ति ने पूछा, "क्या आप नहीं जानते कि ख्रिस्त पुनः आ रहे हैं ?" उसके इस प्रश्न के उत्तर में पादरी ने कहा, "मैं नहीं जानता था कि वह कभी हमसे दूर रहे !"

दोनों के अपने - अपने विचार - पक्ष थे । धन्य आशा, उसका दृश्यमान रूप होगा, जो कि पिन्तेकुस्त के समय से कलीसिया के साथ रहा, जिस दिन जी उठा ख्रिस्त आत्मा - रूप में कलीसिया के साथ हमेशा रहने के लिए वापस आया - और आत्मा - रूप में होकर वह सेवा-कार्य निरन्तर करता रहे, उसने यह सेवा-कार्य नासरत के यीशु - रूप में आरंभ किया था । यह विचार ऐसा लगता है लूका प्रस्तुत करेगा जब वह प्रेरितों के काम का आरंभ करता है : "हे थियुफिलुस, मैंने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी, जो यीशु ने आरंभ किया, और सिखाता रहा । उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया" (1 : 1 - 2) । वह हमें समझा सका कि यीशु का पार्थिव जीवन और सेवा-कार्य उसके (यूहन्ना) सुसमाचार में जो लिखा गया, वह तो हमारे प्रभु के व्यक्तिगत कार्य का आरंभ था । जिस सेवा-कार्य को उसने

अपने शरीर-रूप में आरंभ किया, अब वह अपनी नई देह, आत्मापूरित कलीसिया के माध्यम से निरन्तरित कर रहा है ।

पवित्र आत्मा कलीसिया को पवित्र करता है और उसे आत्मा-पूरित करता है, किसी कृत्रिम तालाब की भाँति नहीं परन्तु प्राकृत्रिक जल धारा की भाँति । सच्चा पवित्रीकरण स्वयं में कोई अन्त नहीं है, परन्तु यह एक उच्चतर माध्यम का साधन है । ख्रिस्त हमें इसलिए पवित्र करते हैं ताकि हम जलाशय बन जाएँ "आदर के पात्र बन जायें और पवित्र ठहरें और स्वामी के काम आएं, और हर भले काम के लिए तैयार रहें" (2 तीमुथियुस 2 : 21) । "लेडी ऑव्ह द चिमनी कॉर्नर" में, अलेक्ज़ेण्डर इरविन अपनी ग्रामीण मां, अन्ना के विषय में बताते हैं, जो कि एक दिन एक शोकित पड़ोसी को सांत्वना देने के लिए उसके पास गई ।" अब उसे (परमेश्वर से) कह कि वह तेरे सिर पर जो कि शोकाकुल है अपना हाथ रखे और प्रकट करे कि वह तेरे संकट के समय तेरे साथ है", अन्ना ने बहुत चुपचाप अपने पड़ोसी को ऐसी सलाह दी ।

पवित्र आत्मा कलीसिया को पवित्र करता है और उसे आत्मा - पूरित करता है, किसी कृत्रिम तालाब की भाँति नहीं परन्तु एक प्राकृतिक जलधारा की भाँति ।

प्रार्थना स्वीकृत हुई । पड़ोसन ने उत्तर दिया कि उसने परमेश्वर की सांत्वना को प्राप्त किया, उसने परमेश्वर के हाथ का स्पर्श भी अनुभव किया, "और वह हाथ तुम्हारे हाथ की ही तरह था अन्ना ।"

अन्ना ने प्रत्युत्तर में कहा, "वह हाथ मेरा ही था, परन्तु वह परमेश्वर का भी था ।" कई बार" उसने कहा, "परमेश्वर विशप का हाथ, एक डॉक्टर का हाथ, एक मां का हाथ - और कभी वह मेरी तरह एक बूढ़ी स्त्री का भी हाथ लेता है ।"[7]

मेरा जीवन स्वीकार कर
और इसे हे प्रभु अपने लिए पवित्र कर ।

....

मेरे हाथों को स्वीकार कर और उन्हें
अपने प्रेममय भावना से सहला ।
मेरे पैरों को स्वीकार कर और उन्हें
अपने काम के लिए तत्पर कर ।

मेरे स्वरों को स्वीकार कर और मुझे गाने दे
हमेशा, केवल, अपने राजा के लिए ।
मेरे होठों को स्वीकार कर और उन्हें
अपने सन्देश से भर दे ।

....

मेरा हृदय जो केवल तेरा है, स्वीकार कर;
यह तेरा राजसी सिंहासन होगा ।
मेरा प्रेम स्वीकार कर - हे मेरे प्रभु मैं तेरे
चरणों में उँडेलता हूँ, यह तेरे लिए प्रतिदान है ।
मुझे स्वीकार कर - और मैं
हमेशा केवल तेरे लिए रहूँगा ।
- फ्रांसिस आर. हेव्हरगल

आप की आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति

हमारे सामान्य "आधार स्तंब" के स्थान पर - "आत्मिक सीढ़ियाँ", और "कार्य-साधन" के स्थान पर हम उनके लिए जो शुद्धिकरण के अनुग्रह की खोज़ कर रहे हैं, कुछ मार्गदर्शन प्रस्तुत कर रहे हैं ।

शुद्धिकरण अथवा पवित्रीकरण - अनुग्रह को किस प्रकार प्राप्त करें ।

A. यह जान लें कि यह परमेश्वर की इच्छा है

"क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो : अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो" (1 थिस्स. 4 : 3) । अपनी आशा और आकांक्षा को थिस्सलुनीकियों के लिए जो पौलुसने प्रार्थना की थी, उससे अनुकूल बनाइए : "शान्ति का परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे" (1 थिस्स. 5 : 23) ।

B. परमेश्वर को अपने मनों को तैयार करने के लिए आमंत्रित कीजिए

परमेश्वर निष्ठापूर्वक आप को पाप की गहराइयों को देखने में आप का नेतृत्व करेंगे - उस आन्तरिक पापमयता को जो आत्मा के विरुद्ध लड़ती रहती है, यहाँ तक कि पाप-कर्म क्षमा कर दिए जाने के बाद भी । वह आपकी आत्मा की व्याकुल - प्यास का नेतृत्व करेगा । उसने जब आप को उस स्थिति तक ले आया है, जहाँ आप उसे अपने पूरे मन, आत्मा, प्राण और सामर्थ्य से प्रेम

करते हैं, वह आप पर अपना पवित्रीकरण का अनुग्रह उंडेलता है, आप के हृदय को शुद्ध करता है, और उसे अपने पवित्र प्रेम से भर देता है। यह प्रतिज्ञा निश्चित है - ''यदि हम भी ज्योति में चलें, जैसा वह ज्योति में है, ... उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है, (1 यूहन्ना 1 : 7)।

C. **अपनी समर्पणता को पूरी रीति से कीजिए -**

परमेश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पणता सरल कार्य नहीं है, परन्तु यह एक मात्र स्वतंत्रता, और सुरक्षा का साधन है जो हमें अनुग्रह के द्वारा प्राप्त होता है। आप जॉन वेस्ली की हस्तलिखित प्रार्थना को अपनी स्वयं की प्रार्थना बनाना चाहें।

समर्पण की एक प्रार्थना

ओ प्रभु यीशु,
मैं अपनी देह तुझे अर्पित करता हूँ,
अपनी आत्मा,
अपना सर्वस्व,
अपनी ख्याति,
अपने साथी,
अपनी स्वतंत्रता
और अपना जीवन :
मेरा जो कुछ है, सर्वस्व ग्रहण कर,
जो कुछ तुझे उत्तम लगे।
अब मैं अपना नहीं रहा, परन्तु तेरा हूँ :
अतः तेरा मुझ पर सर्वाधिकार है,
मुझे अपने अधीन बना रहने दे,
और मुझे अपनी सन्तान समझ।
मुझ पर जब आघात् हों, मेरे लिए लड़,
चंगाई दे, जब मुझे घाव लगें,
और जब मैं नाश किया जाऊँ, तो मुझे अनुप्राणित कर।[8]

D. **विश्वास के द्वारा पवित्रीकरण अनुग्रह को तत्काल अपेक्षित जानें**

सर्वप्रथम ऐसा प्रतीत होता है कि यह क्रमिक विकास है, और इसके लिए

परमेश्वर विश्वासी के हृदय को तैयार करने में समय लगेगा । (निश्चय ही पवित्रता में और विश्वासी दोनों में वृद्धि होती है ।) परन्तु परमेश्वर के लोगों की साक्षी सदियों से यह घोषित करती आ रही है कि सम्पूर्ण पवित्रीकरण तत्काल आता है, अर्थात् जब विश्वासी अपना संपूर्ण समर्पण करता चुका होता है और विश्वास में होकर अपना हृदय शुद्ध करनेवाली आत्मा के स्वागत के लिए पूरी गहराई तक खोल देता है ।

E. अपनी आत्मा की प्यास के लिए धैर्य के साथ अनुसरण कीजिए ।

यदि आप अपनी आत्मा की सम्पूर्ण प्यासा का अनुसरण करें, तो परमेश्वर आप को पवित्रीकरण के अनुग्रह की और चलेगा और अपनी संगति का वरदान देगा । अपने सम्पूर्ण हृदय से खोजिए, स्वयं को बिना किसी मानसिक कष्ट दिए अथवा व्याकुल हुए, सधैर्य खोजी बने रहें । ऐसे लोगों की कोशिशों से बचे रहिए जो बहुत जोश में आकर आप को समय से पूर्व आशीष दिलाने का दावा करते हैं । परमेश्वर को इस दिशा में अपना काम करने दीजिए, अधैर्यवान न बनें ।

इस बीच, अपने मसीही जीवन को प्रतीक्षा में मत डालिए । जॉन वेस्लीने यह सिखाया कि सम्पूर्ण पवित्रीकरण के लिए प्रतीक्षा करने का मार्ग वास्तव में स्वयं को "धर्मनिष्ठा के कामों" के लिए अर्पित कर देना है (प्रार्थना, आराधना, प्रवचन - सुनना, प्रभु-भोज में सम्मिलित होना) और "करुणा के कामों में लगाना है (भूखों को भोजन, दुर्बलों को भजन सुनाना, नंगों को वस्त्र देना, रोगियों से भेंट करना)।

आप को यह विश्वास रखना है कि वह अपने पवित्रीकरण का अनुग्रह आप को प्रदान कर सकता है - ख्रिस्त ने अपने क्रूस से अनुग्रह प्रदान किया । अपनी मृत्यु से उसने यह संभव किया । उसने आपके पवित्रीकरण के लिए बिनती की । यह उसकी आप के लिए इच्छा है । वह पवित्रता के लिए आह्वान करता है, और वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए निष्ठावान है । अतः उसके सम्मुख धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते रहें ।

F. सम्पूर्ण पवित्रीकरण के लिए प्रार्थना

यदि आप पहले ही से मसीही विश्वासी हैं, और यदि पवित्र आत्मा के द्वारा चलाए जाने के लिए उत्सुक हैं, तो पवित्रीकरण के अनुग्रह को पाने के लिए इस प्रार्थना को अपनाइए, और यह विश्वास दृढ़ कीजिए कि परमेश्वर आप की इस प्रार्थना को सुनकर उसका उत्तर निश्चय ही देगा :

हे परमेश्वर, मैं अपना सम्पूर्ण हृदय आप के समक्ष खोल कर रखता हूँ । अपने आत्मा की अग्नि से इसे शुद्ध कर, जो कुछ भी इसमें ख्रिस्त के प्रतिकूल है, उसे निकाल दे । मेरे व्यवहार को शुद्ध कर, मेरी आत्मा, मेरी रुचियों को जो अशुद्ध हैं, उन्हें शुद्ध कर । मेरी समग्र पापमयता को नष्ट कर ।

अपने प्रेम से मुझे उस समयतक परिपूर्ण कर, जबतक कि मैं उन लोगों से भी प्रेम न करूँ, जो मुझे सताते हैं । मुझे दिव्य प्रेम की ज्योति बनाइए ।

जो कुछ मेरा है उसे ले ले - मैं कुछ भी शेष न रखूं । मैं अपनी सम्पत्ति पर कोई अधिकार न रखूं, किसी पद अथवा प्रतिष्ठा का कोई दावा न करूँ । मैं तुझे अपनी देह, आत्मा, अपनी स्वतंत्रता, अपने मित्र और अपना जीवन देता हूँ । मेरे साथ जैसा आप चाहें करें । मैं केवल यही इच्छा रखता हूँ कि मैं आप को अच्छी रीति से समझूँ, और अनन्तकाल तक आप की सेवा में लगा रहूँ । मेरे उद्धारकर्ता यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ । आमीन ।[१]

हे बालकों, तुम परमेश्वर के हो : और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है ।

1 यूहन्ना 4 : 4.

11

पवित्र जीवन का रहस्य

मैं इसे नहीं कर पाऊँगी ।'' बड़ी वेदना से उसने यह कहा । मैं, परमेश्वर के लिए जितना अधिक जीने का प्रयत्न करती हूँ, उतनी ही अधिक मेरी स्थिति दयनीय होती जाती है, मैं असफल ही रह जाती हूँ । मैं अपनी बाइबल का अध्ययन और प्रार्थना करती हूँ । मैं निष्ठापूर्वक गिरजे जाती हूँ । मैं दशमांश भी देती हूँ । मैं अपने पड़ोसियों को अपने मसीही जीवन की साक्षी देती हूँ । परन्तु प्रत्येक दिन मैं परमेश्वर को निराश ही करती हूँ । मैं कभी भी सफल नहीं हो पाऊँगी !''

जब पादरी महोदय हँस पड़े, वह रो पड़ी । ''कृपया मेरा उपहास मत कीजिए, ''उसने विरोध जताते हुए कहा; ''यह कोई मज़ाक नहीं है ।''

''मैं जानता हूँ, यह कोई मज़ाक नहीं है ।'' पादरी महोदय ने कहा, ''परमेश्वर का धन्यवाद कि आप यह अनुभव कर सकती हैं । आप सफल नहीं हो सकतीं - परन्तु ख्रिस्त ने तो आप के लिए पहले ही इसे संभव कर दिया है ।''

ख्रिस्त ने तो पहले ही पाप पर विजय प्राप्त कर ली है, और समस्त अंधकार को जो हमारे सामने छाया है, उसे दूर कर दिया है । जैसा कि प्रचारक यूहन्ना ने आश्वस्त किया है,'' हे बालकों तुम परमेश्वर के हो : और तुम ने उन पर जय पाई है, क्योंकि जो तुममें है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है ।'' (1 यूहन्ना 4 : 4) ।

पौलुस ने इसी बात को कुछ इसप्रकार व्यक्त किया है । "उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, पवित्रता, और छुटकारा" (1 कुरिन्थियों । : 30) ख्रिस्त हमारी पवित्रता तथा धार्मिकता है । हमारे लिए उन्होंने अपने प्राण बलिदान चढ़ाए इसलिए वह हमारी धार्मिकता हैं; हमारे हृदयों पर शासन करते हैं और निवास भी इस रीति से, वह हमारी पवित्रता हैं ।

पवित्र जीवन के लिए निम्नलिखित तीन आधारभूत सत्य हैं :

अन्तर को समझना

हमें अवश्य, जैसा कि हम देख चुके हैं, व्यवस्था और सुसमाचार के बीच के अन्तर को अपने विचार-विमर्श में सर्व श्रेष्ठ स्थान देना चाहिए । अन्यथा, हमें भ्रम का शिकार होना पड़ सकता है और अनावश्यक निन्दा का सामना करना पड़ सकता है ।

हम मार्टीन लूथर के साथ सहमति प्रकट करते हैं कि व्यवस्था वह है जिसे परमेश्वर हमारे लिए आवश्यक ठहराता है; सुसमाचार वह है जो उसकी प्रतिज्ञा का आधार है, जो वह हमें प्रदान करता है ।

पुरानी वाचा निस्सन्देह अनुग्रह की वाचा थी, परन्तु उसका केन्द्रीय तत्त्व व्यवस्था थी । जब यीशु से प्रश्न किया गया कि सबसे बड़ी व्यवस्था की आज्ञा क्या है, यीशु ने प्रत्युत्तर में कहा : "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन ... और उसी के समान अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख । ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार है" (मत्ती 22 : 37, 39 - 40) ।

पुरानी वाचा में एक अभाव था, वह यह कि इसके अन्तर्गत प्राण - बलिदान अर्थात् पवित्रीकरण आत्मा का प्रावधान नहीं था । नई वाचा में आत्मा का वचन स्पष्ट रूप से दिया गया है । उसके (परमेश्वर) पुत्र के द्वारा, "जो काम व्यवस्था न कर सकी, उसी को परमेश्वरने अपने ही पुत्र के द्वारा किया" (रोमियों 8 : 3) । ख्रिस्त के द्वारा, परमेश्वर ने पाप को समूल नष्ट कर दिया और पवित्रीकरण की आत्मा को प्रवाहित किया (देखिए 1 - 4 पद) ।

व्यवस्था तो दिव्य आवश्यकता के रूप में बनी रहती है परन्तु यीशु के द्वारा वह और अधिक गहरी और शुद्ध तथा परिष्कृत हो जाती है; परन्तु सुसमाचार यह है कि आत्मा, व्यवस्था को परिमार्जित और पूर्ण करती है जो हमें दी गई है, अतः आत्मा वरदान स्वरूप है । यदि पुरानी वाचा का मुख्य स्वरूप वाचा (जिसे परमेश्वर आदेश - आज्ञा स्वरूप देता है), वहीं दूसरी ओर नई वाचा की आत्मा सुसमाचार है (जिसे परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञानुसार प्रदान करता है) ।

प्रतिज्ञा का विनियोग

गलतियों को पौलुस ने संबोधित करते हुए उस सन्दर्भ में लिखा जब कि यहूदी विधि - वेत्ता उन्हें व्यवस्था की ओर लौटने के लिए ललायित कर रहे थे, पौलुस ने लिखा, "हे निर्बुद्धि गलतियों, किसने तुम्हें मोह लिया है ? तुम्हारी तो मानो आँखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया ! मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूँ, कि तुमने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से, या विश्वास के समाचार से पाया ? क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि आत्मा की रीति पर आरंभ कर के अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे ? (शब्दशः, "सिद्ध होकर" मनुष्यों के प्रयास से ?" (3 : 1 - 3) "खिस्त के आश्रय" से विमुख होकर "स्वयं के प्रयास" पर भरोसा करना वास्तव में ऐसा ही है "व्यवस्था के कामों पर स्थिर रहना" (पद 10) । जिसका अर्थ है दासत्व के भय की ओर मुड़ना (देखिए रोमियों 8 : 15) ।

दुर्भाग्यवश, जो लोग परमेश्वर के आह्वान को पवित्रता के सन्दर्भ में गंभीरता से लेते हैं, बहुधा दासत्व के भय के गढ़हे में गिर जाते हैं । जॉन वेस्ली ने स्पष्ट रूप से देखा कि क्षमा करनेवाला प्रेम ही सब के लिए मूल - आधार है । पवित्रता का मूल इस बात का निश्चय है कि खिस्त यीशु में हैं, "उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं" (रोमियों 8 : 1) । परमेश्वर का धन्यवाद हो, हमें उसने प्यारे में सेंत मेंत दिया" (इफिसियों 1 : 6) । परन्तु हमें इस "स्वीकृति को अवश्य स्वीकार करना है !" वेस्लीने अपने उपदेश "शैतान की युक्तियाँ" में चेतावनी दी है कि शैतान का सबसे बलशाली शस्त्र हमारे मनों में सन्देह उत्पन्न करना है कि हमारी दुर्बलताओं के कारण परमेश्वर के द्वारा हमें स्वीकृत किया जाना असंभव है सन्देह को प्रश्रय देना वास्तव में अपने आनन्द से वंचित होना है, फिर अपनी शान्ति को खोना है, और अन्त में अपने विश्वास और प्रेम से वंचित होना है ।

हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर अवश्य आश्रित होना है "सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं : क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं" (रोमियों 8 : 1) । हमें उस बात पर आना है जहाँ हम अपने विश्वास का प्रयोग हृदय की गहनतम् पवित्रता के लिए करते हैं, हमें अपनी आनन्दमय स्वीकृति की भावना को अक्षुण्ण बनाए रखना है । हम केवल विश्वास ही के द्वारा संपूर्ण (सिद्ध) पवित्रीकरण के अनुभव में प्रवेश कर सकते हैं । हम ऐसा अनुभव आत्मा से आरंभ करते हैं, और हम सिद्ध भी आत्मा में ही होते हैं । उद्धार केवल - "जैसा लिखा है कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा" (रोमियों 1 : 17) ।

वह विश्वास जिसके द्वारा हम वास्तव में पवित्र और परमेश्वर के प्रेम में सिद्ध होते हैं, वह क्या है ? एक बार फिर जॉन वेस्ली के उत्तर की प्रमुख विशेषताओं पर ध्यान दीजिए जो कि इब्रानियों 11 : 1 और रोमियों 10 : 17 पर आधारित हैं : ने अपने पवित्र वचन में इसकी प्रतिज्ञा की है ... ।

दूसरी बात, यह एक दिव्य प्रमाण और विश्वास है, कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है । वह इसे पूर्ण करने में सक्षम है ...।

तीसरी बात, यह एक दिव्य प्रमाण और विश्वास है कि वह अब इसे करने में योग्य और इच्छुक है ... ।

इस विश्वास के आधार पर कि यह इच्छुक भी है और सक्षम भी कि वह हमें आज ही पवित्र कर सकता है, इस दिशा में एक और बात को जोड़ा जाना आवश्यक है, ... एक दिव्य प्रमाण और विश्वास कि वह इसे पूरा करता है । उसी क्षण वह पूरा करता है : परमेश्वर आत्मिक रीति से कहता है, "तेरे विश्वास के कारण यह ऐसा ही हो !"[1]

"शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे - पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें । तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा" 1 थिस्स. 5 : 23 - 24) ।

अनुग्रह चिरस्थायी बना रहे

स्मरण रखें, "मसीह यीशु ... हमारे लिए पवित्रता ठहरा" (1 कुरिन्थियों 1 : 30) । यथार्थ में पवित्र ठहराए जाने का आशय है, पौलुस के साथ यह कहने में योग्य ठहरना," अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह"मुझ" में जीवित है" (गलतियों 2 : 30) । 'पौलुस की प्रार्थना के उत्तर के लिए जो कि इफिसियों में है, अनुभव के होने की आवश्यकता है : "कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ । और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और नेंव डालकर, मसीह के उस प्रेम को जान सको, जो ज्ञान से परे हैं, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ" (3 : 16 - 17, 19 ।

धर्म-ज्ञानी डिट्रिच बॉन हॉफ़र का कथन कि मसीही विश्वासी होना अर्थात् "जो पुराने मनुष्य ने अपने लिए एक निश्चित स्थान धारण किया था अब वह स्थान यीशु ख्रिस्त का होना चाहिए ।"

यह पवित्र होना है; क्योंकि जो मसीही विश्वासी है उसके लिए वास्तव में पवित्र होना ही एक मुख्य बात है ।

ख्रिस्त का मुझ में निवास करना और उसका मेरे जीवन में प्रभुत्व होना उसके आत्मा का मुझमें निवास करना ही है, यही पवित्रता का सार तत्त्व है । वह विजय जो संसार पर की जाती है वह ऐसा विश्वास है ''क्यों कि जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है'' (1 यूहन्ना 4 : 4)

''यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी'' (गलतियों 5 : 25) पौलुस इसी तथ्य पर बल देता है । आत्मा के अनुसार चलना इस बात का स्मरण कराता है कि ख्रिस्त के बिना हम, ''कुछ भी नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15 : 5) । क्षण प्रति क्षण ख्रिस्त पर आश्रित होना ही हमारा जीवन अस्तित्व है ।

अनन्त गहराई में, पवित्रता का अर्थ पवित्र स्वभाव - आदर्श नहीं, यदि हमारा ख्रिस्त के साथ अन्योन्याश्रित संबंध स्थापित नहीं होता, तो यह मात्र पुष्पों को कांट-छांट कर व्यवस्थित करना है ।

अनन्त गहराई में, पवित्रता का अर्थ पवित्र स्वभाव - आदर्श नहीं, यदि हमारा ख्रिस्त के साथ अन्योन्याश्रित संबंध स्थापित नहीं होता, तो यह मात्र पुष्पों को कांट - छांटकर व्यवस्थित करना है । परन्तु यदि हम उसमें निवास करें, उसका जीवन हमारा हमारा बन जाता है, उसका प्रेम हमारा प्रेम हो जाता है, और उसका आनन्द हमारा आनन्द बन जाता है ।

पवित्र जीवन - यापन का रहस्य, ख्रिस्त को उसके पवित्र प्रेम में हमारे भीतर जीने की अनुमति देना है

आप की आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति

आधारस्तंब

1. क्या आप अपने सामर्थ्य से पवित्र जीवन - यापन कर सकते हैं ? हमारी पृथ्वी में लगभग एक अरब लोग बुद्ध धर्म अथवा हिन्दू धर्म का पालन करते हैं । कुछ अच्छी बातों के अलावा, ये धर्म निराशाजनक ही हैं । निरन्तर अवतार के चक्र से मुक्त होने की बहुत ही कम आशा होती है । आप को निरन्तर जन्म - जन्मान्तर के चक्र में घूमना ही पड़ता है, जब कहीं जाकर आप निश्चित स्थान पर पहुँचते हैं । विधि और माप इन में हैं । उदाहरण के लिए बौद्ध धर्म, चार आधारभूत सत्यों और आठ मार्गों से उचित जीवन निर्वाह के सिद्धान्तों और दस आज्ञाओं की धुरी से आरंभ होता है, और इसमें 250 नियम पुरुषों और 500 नियम स्त्रियों के लिए निर्धारित हैं (स्त्रियों के लिए अधिक इसलिए हैं, क्योंकि

वे निम्नतर हैं । शास्त्रीय बौद्धमत तो यह भी शिक्षा देता है कि एक स्त्रीर इसके पूर्व वह प्रबुद्धावस्था की सीढ़ी पर पहुँचे और निर्वाण को प्राप्त हो, उसे पुरुष रूप में जन्म लेना आवश्यक है) हिन्दू धर्म में तो इसी प्रकार के कठोर विधि - नियम हैं । उनकी धर्म शिक्षा में कोई उद्धारकर्ता नहीं है, जो कि मुक्ति - अनुग्रह दे सके । प्रत्येक व्यक्ति को इसके लिए स्वयं संघर्ष करना होता है । और सर्वोच्च गंतव्य अव्यक्तिगत निर्वाण के अस्तित्व में विलीन हो जाता हैं, जिसमें समस्त व्यक्तित्व अथवा व्यक्तिगत विशेषता अनन्त में विलीन हो जाती है । व्यक्तिगत अस्तित्व अवतारों के चक्र में तिरोहित होता अन्त है, जिसे सर्वोच्च आज्ञा की दृष्टि से देखा जाता है, जिस में वास्तव में प्रबुद्धावस्था अथवा मोक्षप्राप्ति की बहुत ही कम आशा दृष्टिगोचर होती है । निर्धनता में जीते हुए आप हो सकता है पुनः एक भिक्षुक के अवतार में पुनःजन्म लें, अथवा, गदहे, गाय अथवा किसी जीव-जन्तु के रूप में । यह एक पौराणिक भारतीय लोक-गीत है जिसमें निराशावाद झलकता है :

कितने जीवन बीत गए, मैं कह नहीं सकता ।
कितने अभी आने शेष हैं कोई नहीं बता सकताः
परन्तु मैं केवल यह जानता हूँ, और अच्छी तरह जानता हूँ,
वेदना और शोक सर्वत्र कटुता से भरा हुआ है ।[2]

पथ भ्रष्ट प्रकाश में ? मार्क अलबर्ट ने अपनी भेंट - अनुभव में उल्लेख किया है, जब वे उत्तर भारत में एक लंगोटी धारक साधु से मिले । उसके मस्तक पर हिन्दु तिलक चिन्ह अंकित था, तीन श्वेत रेखा-चिन्ह जो कि उसकी शिव-संहारक भक्ति के प्रतीक स्वरूप थे । एक शींतकाल के दिन वह अपनी छोटी सी गुफा - द्वार पर बैठा हुआ था, और उसकी जटाएँ उलझी हुई थीं और ठण्ड से काँप रहा था ।

"आप ऐसा जीवन क्यों व्यतीत कर रहे हैं ?" मार्क ने प्रश्न किया ।

उसने मन्द मुस्कान बिखेरते हुए उच्च अंग्रेजी में उत्तर दिया : "आप इसे नहीं समझ सकते । मैंने मुम्बई के एक परिवार में जन्म लिया और मैंने विश्वविद्यालय की उपाधि भी प्राप्त की । तीस वर्ष की आयु में मुझे ज्ञान हुआ कि ये सब निरर्थक हैं ।"

उसने अपना वक्तव्य निरन्तरित करते हुए कहा कि उसके जीवन के 1, 742 वें जन्म - रूपों में संसार-चक्र उनको मार्गदर्शन करता आ रहा है । अब उसने पर्याप्त जन्म - रूप धारण कर लिए हैं । उसने कहा कि यदि वह मुम्बई में

ऐश्वर्यशाली जीवन निर्वाह करता तो न जाने और कितने दुःखदायक जीवन चक्रों में से होकर गुजरना होता ! अतः उसने अपना स्वयं का मोक्ष पाने के लिए (प्रबुद्धावस्था) उसने सभी ऐश्वर्य साधनों का त्याग कर दिया और एक पवित्र - साधु का जीवन व्यतीत कर रहा है ।

"मैं रोज़ आठ घण्टे जप - तप करता हूँ, और केवल कन्द-मूल सेवन करता हूँ । पवित्र गंगा - जल सेवन करता हूँ ... । मै जब मरूँगा, मैं पुनः इस पृथ्वी पर दुःख - वेदना सहने के लिए वापस नहीं लौटूँगा । मैंने प्रबुद्धावस्था को प्राप्त कर लिया हैं।"[3]

इसे अध्याय ग्यारह के इस अंश से तुलना कीजिए "तू इसे प्राप्त नहीं कर सकता - परन्तु ख्रिस्त ने तेरे लिए इसे पहले ही पूरा कर लिया है ।" मसीही धर्म में आशा सर्वोच्च है ।

2. आधार - सिद्धान्त

इस अध्याय के अन्तर्गत दिए गए आधारस्तंब रूपरेखा का पुनरावलोकन कीजिए । प्रत्येक भाग में निहित बातों का अध्ययन करें, और अपने शब्दों में इस अनन्त सिद्धांन्त का सारांश प्रस्तुत करें

एक अन्तर को स्पष्ट समझना

अनन्तकालीन सिद्धान्त :

एक प्रतिज्ञा को कार्यान्वित करना :

एक अनुग्रह में जीवनयापन करना

आत्मिक आधारस्तंब

सात प्रश्नोत्तरी परीक्षा

1. एक समय जब मैं व्यवस्था और अनुग्रह (अथवा सुसमाचार) के अन्तर को समझने में असफल रहा, जब मैं ...
2. शैतान ने आप की कितने समय से उस कमज़ोरी का पता लगाया और आप को परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किए जाने के विश्वास के विरुद्ध सन्देह में डाल दिया ? आप का विश्वास किस प्रकार वापस आया ? क्या यह विश्वास पुनः जागृत हुआ ?

जॉन वेस्ली के प्रवचन "शैतान के उपाय" के सन्दर्भ को पुनः पढ़िए, जो इस अध्याय में संकलित है ।

3. मार्टिन लूथर ने देखा कि परमेश्वर हम से व्यवस्था की अपेक्षा करता है, परन्तु वह हमें सुसमाचार (अनुग्रह) का दान देता है । अब यह ज्ञान आप के आत्मिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता है ?
4. वह समय जब मैंने परमेश्वर पर विश्वास त्याग कर (ख्रिस्त पर) स्वयं पर विश्वास किया ...
5. रोमियों 8 : 3 पर ध्यानाकर्षित कीजिए, "जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया ।" यदि आप को आज रात पारिवारिक आराधना के अवसर पर इस पद पर विचार करना पड़े, आप क्या प्रस्तुत करेंगें ?
6. इस अध्याय के अन्तर्गत हम से निवेदन किया गया है कि हम आत्मा में होकर चलें, "प्रति क्षण ख्रिस्त के आत्मा पर अवलंबित रहें । आप इस दिशा में कितने सफल रहे हैं ? आपने आत्मा के मार्गदर्शन में क्षण - प्रतिक्षण चलते रहने की दिशा में चलते रहने के लिए कौन सा कदम उठाया ताकि आप आत्मिक विकास की ओर बढ़ सकें ?

अध्याय की समाप्ति के लगभग लेखक ने एक रूपक "पुष्पों को कांट - छांटकर व्यवस्थित करना' का प्रयोग किया है, आप इस रूपक से क्या आशय लगाते हैं ?

कार्य-साधन,

2. किसने कहा ?

श्रोताओं को विश्वास दिलाने की दिशा में सर्वोत्कृष्ट साक्ष्य प्रस्तुत करना, एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व है । अर्थात् आप की बात को कौन प्रमाणित करता है ? क्या आप ने इस सन्दर्भ में यूहन्ना सुसमाचार के लेखक अथवा जॉनी कॉक्रेन, मार्टीन लूथर अथवा मार्टीन मुल्ल का उल्लेख किया ?

इस अध्याय - अध्ययन के अन्तर्गत लेखक ने बाइबल के तीन लेखकों का उल्लेख किया है । देखिए इन्होंने पवित्रता के संबंध में क्या विचार प्रस्तुत किए हैं :

पौलुस

मत्ती

यूहन्ना

लेखक ने इसे प्रमाणित करने के उद्देश्य से इन व्यक्तियों का भी प्रयोग किया है :

- जॉन वेस्ली

लेलिया एन. मॉरिस

डेट्रिक बॉनहॉफ़र

मार्टीन लूथर

जॅक फ़ोर्ड

पुनरवलोकन कीजिए कि इन "साक्षीधारकों" ने क्या कहा है ? उनके विचारों पर ध्यान दीज़िए । अपने आत्मिक जीवन में इन लेखकों के शब्दों को आत्मसात् करें, जिनका आप के जीवन में आज अत्यन्त महत्त्व है ।

2. जीवन का रहस्य

इस अध्याय का अन्तिम वाक्य पवित्र जीवन के रहस्य का उद्घाटन करता है ... ख्रिस्त को अपना पवित्र जीवन आप के जीवन में जीने देने की अनुमति देना ।

एक कार्ड पर इस रहस्य को लिखिए । एक प्रतिज्ञा के रूप में लिखिए कि आप अपने जीवन में ख्रिस्त को उसके पवित्र जीवन जीने की अनुमति देने के लिए वचन-बद्ध हैं । इस प्रतिज्ञापत्र को अपनी बाइबल, अपने मनी-बॅग, अपने फ्रिज़ के द्वार पर जहाँ कहीं आप इसे स्पष्ट रूप से आते - जाते देख सकते हैं, वहाँ रखिए ।

जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुँच भी हुई है, और परमेश्वर की आशा पर गर्व करें । और आशा से लज्जा नहीं होती, क्यों कि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है ।

रोमियों 5 : 2, 5.

12

प्रेम ने महिमा के पूर्वास्वाद को सिद्ध किया

जैसा कि हम ने इन पृष्ठों में देखा है, मुख्यतः मसीही जीवन के सन्दर्भ में परमेश्वर के विधान के संदर्भ में ... जो कि सुसमाचार के अन्तर को व्यवस्था से स्पष्ट करता है, और सुसमाचार तो पवित्र आत्मा का मानव के लिए एक वरदान है, जो कि उसकी सन्तान के लिए किए गए जो कि पुराने नियम में किए गए थे, उनका पूरा किया जाना है, जैसा कि हम आगे देखने जा रहे हैं, जो हमें उद्धार के इतिहास में ''अन्तिम दिनों'' में प्रदान किए जा रहे हैं ।

पिन्तेकुस्त के दिन, परमेश्वर की प्रतिज्ञा का पूरा होना, पतरस को दिया गया बड़ा नाटकीय प्रबोधन था :

भविष्यवक्ता ने यह भविष्यवाणी की थी -

''कि परमेश्वर कहता है कि, अन्त के दिनो में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे । बरन मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यवाणी करेंगे । और मैं ऊपर

आकाश में अद्‌भुत काम, और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात लोहू, आग और धूंए का बादल दिखाऊंगा । प्रभु के महान और प्रसिद्ध दिन के आने से पहले सूर्य अंधेरा और चाँद लोहू हो जाएगा । और जो कोई प्रभु का नाम लेगा वही उद्धार पाएगा ।''

(प्रेरितों के काम 2 : 16 - 21)

जिन ''अन्तिम दिनों'' का उल्लेख यहाँ योयेल भविष्यवक्ता ने किया है, वे उद्धार की वाचा के युग के हैं, आत्मा के काल के हैं, जो कि पिन्तेकुस्त के समय आरंभ हुए जो कि प्रभु के ''महान और प्रसिद्ध'' दिन तक निरन्तरित बने रहेंगे, जब कि प्रभु ख्रिस्त न्याय और अन्तिम उद्धार के दिन हमारी इस पृथ्वी पर पुनः आगमन करेंगे ।

परमेश्वर का आत्मा उसके प्रेम के कारण उंडेला गया ।

उपर्युक्त पद में जिसका उल्लेख किया गया जिसे ''रोमियों के पिन्तेकुस्त'' का दिन कहा गया, पौलुस प्रेरित संत ने हमें पवित्र आत्मा के वरदान को जो कि उद्धार - काल में दिया गया उसका नैतिक महत्व प्रस्तुत किया है : ''पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मनों में डाला गया है'' (रोमियों 5 : 50 । परमेश्वर का आत्मा उसके प्रेम के कारण उंडेला गया ।

पौलुस के पद उद्धार के सम्पूर्ण महत्त्व को समझने के लिए, हमें अवश्य इसे इस प्रसंग से जोड़ना चाहिए ।'' सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें । जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर धमण्ड करें । केवल यही नहीं, बरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है । और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मनों में डाला गया है'' (रोमियों 5 : 1 - 5)

पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर ने अपना प्रेम प्रेरितों के मनों में उंडेला और उन्हें प्रेरित भी किया कि वे भी अपने जीवनों को अपने सहविश्वासियों के साथ परमेश्वर की सेवा, प्रेममय होकर करें, इस आशा और विश्वास के साथ कि परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र को मृतकों में से जिलाकर अपने राज्य की स्थापना की - यीशु को जिसने अपने प्राण क्रूस पर दिए उसे अपने दाहिने हाथ बैठा कर ऊँचा उठाया और अपने पुत्र को हमारी पृथ्वी पर पुनः भेजकर अपने राज्य को पूर्ण रूप से प्रतिस्थापित करेगा और अपने लोगों को अन्तिम रूप से उद्धार दिलाएगा और संसार का न्याय करेगा ।

उसी रीति से, जब स्वर्गिक पिता अपना प्रेम पवित्र आत्मा के रूप में हमारे मनों में उंडेलता है तो हम भी पवित्र प्रेम से भरकर परमेश्वर को जानेंगे और उसे प्रेम करेंगे

तथा दूसरों के लिए स्वजीवनों को, यह विश्वास के साथ कि जिसने हम में यह अच्छा काम आरंभ किया, अपना प्रेम उन पर उंडेलेंगे, "मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिसने तुम में अच्छा काम आरंभ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा" (फिलिप्पियों 1 : 6) । ऐसा विश्वास, प्रेम और सुसमाचार की यह आशा है ।

परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे मनों में भरा जाता है, यह तत्काल हमारी पवित्रता और आशा का प्रतीक है ।

आइए, इन प्रत्येक सत्य बातों को हम सविस्तार अध्ययन करें ।

सर्वप्रथम, परमेश्वर का प्रेम जो हमारे मनों में अप्लावित होता है वही हमारी पवित्रता का प्रतीक है ... उसकी आज्ञा की पूर्णता है ।

सब से महान आज्ञा का नियम

आइए उस बात पर पुनर्विचार करें जिसे हमने पहले व्यक्त किया है । जब फरीसियों ने यीशु से प्रश्न किया कि सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है, यीशु ने प्रत्युत्तर में कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन, और सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख । बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है । और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख, ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार है ।" (मत्ती 22 : 36 - 40) ।

व्यवस्था और सुसमाचार

मार्टीन लूथर महोदय ने आग्रहपूर्वक कहा कि यदि आप व्यवस्था और सुसमाचार के मध्य के अन्तर को जानते हैं, तो आप धर्मज्ञानी हैं । अतः विचारणीय बात है कि, जब कि परमेश्वर की व्यवस्था सिद्ध प्रेम की आज्ञा देती है (व्यवस्था विवरण 6 : 4 - 5; लैव्यव्यवस्था 19 : 18), यह ऐसा प्रेम नहीं दे सकती । परन्तु परमेश्वर के सुसमाचार पर ध्यान दीजिए : "क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पाप के बलिदान होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी (दूसरों के लिए और परमेश्वर के लिए प्रेम - 5 : 5; 13 : 8 - 10) इसलिए कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं बरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए" (रोमियों 8 : 3 - 4) । परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा के द्वारा जो प्रेम हमारे मनों में उंडेलता है वह कार्य हमारे मनों में उस आज्ञापालन को उत्पन्न करता है जिसकी विधि ने आज्ञा दी ।

प्रेम ने सिद्ध किया

संत यूहन्ना की बातों पर ध्यान दीजिए जब कि वह अपनी प्रथम पत्री में उल्लेख करता है, "प्रिय जनों, आइए परस्पर प्रेम रखें, क्योकि प्रेम परमेश्वर की ओर से हैं; जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है" (2 : 5) और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है । जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है । यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है, और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है । और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उसको हम जान गए, और हमें उसकी प्रतीति हैं; परमेश्वर प्रेम है; और जो प्रेम में बना रहता है, और परमेश्वर उस में बना रहता है । इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं "(4 : 7 - 8, 12, 16 - 17) ।

जब कि "वह" सर्वनाम जो कि पद 17 में प्रारंभिक सन्दर्भ में ऊपर दिया गया है वह कदाचित् ख्रिस्त के लिए है । ऑगस्टीन ने यहाँ यीशु के पर्वतीय उपदेश में एक नैतिक समानान्तर को परिलक्षित किया है । जैसा पिता परमेश्वर सभी से किसी पूर्व मांग के बिना बराबर प्रेम करता है, अर्थात् अपने बैरियों तथा अपने मित्रों के साथ - इस लिए "हमें भी जो इस संसार में हैं", यदि हम भी अपना प्रेम उस ईश्वरीय प्रेम के प्रति रखें । इस रीति से किया गया प्रेम - "इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गिक पिता सिद्ध है" (देखिए मत्ती 5 : 48)[1] "हम इसे परमेश्वर प्रदत्त जानते हैं न कि यह हमारी ओर से है, "बोनी थर्सट्न कहते हैं, "जब हम अपनी इच्छा में यीशु का अनुसरण करते है, हम भला कर सकते हैं, जब कि हम इसके प्रति भला नहीं सोचते ।"[2]

तात्पर्य यह कि परमेश्वर का प्रेम हमें उससे प्रेम करने के प्रति उद्यत् करता है ।

पौलुस की इफिसियों के नाम लिखी गई प्रार्थना कि वे प्रेम में सिद्ध बने रहें यह है : "मैं इसी के कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ, कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ । और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डालकर, और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ" (3 : 14, 16 - 17, 19) ।

परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया और वह प्रेम परमेश्वर के आत्मा से पूर्णता को प्राप्त हुआ, यह मसीहीजनों के लिए परमेश्वर की ओर से दिया गया महान

वचन (प्रतिज्ञा) है । "आप इस से कोई अन्य महान वस्तु को प्राप्त नहीं कर सकते," वेस्ली का कथन है, "उस समय तक जब तक कि आप अब्राहम की गोद में नहीं लिए जाते ।"[3]

दूसरी, और उतनी ही महत्त्वपूर्ण बात यह कि परमेश्वर का प्रेम जो हमारे मनों में पवित्र आत्मा के द्वारा उंडेला जाता है, वह हमारी आशा भी है ... और यह निश्चयात्मक और 'ख्रिस्त के द्वितीय आगमन से पूर्व महिमा की पहली आशीष है ।

"परमेश्वर का राज्य कोई खाने - पीने का राज्य नहीं, परन्तु धर्म, और मिलाप और वह आनन्द है; जो पवित्र आत्मा से होता हैं" (रोमियों 14 : 17) । इन आशीषों को आत्मा में अनुभव करना, वेस्ली महोदय कहते हैं कि "आत्मा में स्वर्ग का पहले ही से खुल जाने के समान है ।" पवित्र आत्मा, "मसीही आत्मा को प्रेरणा देती है, इसके साथ ही परिपूर्ण आनन्द, यह इस बात का प्रमाण है कि आत्मा के द्वारा उसे ऐसा अनुभव होता है कि वह वास्तव में परमेश्वर की सन्तान है, फलस्वरूप वह एक अवचर्नीय आनन्द का अनुभव करता है, उसे परमेश्वर की महिमा की आशा जो होती है ... ।"[4]

आत्मा का सच्चा परिचायक

"क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएँ हैं, वे सब उसी में "हां" के साथ हैं : इसलिए उसके द्वारा आमीन भी हुई है कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिसने हमें अभिषेक किया वही परमेश्वर है; जिसने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया ।" पुनः इफिसियों 1 : 13 - 14 में वह कहता हैं, "और उसी में तुम पर भी जब तुमने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिसपर तुमने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी । वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो ।"

इन पदों में हमें हर्षातिरेक और मूल्यवान रूपक का परिचय मिलता है । उन दिनों सभी शासकीय पत्रों और दस्तावेजों को लाख लगाकर मोहरबन्द किया जाता था । उस पत्र पर गर्म की हुई लाख का एक बड़ा पिघला अंश टपकाकर उस पत्र और दस्तावेज़ पर भेजनेवाले की मुहर अथवा हस्ताक्षर किए जाते ताकि वह पत्र शासकीय घोषित किया जाए । पवित्र आत्मा, विश्वासी का जीवन है, और उस पर दिव्य मुहर मान्यता के प्रमाण स्वरूप लगाई गई है,' "तौ भी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है कि प्रभु अपनों को पहचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे ।" (2 तीमुथियुस 2 : 19) । यदि समर्पित हृदय गर्म की हुआ लाख है, तो पवित्र आत्मा एक मुहर है ... और ख्रिस्त की छाप

एक स्पष्ट दिखाई देनेवाली परिचायक है । यह मोहर विश्वासी के लिए एक निश्चयात्मकता है और संसार के लिए एक पहचान है ।

इस रूपक में हमें एक और अति सुन्दर सच्चाई का परिचय मिलता है । यह बयाना दोनों के हित में अर्थात् खरीदनेवाले और बेचनेवाले के बीच एक सहमति है जो इस लेन - देन की पुष्टि करता है, इस मिलाप के समझोते की पुष्टि है, विश्वासी और परमेश्वर की बीच किया गया समझौता है । पवित्र आत्मा का वरदान प्रथम बयाना है, जो दिया गया था, जो परमेश्वर के असीम कोश से हम पर परमेश्वर की योजना स्वरूप उस उद्देश्य से दिया गया कि जब ख्रिस्त अपने आगमन के अवसर पर हमारे उद्धार के कार्य को पूरा करें । जब तक हम परमेश्वर में बने रहते हैं, और वह हममें, हमारे पास एक निश्चित प्रतिभूति है, और स्वर्ग के आनन्द का पूर्व आनुभाविक स्वाद है । "और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है" (इफिसियों 4 : 30) पौलुस यहाँ स्पष्ट चेतावनी देता है । जब तक हम परमेश्वर के प्रेम में बने रहते हैं, और उसका प्रेम हम में बना रहता है, "और हम अधर्म से दूर रहते हैं" पवित्र आत्मा की छाप हमारे लिए है, और हमारे पास निश्चितता है और स्वर्गिक आनन्द का पूर्व स्वाद भी है ।

आत्मा के प्रथम फल

रोमियों 8 अध्याय में पौलुस एक और रूपक का उल्लेख करता है ... "आत्मा के फल" जिन्हें मसीही विश्वासी प्राप्त कर आनन्द मना सकते हैं (पद 23) । इसे अपना ध्यानाकर्षित केन्द्र बनाइए । जिस प्रकार केलब और यहोशु ने कनान देश, जिसकी वाचा परमेश्वर ने की थी, वहाँ के अंगूर, दूध और मधु के आनन्द की पूर्व कल्पना की थी (यदि वे वहाँ जाते और उन्हें प्राप्त करते), उसी भांति पवित्र आत्मा "प्रथम फल" हैं प्रभु की महिमा के स्वाद का पूर्वानुमान और स्वाद हैं जो कि हमारे हो सकते हैं जबकि ख्रिस्त के आगमन के अवसर पर हम उसे प्रत्यक्ष देखेंगे ।

सी. एफ. बटलर महोदय ने हमें यह गीत सिखाया है,

कभी स्वर्ग एक अगम्य स्थान प्रतीत होता था,

जब तक कि यीशु ने अपना मुस्कराता चेहरा नहीं दिखाया था ।

अब यह मेरी आत्मा में आरंभ हो चुका है;

जब तक यह अनन्त काल न बीत जाए, यह बना रहेगा ।

आह, हॅलेलूय्याह, हाँ, यह स्वर्ग है ।

मेरे पाप क्षमा किए गए यह स्वर्ग-ज्ञान के बाद मालूम हुआ !

चाहे स्थल, या जल कहीं भी क्यों न हो ?

जहाँ यीशु है, वहाँ स्वर्ग है !

इसी स्वर्गिक पूर्व - स्वाद का उल्लेख पौलुस हमारे इस अध्याय में कर रहा है। "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें । जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुँच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें । केवल यही नही बरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मनों में डाला गया है" (रोमियों 5 : 1 - 5) ।

पवित्र आत्मा ख्रिस्त की विजय की साक्ष्य है

पवित्र आत्मा जो हमारे मनों में निवास करता हैं, वह ख्रिस्त के स्वर्ग में राज्य करने का हमारे मनों में एक आनुभाविक अंश है, ओर यह भी कि वही ख्रिस्त अपनी महिमा में भविष्य में आनेवाला है । इस पर विचार कीजिए । पवित्र आत्मा का हमारे मनों में निवास यह विश्वास उत्पन्न करता है कि ख्रिस्त ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा हमारे पक्ष में उस शैतान का सिर कुचल डाला और हमारे उद्धार को सुरक्षित ठहराया । संसार का सरदार दोषी ठहराया गया" (यूहन्ना 16 : 11) । शैतान पराजित शत्रु है !

परमेश्वर के पुत्र ने अपनी सलीब पर शैतान को पराजित कर दिया, पाप का सर्वनाश कर दिया, और मृत्यु को समाप्त कर दिया । वह ख्रिस्त हमारा विजयी उद्धारक है ! यद्यपि शैतान की पूँछ अभी भी एंठ रही है और भ्रम उत्पन्न कर रही है (जैसा कि प्राचीन वृद्धों ने कहा है) परन्तु उसका अन्तिम विनाश सुनिश्चित है ! "जगत का राज्य हमारे प्रभु का हो गया और वह युगानुयुग राज्य करेगा" (प्रकाशित वाक्य 11 : 15) ।

पवित्र आत्मा का हमारे मनों मे निवास ख्रिस्त की हमारी वर्तमान बुराइयों पर विजय है, शैतान की प्रभुता पर विजय है, पाप पर, और मृत्यु पर विजय है, और हमारे लिए अविनाश और अनन्त जीवन का निश्चित आश्वासन है !

यदि कोई धुमकेतू किसी दिन हमारे इस ग्रह पर टूट पड़े तो क्या हो ? हमें एक ऐसा राज्य मिला है, "जो हिलने का नहीं (इब्रानियों 12 : 28) "मेरा राज्य इस जगत का नहीं" यीशु ने संबोधित किया, (यूहन्ना 18 : 36) ।" वह आशा हमारे

प्राण के लिए ऐसा लंगर है, जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुँचता है, जहाँ यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिए अगुआ की रीति पर प्रवेश हुआ है'' (इब्रानियों 6 : 19 - 20)'' पर हम अब तक सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते'' इब्रानियों का लेखक इस बात को स्वीकार करता है ।'' परन्तु तू ने सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया : इसलिए जबकि उसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, तो उसने कुछ भी न रख छोड़ा, जो उसके अधीन न हो । पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुःख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखे'8 (इब्रानियों 2 : 8 - 9)।

ख्रिस्त की विजय पवित्र आत्मा में हमारी है

पौलुस समस्त बातों का सार इस प्रकार व्यक्त करता हे ''आशा हमें निराश नहीं करती, क्यों कि परमेश्वर ने अपना प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में उंडेला है, जिसे उसने हमें दिया है ।'' पवित्र आत्मा का हमारे मनों में निवास ख्रिस्त की हमारी वर्तमान बुराइयों पर विजय है, शैतान की प्रभुता पर विजय है, पाप और मृत्यु पर विजय है, और हमारे लिए अविनाश और अनन्त जीवन का निश्चित आश्वासन है !

परमेश्वर के अनुग्रह और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा ''हम ने विजय प्राप्त की है'' शैतान और उसकी बुराइयों की शक्तियों पर विजय प्राप्त की है ''क्योंकि जो तुम में है वह उससे जो संसार में है, बड़ा है'' (1 यूहन्ना 4 : 4) ! और क्योंकि ख्रिस्त ने परमेश्वर में होकर, ''शरीर में पाप का नाश किया है,'' मैं इसे प्रमाणित कर सकता हूँ'' क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया ''(रोमियों 8 : 2) । और जब परमेश्वर का प्रेम हम में सिद्ध किया गया, ''इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं । प्रेम में भय नहीं होता बरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होते है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ'' (1 यूहन्ना 4 : 17 - 18) । ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है ।'' (कुरिन्थियों 15 : 57)।

''हमारी आत्माओं में स्वर्ग पहले ही खुला है''

इब्रानियों में लिखा है, पवित्र आत्मा में हम ... ''स्वर्गिक वरदान का स्वाद चख चुके हैं ... परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थ्यों का स्वाद चख चुके हैं'' (इब्रानियों 6 : 4 - 5) । चार्ल्स वेस्ली ने इस महिमामय सत्य की काव्यगत

अभिव्यक्ति इस प्रकार व्यक्त की है :

आह, हमारी कितनी धन्य आशा है !
जबकि हम यहाँ इस पृथ्वी पर निवास करते हैं,
हम स्वर्गिक सामर्थ्यों का अधिकाधिक स्वाद चखते हैं,
और उस दिन का स्वाद पूर्व ही में चख चुके हैं ।

हम पुनरुत्थान का अनुभव समीप आता जान रहे हैं,
हमारा जीवन ख्रिस्त में समाहित है;
और उसकी महिमामय उपस्थिति से यहाँ
हमारे पार्थिव शरीर भरे हुए हैं ।

एक छोटा बालक अपनी पतंग को उड़ा रहा था, वह इतनी ऊँचाई पर जा चुकी थी कि दिखलाई नहीं दे रही थी । एक मनुष्य ने उस पतंग की डोर को थामें जो पतंग अदृश्य थी, उस बालक से पूछा "तुम क्या कर रहे हो ?" "अपनी पतंग उड़ा रहा हूँ ।" "तुम्हें यह कैसे ज्ञान होता है कि पतंग वहाँ ऊँचाई पर उड़ रही है ? तुम तो इसे देख भी नहीं सकते"। "नहीं" बालक ने प्रत्युत्तर में कहा, "परन्तु मैं यह जानता हूँ वह वहाँ ऊपर है, क्योंकि मैं इस डोर पर खिंचाव का अनुभव करता हूँ ।" पवित्र आत्मा दिव्य प्रेम से हमारे हृदयों में भरी है जो कि स्वर्गिक खिंचाव है और इसी से हमें अपने अन्तिम उद्धार की निश्चितता का ज्ञान होता है ।" आशा हमें निराश नहीं करती, क्योंकि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में अपना प्रेम भर दिया है, जो कि उसने हमें दिया है ।"

"हम परमेश्वर की बुद्धि की रहस्यात्मक अभिव्यक्ति करते हैं" पौलुस 1 कुरिन्थियों में लिखता हैं" परन्तु जैसा लिखा है कि जो आँख ने नहीं देखा, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं ।

"परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; ।" (2 : 7, 9 - 10)

आपकी आत्मिक यात्रा के लिए ज्योति

आधारस्तंब

यह अध्याय कुछ मुख्य निर्माण सूत्रों पर आधारित है । इस अध्याय के अन्तर्गत प्रयुक्त प्रमुख आधार सूत्रों के पदों के केन्द्रीय और जिन भावनाओं पर ये आधारित

हैं, उनका पुनर् अध्ययन कीजिए । ये केन्द्रीय आधार निम्नलिखित हैं :

प्रेम

पवित्रता

सेवा

आशा

स्वर्ग

क्रमिक सीढ़ियाँ

1 पुल निर्माण

प्रत्येक शिक्षक, वक्ता और प्रचारक का यह कार्य है कि वह सिद्धान्तों, सूत्रों और विचार-बिन्दुओं पर अपने छात्रों और श्रोताओं के प्रतिदिन के जीवन पर आधारित मुख्य बातों को प्रेषित करने के लिए अपना विषय - चयन करें । कई बार ऐसे निर्माण प्राचीन काल से आधुनिक काल को पुल की तरह परस्पर जोड़ते हैं अथवा भावनात्मक से व्यावहारिकता को जोड़ते हैं । कई बार यह समन्वित करने का काम सिद्धान्त और व्यवहार को जोड़ने का होता है अथवा सामान्य और मुख्य को अथवा नकारात्मक और सकारात्मक का समन्वय होता है । उपर्युक्त आधार - स्तंबों को पुल - निर्माण के दृष्टिकोण से विचार कीजिए । इन में से एक अथवा अनेक स्तंबों के आश्रय से पुल निर्माण कीजिए, इन्हें परस्पर अपने व्यक्तिगत जीवन के सन्दर्भ में परस्पर जोड़िए । ऐसा पुल कदाचित् आपके जीवन से मेल खाता हो, जिसमें आपके जीवन की निम्न बातें सम्मिलित हों :

शारीरिक अवस्था

पारिवारिक जीवन

सामाजिक जीवन

व्यावसायिक जीवन

आराधनात्मक जीवन

परमेश्वर के प्रति सेवा, कलीसिया के प्रति तथा व्यक्तियों के प्रति आपकी सेवा - भावना

2. मनन - चिन्तन के लिए

परिवर्तन :

"हे परमेश्वर - पुत्र, मेरे लिए कोई चमत्कार करें, और मेरा हृदय - परिवर्तित

कीजिए; मेरे लिए आपने मानव - शरीर धारण किया ताकि मेरा उद्धार हो, यह मेरी दुष्टता को दूर करने से कहीं अधिक कठिन कार्य था ।''

- प्राचीन आयरिश प्रार्थना, 1448

मसीही सेवा :

मैं एक समुद्र में एक द्वीप सादृश हूँ, कदाचित् भूमि पर एक पर्वत की भांति हूँ, जब चन्द्रमा प्रकाशहीन हो जाए, मैं एक तारे की भांति हूँ, कदाचित्, किसी दुर्बल के हाथ की लाठी बनूँ ।''

- प्राचीन स्कॉटिश कहावत

आशा :

जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ, उन्हें मैं जानता हूँ ... और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा ।''

यिर्मयाह 29 : 11

कार्य - साधन

दूसरों को दीजिए

अब जब कि आप ने इस पुस्तक को पूर्णरीति से पढ़ लिया है और अपना गृह - कार्य भी कर लिया है, इस दिशा में प्रार्थना की है, यह पुस्तक आप के लिए कार्य-साधन सिद्ध हो गई है, अब आप इसे दूसरों तक पुहँचाकर इस दिशा - उद्देश्य में उनकी सहायता कर सकते हैं । अतः दूसरों तक पहुँचाइए । इसे दूसरों को दीजिए ताकि वह व्यक्ति इसके अध्ययन से लाभान्वित हो, जैसे आप स्वयं हुए हैं ।

आप जिसे यह पुस्तक प्रदान करना चाहते हैं उसके लिए आप कोई पत्र अथवा अपने विचार लिख कर उसे समर्पित करें । उस व्यक्ति के प्रति अपनी सराहना प्रस्तुत कीजिए । एक अच्छे चरित्र के गुण का उल्लेख कीजिए, कोई उचित उदाहरण अथवा सहायता कार्य का उल्लेख करें जिसे किसी ने आप के लिए या आप ने किसी के हित में किया हो । यह भी उल्लेख करें कि यह पुस्तक किस प्रकार आप के लिए सहायक सिद्ध हुई है । आप और अन्य जिसे आप यह पुस्तक भेंट स्वरूप दे रहे हैं, मिलकर इस पुस्तक के सन्दर्भ में अपनी राय दे सकते हैं, इसके प्रति आप की क्या प्रतिक्रिया है, क्या चुनौतियाँ हैं, और इनके उत्तर भी प्रस्तुत कीजिए ।

टिप्पणियाँ

प्रेषित

1. विलियम एम. ग्रेट हाउस, "बिफ़ोर आई गो लॅट मी से ... ।" हेरल्ड आव्ह होलिनॅस, जुलाई 1989, 6.
2. वही सन्दर्भ

अध्याय 1

1. जॉर्ज क्रॉफ्ट सेल, दी रिडस्कव्हरी आव्ह जॉन वेस्ली (न्यूयॉर्क : हेनरी होल्ट एण्ड कं. 1935). 359
2. ॲडम क्लार्क, क्रिश्चियन थियोलॉजी, एड. सेमुएल डन (न्यूयॉर्क : टी. मेनसन एण्ड जी. लेन, 1840), 183
3. रिचर्ड पी. हेटज़नरॅटर, वेस्ली एण्ड पीपुल काल्ड मॅथडिस्ट्स (नॅशविले : अबिंगडन प्रेस, 1995), 121
4. जॉन वेस्ली, "द सरकमसीज़न ऑव्ह द हार्ट, "इन वेस्लीस स्टॅनडर्ड सरमन्स, एड. एडवर्ड एच. सगडन (लन्दन : एपवर्थ प्रेस, 1921), 1 : 267).
5. द लॅटर्स ऑव्ह द रेव्ह. जॉन वेस्ली. एड. जॉन टॅलफ़ोर्ड (लन्दन : एपवर्थ प्रेस, 1931), 5 : 322.
6. जॉन वेस्ली. अ प्लेन अकाउण्ट ऑव्ह क्रिश्चियन परफॅक्शन (कॅनसस सिटि : बेकन हिल प्रेस ऑव्ह कॅनसस सिटि, 1966), 83.
7. वही सन्दर्भ, 54
8. वही सन्दर्भ, 83
9. लॅटर्स, 4 : 208
10. वेस्ली, अ प्लेन अकाउण्ट, 82.

11. वही, 82 - 83.
12. जॉन वेस्लीस सनडे सर्व्हिस ऑव्ह द मॅथोडिस्ट्स इन नॉर्थ अमेरिका (नॅशविले : द युनाइटेड मॅथोडिस्ट पब्लिशिंग हाउस एण्ड द युनाइटेड मॅथोडिस्ट बोर्ड ऑव्ह हायर एजुकेशन एण्ड मिनिस्ट्री, 1984) 125.

अध्याय 2

1. नॉर्मन एच. स्नेथ. द डिसटिंकटिव्ह आइड ऑव्ह दी ओल्ड टॅस्टामॅन्ट (लन्दन : एपवर्थ प्रेस, 1960) ; 21
2. वही सन्दर्भ; 43
3. अ॑ टर्म कॉइण्ड बाइ रूडोल्फ़ ओट्टो दी आइडिया ऑव्ह द होलि : एन इनक्वारी इन टू द नॉन - ऐशनल फॅक्टर इन दी आइडिया ऑव्ह द डिव्हाइन अ॑ण्ड इट्स रिलेशन टू द रेशन. जॉन उब्लु, हारवे, सेकण्ड एडीशन (लन्दन : ऑक्सफोर्ड यूनिव्हरसिटि प्रेस, 1950).
4. स्नेथ, डिसटिंकटिव्ह आइडिया, 30.
5. वही सन्दर्भ.
6. डोनल्ड ई. डीमेरे, एड. द डेली वेस्ली ट्रांस. पॉल गेरहार्ड्ट (एण्डरसन, इण्ड : ब्रिस्टल हाउस, 1994), 95
7. वही सन्दर्भ, 48.
8. जॉर्ज एलन टर्नर, द व्हिज़न विच ट्रॉन्स फॉमस (कॅनसस सिटि : बेकन हिल प्रेस, 1964), 17.
9. वही सन्दर्भ.
10. थियोडॉरस सी. व्हेज़न एन आउटलाईन ऑव्ह टॅस्टामॅन्ट थियोलॉजी (न्यूटन, मैस. ... चार्ल्स टी. ब्रेडफोर्ड कम्पनी. 1958).
11. जॉन डब्लु. हारवे, प्रीफेस टू ओटटो. दी आइडिया ऑव्ह द होलि, x viii

अध्याय 3

1. स्टेटमॅन्ट ऑव्ह द नेशनल कॉन्फ्रॅन्स ऑव्ह कथलिक बिषप्स 1975; साइटेड बाय वाल्टर हेरलसन एण्ड रॅनडॅल एम. फॉक, जुइश एण्ड क्रिश्चियन्स : अ ट्रबल्ड फॅमिली (नॅशव्हिले : अबिंगडन प्रेस, 1991).
2. जॉर्ज एलॅन टरनॅर, द मोर एक्सीलंट वे (विनोना लेक, इन्ड ... लाइट अ॑ण्ड लाइफ़ प्रेस, 1952), 31.

3. कॉलिन डब्लु. विलियम्स, जॉन वेस्लीस थियोलॉजी टूडे (लन्दन : एप्सवर्थ प्रेस, 1960) 179.
4. अलबर्ट आउटलर, जॉन वेस्ली (न्यू यॉर्क : ऑक्सफ़ोर्ड यूनिव्हरसिटि प्रेस, 1964), 157 - 58.
5. रिचर्ड जे. फॉस्टर, फ्रीडम ऑव्ह सिंप्लीसिटि (सॅन फ्रॅंसिसको : हार्पर ॲण्ड रो पब्लिशर्स, 1981), 36.
6. जॉन वेस्ली, "ऑन अ सिंगल आय", सरमन 118 इन द वर्क्स ऑव्ह जॉन वेस्ली, एड. थॉमस जॅक्सन, थर्ड एड. (रिप्रिन्ट, 'कॅनसस सिटि : बेकन हिल प्रेस ऑव्ह कॅनसस सिटि, 1979) 7 : 297.
7. सोरेन किरकेगार्ड, प्योरिटि ऑव्ह हार्ट इज़ टू विल वन थिंग (न्यूयॉर्क : हारपर ॲण्ड ब्रदर्स, 1956). 72
8. स्टीफ़न ग्रीन, इन बिबलिकल रिसॉर्सेस फ़ॉर होलिनॅस प्रीचिंग : फ्रॉम टॅक्स्ट टू सरमन, एड. एच. रे डनिंग ॲण्ड नील बी. वाइसमन (कॅनसस सिटि : बेकन हिल प्रेस ऑव्ह कॅनसस सिटि, 1990), 105.
9. सी लूक 1: 6; 1 कुरि. 1 : 8, इफि. 1 : 4 ; 5 :27). फिलि. 2 :15; कुलि. 1 : 22-23; 1 थिस्स. 5 : 23; 2 पीटर. 3 : 14) (के. जे. व्ह.)
10. थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑव्ह द बाइबल, एड. गेरहार्ड किटल ॲण्ड गेरहार्ड फ्रेडरिच (ग्रेण्ड रेपिड्स : विलियम बी. एर्डमान्स पब्लिशिंग कम्पनी, 1972). 8 : 73 - 77.
11. विलियम बारक्ले, द लॅटर्स टू द गेलेशियन्स ॲण्ड इफ़िशियन्स, इन द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेलफ़ियाः वेस्टमिन्सस्टर प्रेस, 1977), 78 - 79.
12. टर्नर, द विज़न विच ट्रांसफॉर्मस, 45
13. वही सन्दर्भ, 46
14. ॲट्रीब्यूटेड टू सेमुएल गोल्डविन बाय मारग्रेट माइनर ॲण्ड हग रॉवसन इन न्यू इन्टरनॅशनल डिक्शनरी ऑव्ह कोटेशंस (न्यूयॉर्क : सिगनॅट, अ डिव्हिज़न ऑव्ह पॅनग्विन बुक्स, 1994), 172.

अध्याय 4.

1. वॉलेस हॅमिल्टन, हू गोज़ देयर ? (वेस्टवुड, एन. जे. : फ्लेमिंग एच. रॅव्हॅल कम्पी, 1958), 36 - 37.

2. वेस्ली, "द स्क्रिपचर वे ऑव्ह साल्वेशन", इन वेस्लीज़ स्टॅन्डर्ड सरमन्स, 2 : 448 - 257.
3. गेरहार्ड एबॅलिंग, लूथर : एन इन्ट्रॉडक्शन टू हिज़ थॉट (फिलाडेलफिया. फोर्ट्रेस प्रेस, 1972) 110 - 11.
4. वर्कस ऑव्ह मार्टिन लूथर प्रस्तावना ओर टिप्पणियों के अनुवाद सहित (फिलाडेलफ़िया : मुहलेनबर्ग प्रेस, 1932), 6 : 451.
5. वेस्ली, "द सरकामसीज़न ऑव्ह द हार्ट, 1 : 267.
6. जॉन 'वेस्लीज़ सन डे सर्व्हिस ऑव्ह द मॅथोडिस्ट इन नॉर्थ अमेरिका, 125.
7. वेस्ली, "द वर्क ऑव्ह द किंगडम, "सरमन 7 इन वर्कस, 5 : 79.
8. वेस्ली, "अपऑन अॅवर लार्ड्स सरमन ऑन द माऊन्ट, "डिस्कॉर्स 8. सरमन 28 इन वर्कस, 5 : 376 - 77.
9. सेमुएल मॅडले, "द ग्लोरियस होप" इन वरषिप इन सॉंग (कनसस सिटि : लिलेनास पब्लिशिंग कं. 1972). नम्बर 293.

अध्याय 5

1. इरेनस, अगेनस्ट द हेरेसीज़, ट्रांस डोमिनिक जे. अंगर (न्यूयॉर्क : पॉलिस्ट प्रेस, 1992), 3 : 14.7.
2. वही सन्दर्भ.
3. गस्टाफ ऑलेन, क्रिसट्स विक्टर, ट्रांस. ए. जी. हरबर्ट (न्यूयॉर्क. मॅकमिलन कं., 1951). सी एसंपेशियली. पी. पी. 16.35 (पृष्ठ - 16 - 35).
4. सी. एच. टॉड, दी इपिसल टू द रोमन्स, इन द मॉफिट न्यू टॅस्टामन्ट कॉमनट्री (न्यूयॉर्क : हारपर अॅण्ड ब्रदर्स पब्लिशर्स 1932) 93.
5. जॉन वेस्ली, एक्सप्लेनेटरी नोट्स अपऑन द न्यू टॅस्टामन्ट (लन्दन : एपवर्थ प्रेस, 1950). 546
6. वेस्ली डी. ट्रेसी एड. द रीडीम्ड विल वॉक देयर : सरमन्स ऑन द लाइफ़ ऑव्ह होलिनस (कॅनसस सिटि : बेकन हिल प्रेस ऑव्ह कॅनसस सिटि,1983) 44.
7. इरेनॅस, अगेन्स्ट द हॅरसीज़ 2.22.4.

अध्याय 6

1. फ्रांज जे. लीन हार्डडट, द इपिसल टू द रोमन्स (क्लीवलैण्ड और न्यूयॉर्क : वर्ल्ड पब्लिशिंग कं., 1957), 103-4.

2. यहाँ रोमियों 6 अध्याय में हम ग्रीक भाषा के सामान्य भूत कालिक प्रयोग का प्रभाव देखते हैं ।
3. जे. ए. टी. ऍबिनसन, द बॉडी '(लन्दनः एस. सी. एम. प्रेस, 1952) 28.
4. विलियम ई. सँग्स्टर, द प्योर इन हार्ट (न्यूयॉर्क एण्ड नॅशविले : ऑबिंगडन प्रेस, 1964). 235 - 36. दिस इज़ द थीसिस ऑव्ह द लेट नाज़ेरीन जेनेरल सुपरिनटेंडेंट आर. टी. विलियम्स इन हिज़ बुक टॅम्पटेशन : अ नॅगलेक्टॅड थीम (कॅनसस सिटि : नाज़ेरीन पब्लिशिंग हाउस, 1920)
5. बिल ब्राइट, हाउ टू वॉक इन द स्पिरिट (सॅन बरनारडीनो, केलि. कॅमपस क्रूसेड फ़ॉर क्राइस्ट 1971). 47 - 48.
6. जेरेमी टेलर की प्रार्थना से उद्धृत बॉब ओर मायकल डब्लू बॅनसन द्वारा अवतरित, डिस्प्लिन ऑव्ह द इनर लाइफ़ (वेको, टेक्सस : वर्ड बुक्स, 1985), 22.

अध्याय 7

1. जॉन वेस्ली, ''अ प्लेन अकाउण्ट ऑव्ह क्रिश्चियन परफॅक्शन, ''इन वर्क्स. 11 : 387.
2. जे. एस. व्हेल, क्रिश्चियन डॉक्टरीन (न्यूयॉर्क : द मॅकमिलन कं., 1945), 53.
3. वेस्ली, ''ऑन वर्किंग आउट अवर ओन साल्वेशन'', सरमन 85 इन वर्क्स, 6 : 509.
4. वही सन्दर्भ.
5. वेस्ली, ''ऑन पेशॅन्स'' सरमन 83 इन वर्क्स, 6 : 488 - 89.
6. पी. एफ़. ब्रीस, ''पेन्टिकॉस्ट, ''इन सरमन फ्रॉम मॅथ्यूज गॉस्पल (कॅनसस सिटि : नॉज़ेरीन पब्लिशिंग हाउस, एन. डी.) 39.
7. वेस्ली, ''ऑन पेशंस,'' 6 : 489.
8. वही सन्दर्भ.
9. वेस्ली, ''अ प्लेन अकाउण्ट, ''11 : 402.
10. वेस्ली, ''ऑन वर्किंग आउट अवर ओन साल्वेशन'' 6 : 509.
11. कार्ल बार्थ, दी इपिसल टू द रोमन्स (लन्दन : ऑक्सफोर्ड यूनिव्हरसिटि प्रेस, 1933), 314.

5. लियॉन्स मॉडलिंग द होलिनस इथास, 191 - 92.
6. द अंड वर्थ ट्रांसलेटेड "वर्दी" डज नॉट इम्प्लाय लिव्हिंग इज़ अ मीन्स ऑव्ह अरनिंग गॉड्स कॉल टू ग्लोरी । रादर इट इज़ ए मीन्स ऑव्ह अरनिंग गॉड्स कॉल टू ग्लोरी । रादर, इट इज़ "ए रिकगनीशन दैट गॉड्स कॉल टू फ्यूचर साल्वेशन मेक्स सरटन बिहेवियर्स 'अप्रॉप्रियेट' इन द प्रेजंन्ट । अ होलि गॉड डिमाण्ड्स अ होलि पीपल (सी एफ. 1 पीटर 1 : 13 - 16)" लियॉन्स, "मॉडलिंग द होलिनस इथॉस", 203).
7. स्त्रॉस, "सँक्टीफिकेशन इन द थिस्सलोनियन इपिसलस," 34.
8. वही सन्दर्भ, 41 - 42.
9. वही सन्दर्भ, 43.
10. लियॉन्स, "मॉडलिंग द होलिर्नेस इथॉस," 192. द क्लियरॅस्ट इलसट्रेशन ऑव्ह दिस नॅससॅरी ह्युमन कोऑपरेशन इन ऑडर्र टू इफॅक्ट सँक्टरीफिकेशन इज़ पॉल्स इनजंकशन इन रोमन्स 6 :12 - 19.
11. स्त्रॉस, "सँक्टिफिकेशन इन द थिस्सलोनिय इपिसलस् 44. अरनॅस्ट बेस्ट ने उदधृत किया है । अ कार्मेन्ट्री ऑन द फ़स्ट अण्ड सेकण्ड इपिसल्स टू द थिस्सलोनियन्स (न्यूयॉर्क : हारपर और रो, 1972), 242.
12. स्त्रॉस, "सँक्टिफिकेशन", 46 डी. इ. एच. व्हिटेले द्वारा उद्धृत, द थियोलॉजी ऑव्ह सेन्ट पॉल (लन्दन : ऑक्सफोर्ड यूनिव्हरसिटि प्रेस, 1964), 85.

अध्याय 8.

1. जॉर्ज लियॉन्स, "मॉडलिंग द होलिर्नेस इथॉस : प्रथम थिस्सलूनीकियों के अध्ययन पर आधारित, "वेस्लीयन थियोलॉजिकल जनरल 30, क्रमांक 1 (स्प्रिंग 1995) : 188 - 89.
2. वही सन्दर्भ, 194.
3. डेनियल ब्रेट् स्त्रॉस्, "सेंक्टीफिकेशन इन द थिस्सलोनियन इपिसल्स इन अ कॅनोजीकल कॉन्टॅक्सट" (शोध ग्रंथ व्याख्या, संदर्भ बॅपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी, 1987), 21 (सायटिंग जे. बी. लाइट फुट). ग्रीक क्रियापद कतारसाई और इसके व्युत्पन्न शब्द रूप नये नियम में आए हैं, परन्तु विभिन्न अर्थों में । शिष्य अपने मछली के जालों की मरम्मत कर रहे थे (मत्ती 4 : 21; मरकुस 1 : 19 : अधिक प्रभाव के लिए प्रयुक्त) । क्रुद्ध कुरन्थी

लोगों को आदेश दिया गया था कि वे "सिद्ध बने" (दूसरा कुरीन्थियों 13 : 9, प्रभाव उत्पन्न के लिए प्रयुक्त) एन. आर. एस. संस्करण कतारतीसाय के निरुपण के सन्दर्भ में पुनःस्थापित (प्रभाव प्रस्तुत), जिसके फलस्वरूप सन्दर्भ का उल्लंघन होता है; इस पत्री में उसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि थिस्सलुनिकियों में किसी भी परिमाण में विश्वास का अभाव पाया गया।

4. एलेक्स आर. जी. डीएस्ले के द्वारा व्यक्तिगत वार्तालाप के लिए परामर्श।
5. लियॉन्स, "मॉडलिंग द होलिनस इथॉस," 191 - 92.
6. क्रियाविशेषण जिसका अनुवाद "सदाचार" शब्द से किया गया है, इसका यह अर्थ नहीं कि यह परमेश्वर के महिमामय राज्य को प्राप्त करने का आह्वान है। इसके विपरीत, यह एक मान्यता है कि परमेश्वर का आह्वान भविष्य के उद्धार को सुनिश्चित करता है, कि वर्तमान आचरण भविष्य के उद्धार के लिए कितना आवश्यक है। पवित्र परमेश्वर पवित्र लोगों की मांग करता है (1 पतरस 1 : 13 - 16)" (लियांस, "मॉडलिंग द होलिनस इथॉस," 203)।
7. स्रॉस, सैंक्टिफिकेशन इन द थिस्सलोनियन इपिसल्स,", 34.
8. वही सन्दर्भ, 41 - 42.
9. वही सन्दर्भ, 43.
10. लियॉन्स, "मॉडलिंग द होलिनस इथॉस," 192. इस सन्दर्भ में स्पष्ट उदाहरण मानवीय सहयोग का होना अनिवार्य है ताकि पवित्रीकरण कार्यान्वित हो सके जिसका पौलुस ने शास्त्रसम्मत उल्लेख रोमियों 6 : 12 - 19 में किया है।
11. स्रॉस, "सैंक्टिफिकेशन इन द थिस्सलोनियन इपिसल्स," 44, अर्नेस्ट बेस्ट ने उद्धृत किया है, अ कामेन्ट्री ऑन द फ़स्ट अण्ड सेकण्ड इपिसल्स टू द थिस्सलोनियन्स (न्यूयॉर्क : हारपर और रो, 1972), 242.
12. स्रॉस, "सैंक्टिफिकेशन", 46, डी. ई. एच व्हिटेले द्वारा उद्धृत द थियोलॉजी ऑव्ह सेन्ट पॉल (लन्दन : ऑक्सफोर्ड यूनिव्हरसिटि प्रेस, 1964), 85.
13. लियॉन मॉरिस, "द फ़स्ट अण्ड सेकण्ड इपिसल्स टू द थिस्सलोनियन्स, इन द न्यू इन्टरनेशनल कॉमेन्ट्री ऑन द न्यू टॅस्टामेन्ट (ग्रेण्ड रेपिड्स : विलियम बी. अर्डयन्स पब्लिशिंग कं. 1959), 180.
14. स्रॉस, "सैंक्टिफिकेशन इन द थिस्सलोनिय इपिसल्स", 46.

15. मॉरिस, ''थिस्सलोनियन्स'', 80 'टेलिइस' क्रियाविशेषण का दूसरा भाग टॅलोस मूल से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है ''समाप्ति,'' ''गंतव्य'', ''उद्देश्य'' । डी. एडमण्ड हेबर्ट होलोटेलिइस को इस प्रकार स्पष्ट करते हैं : ''समाप्ति को सम्पूर्ण रूप से प्रभावित करना, इच्छित गंतव्य पर पहुँचना, अतः यहाँ उस शक्ति से आशय है, जिसका प्रभाव सम्पूर्ण रूप से आच्छादित है ।'' (अ कॉल टू रेडिनॅस : द थिस्सलोनियमन इपिसल्स (शिकागो : मूडी प्रेस, 1971, 251) ।
16. क्लार्क, क्रिश्चियन थियोलॉजी, 183.
17. इस प्रकार जॉन वेस्ली ''इन्टायर सँक्टिफिकेशन'' और क्रिश्चियन परफॅक्शन दोनों को पारस्परिक रूप से प्रयुक्त करते हैं ।
18. स्रॉस, ''सँक्टिफिकेशन इन द थिस्सलोज़ियन इपिसल्स'', 50 गॉर्डन पिट्स वाइल्स का उदाहरण, ''द फंक्शन ऑव्ह इन्टरसेसारी प्रेयर इन पॉल्स अपॉस्टॉलिक मिनिस्ट्री विथ स्पेशल रेफरंस टू द फर्स्ट इपिसल टू द थिस्सलोनियन्स'' (पी. एच. डी. शोध व्याख्या, येल युनिव्हरसिटि, 1965),132.
19. स्रॉस, ''सँक्टिफिकेशन'' 51, बेस्ट का उद्धहरण, थिस्सलोनियन्स, 182.
20. वेस्ली, ''द स्क्रिपचर वे ऑव्ह साल्वेशन'', 2 : 457 - 59.
21. वेस्ली, अ प्लेन अकाउण्ट, 86.

अध्याय 9.

1. फिलिया (मित्रता का स्नेह), स्टॉरगे (सहज स्नेह), इरॉस (कामना - स्नेह, स्व केन्द्रित प्रेम) ओर अगापे (पूर्वबाइबल रचित ग्रीक में, वह स्नेह जो ''प्राथमिकता'' अथवा किसी व्यक्ति के प्रति सम्मान - श्रद्धा और भक्तिपूर्ण भावना रखना, अर्थात् ऐसी भावना किसी अन्य की अपेक्षा अतिशय होना; नये नियम के अन्तर्गत्, स्वबलिदान, अथवा उद्धारक प्रेम) ।
2. इन दो आधारभूत तत्वों के प्रति शास्त्रीय प्रयोग ॲन्डरेस नाइग्रेन का अगापे और इरोस है । (फिलाडेलफ़िया : महलेनबर्ग प्रेस, 1953).
3. यूनानी पौराणिक कथा सत्य की अभिव्यक्ति के लिए काव्यात्मक पद्धति का प्रयोग करती है जो कि तर्कपूर्ण अथवा वैज्ञानिक व्याख्या का विरोध है ।
4. नये नियम के अन्तर्गत इरोज़ का प्रयोग नहीं मिलता, कदाचित् इसके बहुल प्रयोग - संबंधों के कारण ।

5. उत्पत्ति की पुस्तक उल्लेख करती है कि परमेश्वर ने हव्वा की सृष्टि आदम की एक पसली से की । परमेश्वर ने उसकी सृष्टि आदम के पैर की किसी अस्थि से नहीं की, रब्बियों ने कहा - आदम को हव्वा को पद दलित नहीं करना था । और न ही परमेश्वर ने हव्वा की सृष्टि आदम के सिर की किसी हड्डी से की - ताकि हव्वा पुरुष पर शासन न करे । परन्तु परमेश्वर ने हव्वा की सृष्टि की आदम की पसली से की - ताकि आदम उसे अपनी भाँति प्रेम करे, उसकी रक्षा और बचाव करे ।
6. उत्पत्ति की पुस्तक के अनुसार विवाह के दो उद्देश्य हैं : वंश को आगे बढ़ाने के लिए (1 : 27 - 28), परन्तु व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी (2 : 18 - 24)
7. ''कन्फेशन्स ऑव्ह सेन्ट ऑग्स्टीन'', अनुवादक, एडवर्ड बी. पूसे (न्यूयॉर्क : रॅनडम हाउस, 1949), 3 पास्कल ने यह अवलोकन किया कि प्रत्येक मानवी आत्मा ''में एक परमेश्वर तुल्य शून्यता'' है ।
8. ख्रिस्त के समय की ग्रीक भाषा में, अगापे एक रंग विहीन और वस्तुतः एक असामान्य शब्दावलि थी जिसे कलीसिया ने सुसमाचार के अन्तर्गत प्रयोग के लिए प्रचुरता से प्रयुक्त किया विलियम एम. ग्रेट हाऊस, ''अगापे'', बेकन डिक्शनरी ऑव्ह थियोलाजी मे देखिए । रिचर्ड एस. टेलर (कॅंससस सिटि : बेकन हिल प्रेस, कॅनसस सिटि, 1983), 31 - 32).
9. विलियम बारक्ले, द लैटर्स ऑव्ह जॉन और जूड, संशोधित संस्करण एड. डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ में (फिलाडेलफ़िया : वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1976), 98.
10. वेस्ली, एक्सप्लेनेटरी जोट्स अपऑन द न्यू टेस्टामंट, 915, वेस्ली के ''बेब्बस'' और ''फ़ादर्स'' के वर्गीकरण के लिए देखिए । यूहन्ना 2 :12-18 (नोटस, 906 - 8) ।
11. हॅट्जेनरेटर, वेस्ली और मॅथोडिस्ट्स, 308.
12. बारक्ले, द लैटर्स ऑव्ह जॉन एण्ड जूड, 98.
13. रॉबर्ट टी. यंग, अ स्प्रिंग ऑव्ह होप (नॅशविले : अबिंगडन प्रेस, 1980, 79.

अध्याय 10.

1. ई. स्टेनली जोन्स, अबंडन्ट लिव्हिंग (न्यूयॉर्क : अबिंगडन प्रेस, 1941). 157.

2. फ्रैंकाइस फॅने लॉन, क्रिश्चियन परफॅक्शन, एड. चार्ल्स एफ़. व्हिस्टन, अनुवाद, मिलड्रॅड व्हिटने स्टिलमॅन (न्यूयॉर्क : हारपर एण्ड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1947), 36.

3. जॉन वेस्ली प्रश्न करते हैं : क्या यह मृत्यु पापमय है, और प्रेम में नवीनीकरण है, क्या क्रमशः है अथवा तात्कालिक है ? **उत्तर** : एक व्यक्ति कुछ समय के लिए मर रहा हो; परन्तु वह नहीं मरता, उचित कहा जाए, उस समय जबकि उसकी आत्मा शरीर से विलग हो जाती है, वह मर जाता है; और उस क्षण वह अनन्तकालिक जीवन जीता है । उसी भाँति, वह कुछ समय के लिए पाप में मरता हो; फिर भी वह पाप में नहीं मरता, जब तक कि पाप उस की आत्मा से अलग नहीं होता; और उस क्षण, वह पूर्ण प्रेम का जीवन जीता है । यह जानना बहुधा कठिन होता है कि वह किस क्षण मरता है; फिर भी एक क्षण तो अवश्य आता है जिस में जीवन समाप्त हो जाता है ।" (अ प्लेन अकाउन्ट, 62, 115) ।

4. ओसवॉल्ड चॅम्बर्स, भाई अटमोस्ट फ़ॉर हिज़ हायेस्ट, एड. जेम्स रॅमन (ग्रेण्ड रॅपिडस : डिस्कव्हरी हाउस, 1992), दिसंबर 3.

5. एडम क्लार्क, द न्यू टॅस्टामॅन्ट ऑव्ह अवर लॉर्ड एण्ड सेव्हियर जीसस क्राइस्ट (न्यू यॉर्क : मॅथडिस्ट बुक कन्सर्न एन. डी.) 1 : 639.

6. जॉर्ज ए. ब्युट्रिक, दी इन्टरप्रेटर्स बाइबल न्यूयॉर्क और नॅशव्हिले : अबिंगडन कॉक्सबरी प्रेस, 1951). 7 : 266.

7. विलियम एम. ग्रेट हाउस, द फुलनॅस ऑव्ह द स्पिरिट (कॅनसस सिटि : नाजेरिन पब्लिशिंग हाउस, 1958), 89.

8. स्टिफन जे. हारपर, "द डिव्होशनल लाइफ़ ऑव्ह जॉन वेस्ली, 1703 - 1738" (पी. एच. डी. शोध निबंध, ड्यूक युनिव्हरसिटि, 1981), 2 : 538.

9. यह सम्पूर्ण खण्ड, "हाउ टू रिसीव्ह सॅंक्टीफाईंग ग्रेस." वेस्ली डी. ट्रेसी से लिया गया है । द अपवर्ड कॉल : स्पिरिचुअल फॉरमेशन अण्ड द होलि लाइफ (कॅनसस सिटि : बेकनहिल प्रेस - कॅनसस सिटि, 1994). 45 - 47.

अध्याय 11.

1. वेस्ली, "द स्क्रिपचर वे ऑव्ह सालवेशन," 2 : 457 - 59.
2. जॉर्ज ए. माथर और लैरी ए. निकलस, "डिक्शनरी ऑव्ह कल्टस, सॅक्टस, रिलीज़न, एण्ड द ऑकल्ट (ग्रेण्ड रॅपिड्स : जॉण्डरव्हॅन पब्लिशिंग हाउस. 1993). 120.
3. स्टीफ़न एम. मिलर, एड. मिसगाईडिंग लाइट्स ? (कॅनसस सिटि : बेकन हिल प्रेस कॅनसस सिटि, 1991), 61.

अध्याय 12.

1. जॉन लेनॅन बेबर, लव्ह वन अनॉदर, माई फ्रॅण्ड्स : सेन्ट ऑगस्टीन्स होमिलीज़ ऑन द फ़र्स्ट लॅटर ऑव्ह जॉन, एन अब्रिज्ड इंग्लिश वरज़न (सॅन फ्रांसिसको : हारपर और रो, 1989), 83.
2. बोनी, बाऊमन थर्सटन, "मॅथ्यू 5 : 43 - 48." इन्टरप्रॅटेशन 41 (अप्रैल 1987) : 73.
3. वेस्ली, अ प्लेन अकाउण्ट, 99.
4. जॉन वेस्ली, "द वे ऑव्ह द किंगडम" इन जॉन वेस्लीस सरमन्स : एन एन्थोलॉजी; एड. अलबर्ट सी. ऑउटलर और रिचर्ड पी. हॅटज़ॅनरेटर (नॅशविले : अबिंगडन प्रेस, 1991). 127.

पवित्रता का सन्देश

मेरे लिए हमेशा सुसमाचार का सार-तत्त्व बना रहेगा - परमेश्वर का शुद्ध प्रेम हृदय पर प्रभुता करता रहेगा। यह अनुभव व्यवस्था का आदेश और सुसमाचार की प्रतिज्ञा, दोनों ही है। मैंने अपना जीवन इसकी घोषणा एवं इस सिद्धान्त के प्रतिपादन के लिए, अर्पित किया है ताकि यह सन्देश लोगों के हृदयों तक पहुँचे।

डॉ. विलियम ग्रेटहाउस
जनरल सुपरिनटेंडेंट एमिरेटस, नाज़ेरिन कलीसिया.

प्रेम ने सिद्ध बनाया। क्या स्वर्ग प्राप्ति संभव है? क्या यह केवल कुछ ही चुने हुओं के लिए है? डॉ. विलियम ग्रेटहाउस यह विश्वास करते हैं कि सम्पूर्ण पवित्रीकरण प्रत्येक विश्वासी के आत्मिक विकास और विजय के लिए एक अत्यन्त आवश्यक अनुभव है। वह अपनी आशा को वचन के आधार पर स्थापित करता है, तथा इस दिशा में वह पूरे उत्साह और रुचि से वचन के अन्तर्गत दिए गए दृष्टान्तों को सुगम बनाता है।

"हेरल्ड ऑव्ह होलिनेंस" के सम्पादक वेस्ली डी. ट्रेसी का मत है कि "किसी भी शिक्षक अथवा प्रचारक ने सम्पूर्ण पवित्रीकरण के सिद्धान्त को इतना सुगम और स्पष्ट रूप से आजतक प्रस्तुत नहीं कर सका है जितना कि स्वयं डॉ. विलियम ग्रेट हाऊस कर सके हैं।" ट्रेसी ने प्रत्येक अध्याय के अन्त में आत्मिक निर्माण हेतु अभ्यास - पाठ तैयार किए हैं।

"प्रेम ने सिद्ध बनाया" उन विश्वासियों के लिए ही नहीं लिखा गया है जो परमेश्वर के साथ - साथ मिलकर चलने की खोज कर रहे हैं, परन्तु उन विश्वासियों के लिए भी जिन्हें पहले ही से ख्रिस्त की सम्पूर्ण पवित्रीकरण प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त हो चुका है। यह पुस्तक आप की सम्पूर्ण जीवन-यात्रा और इस से परे, इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर तैयार की गई है।

डॉ. विलियम ग्रेट हाउस ने जनरल सुपरिनटेंडेंट की हैसियत से नाज़ेरियन कलीसिया की 1976 से 1989 तक सेवा की। आप नाज़ेरियन थियोलॉजिकल सॅमनरी में एक अस्थायी प्राचार्य हैं और ट्रेवॅक्का नाजेरियन विश्वविद्यालय में आध्यात्म के मान्यवर प्राचार्य हैं। आप ने धर्म-ज्ञान-क्षेत्र में अनेक पुस्तकें लिखी हैं, आप अपनी पत्नी रुथ के साथ माउण्ट जूलियट, टेनेंसी में निवास करते हैं।

पवित्रता / पवित्रीकरण